मतबअ दुरख्शानी मैं बइहतमाम मुन्शी

विनय पत्रिका



छोटेलाल के बइहतमाम से छपा

श्रीगणेशायनमः ॥ अथ विनयपत्रि[illegible] ॥ गाइयेगणपति
॥ [illegible]दन शंकर सुअन भवानी सिद्धि सदन गजवदन बिनायक कृपा सि
न्धु सुंदर सब लायक मोदक प्रिय मुद मंगल दाता विद्या ॥ वारि बुद्धि
विधाता मांगत तुलसीदास कर जोरे बसहिं राम सिय मानस मोरे ॥ १ ॥ दी
नदयाल कृपाकर देवा कर मुनि मनुज सुरासुर सेवा हिमतम करि केहरि
करि माली दहन दोष दुख दुरित रुजाली कोक कोकनद लोक प्रकाशी
तेज प्रताप रूप रस राशी सारथि पंगु दिव्य रथ गामी हरि शंकर विधि मू
रति स्वामी वेद पुराण प्रगट यश जागे तुलसी राम भक्ति वर मांगे ॥ को याचि
ये शंभु तजि आन दीन दयाल भक्त आरत हर सब प्रकार समरथ भगवा
न कालकूट ज्वर जरत सुरासुर निज पन लागि कियो विषपान दारुण दनु
ज जगत दुखदायक मारेयो त्रिपुर एक ही बान जो गति अगम महामुनि दु
र्लभ कहत संत श्रुति सकल पुरान सो गति मरण काल अपने पुर देत सदा
शिव सबहि समान सेवत सुलभ उदार कल्पतरु पारवतीपति परम सुजा
न देहु काम रिपु राम चरण रति तुलसीदास कहं कृपानिधान ॥ ३ ॥ सगर्व भी
दानि कहूं कश्यप रसेना हो दीन दयाल दीबोई भावै याचक सदा सुहाहै
मारि के मार थप्यो जग में जाकी प्रथम रेख भट माहीं ता ठाकुर को रीझि नि
वाजिबो कह्यो क्यों परत मोपाहीं योग कोटि करि जो गति हरि सों मुनि मां
गत सकुचाहीं वेद विदित तेहि गति पुरारि पुर कीट पतंग समाहीं ईश उदार उमा
पति परिहरि अनत जिया चन जाहीं तुलसीदास ते मूढ मागने कबहुं न पेट
भराहीं ॥ ४ ॥ बावरो रावरो नाह भवानी दानि बडो दिन देत दिये बिन वेद
[illegible]निज घर को [illegible]बान विलोकहु हो तुम परम सियानी शिव की
[illegible]शारद मिटानी जिनके भाल लिखी लिपि मेरी सु
[illegible]सानी ति न कंक[illegible]को नाक सवारत हूं आयो नकवानी दिर
हीनता दु[illegible]यन के दुख याचकता अकुलानी [illegible] अधिकार सौंपि
ये आरति भीर खमली मन जानी प्रेम प्रसंशा विनय व्यंग युत सुनि विधि की

बखानो तुलसी मुदित महेश मनहि मन जगत मातु मुसिकानी ॥५॥
जाचिये गिरिजा पति काशी जासु भवन अणिमादिक दासी औघर
दानि द्रवत पुनि थोरे शकत न देखि दीन करजोरे सुख संपति मति सुगति
सुहाई सकल सुभग शंकर सेवकाई गये शरण आरति कै लीन्हे निरखि
निहाल निमिष महँ कीन्हे तुलसीदास जाचक यश गावै बिमल भक्ति र
घुपति की पावै ॥ ६ ॥ कस न दीन पर द्रवहु उमावर दारुण विपति हरहु करु
णाकर बेद पुराण कहत उदार हर हमरी बेर कस भयेउ कृपण तर ॥ कौन
भक्ति कीन्हि गुणनिधि द्विज हुइ प्रसन्न दीन्हेहु शिवपद निज जो गति अ
गम महामुनि गावहिं तव पुर कीट पतंगहु पावहिं देहु कामरिपु राम
चरण रति तुलसीदास प्रभु हरहु भेद मति ॥७॥ देव बड़े दाता बड़े शं
कर बड़े भोरे किये दूर दुख सबन के जेहि जेहि कर जोरे सेवा सुमिरण
पूजिबो पाताक्षत थोरे दीबो जग जहँ लगि सबै सुख गज रथ घोरे गाँउ
बसत बामदेव मैं कबहुँ न निहोरे अधिभौतिक बाधा भई तेहि किंक
र तोरे बेगि बोलि बलि बरजिये करतूति कठोरे तुलसी दलि रूँध्यो चहै श
ठ शाख सिहोरे ॥ ८ ॥ शिव शिव है प्रसन्न करु दाया करुणामय उदार
कीरति बलि जाउँ हरहु निज माया जलज नयन गुण अयन मयन रि
पु महिमा जान न कोई बिनु तव कृपा राम पद पंकज सपनेहुँ भक्ति न हो
ई ऋषी सिद्ध मुनि मनुज दनुज सुर अपर जीव जग माहीं तव पद बि
मुख न पार न पावत कल्प कोटि चलि जाहीं अहिभूषण दूषण रिपु सेवक
देव देव त्रिपुरारी मोह निहार दिवाकर शंकर शरण शोक भयहारी गि
रिजा मन मानस मराल काशीश मशान निवासी तुलसीदास हरि चरण
कमल वर देहु भक्ति अविनाशी ॥ ९ ॥ राग धनाश्री ॥ देव मोह तम तर
णि हर रुद्र शंकर शरण हरण मम शोक लोकाभिरामं बाल शशि
भाल सुविशाल लोचन कमल काम शत कोटि लावन्य धामं कंबु कुंदेंदु
कर्पूर विग्रह रुचिर तरुण रवि कोटि तन तेज भ्राजै भस्म सर्वांग अर्द्धां

राशिलाम्रजायालनृकपालमालाविराजै मौलसंकुलजयसुकटरवि
सुतरूयात ट्रिक्वारिहरचरणपूतं श्रवणकुंडलगरलकंटकारु
णाकंदसच्चिदानंदवंदेवधूतंशूलशायकपिनाकासिकरशत्रुवनद
हनइवधूमध्वजवृषभयानंव्याघ्रचर्मपरिधानविज्ञानघनसिद्धि
सुरमुनिमनुजसेव्यमानंतांडनविनिनृत्यपरडमरूडिंडिमप्रवरअशुभ
हनभक्तिकल्याणराशीमहाकल्यांतब्रह्मांडमंडलदवनभवनकैला
सआसीनकाशीनिवासर्वज्ञयज्ञेशअच्युतविभोविश्वभवदंशसंभव
पुरारीब्रह्मेंद्रचंद्रार्कवरुणाग्निवसुमरुतयमअर्थिभवदंघ्रिसर्वाधि
कारीअकौनिरुपाधिनिर्गुणनिरंजनब्रह्मकर्मपथमेकमजनिर्विका
रंअखिलविग्रहउग्ररूपशिवभूपसुरसर्वगतसर्वसर्वोपकारं॥ज्ञा
नवैराग्यधनधर्मकैवल्यसुखसुभगसौभाग्यशिवसानुकूलेनदपिन
रमूढआरूढसंसारपथभ्रमतभविविमुखितवपादमूलेनष्टमति
दुष्टअतिकष्टरतिखेदगतदासतुलसीशंभुशरणआयादेहिकामारि
श्रीरामपदपंकजेभक्तिभयहरणगतभेदमाया॥१०॥देव॥भीषमका
कालभैरवंभयंकरभूतप्रेतप्रमथादिपतिविपतिहर्त्तामोहमूषकमा
मार्जारसंसारभयहरणतारणतरणअभयकर्त्ताअतुलवलविपुल
विस्तारविग्रहगौरअमलअतिधवलधरणीधराभंशिरसिसंकुलि
तकलकूटपिंगलजटापटलसशतकोटिविद्युच्छटाभंभाजविबुधाप
गाआपपावनपरममौलिमालिवशोभाविचित्रंललितलल्लाटपरप
रेतमयनत्रानगुणअयनविज्ञानरूपंरवणगिरिजाभवनभूधराधि
पसराश्रवणकुंडलवदनछविअनूपंचर्मअसिशूलधरडमरूशार
चापकरजानवृषभेषकरुणानिधानंजगतसुरअसुरनरलोकशोका
र्मोकरंउरणनरमौलिउरमालधारीडाकिनीशाकिनीखेचरंभू

भूषणं मंत्र भंजन प्रबल कल्मषारी काल अग्नि काल कालि काल व्या
लादि खगारि त्रिपुर मर्दन भीम कर्म भारी सकल लोकांतु कल्यांत भूलै
थकृत दिग्गजा व्यक्त गुण भृत्य कारी पाप संताप घन घोर संसृति दी
न भ्रमत जग योनि नहिं को पि त्राता पाहि भैरव रूप राम रूपी रुद्र बंधु
गुरु जनक जननी विधाता यस्य गुण गण गाति विमल मति शारदा नि
गम नारद प्रमुख ब्रह्मचारी शेष सर्वेश आसीन आनंद वन वन रागुल
सी प्रणत त्रासहारी ॥ ११ ॥ राग सारंग देव सदाशं करं संप्रदं सज्जनानंददं शै
ल कन्या वरं परम रम्यं काम मद मोचनं तामरस लोचनं वाम देवं भजे भा
व भाग्यं कंबु कुंदेंदु कर्पूर गौरं शिवं सुंदरं सच्चिदानंद कंदं सुसिद्ध सनका
दि योगींद्र वृंदार का विल घाधिव यच रणारविंद ब्रह्म कुल वल्लभं सुल
भ मति दुर्ल्लभं विकट वेषं विभुं वेद पारं नौमि करुणाकरं गरल गंगा
धरं निर्मलं निर्गुणं निर्विकारं लोक नाथं शोक शूल निर्मूलिनं शूलि
नं मोह तम भूरि भानुं काल कालं कलातीत मजरं हरं कठिन कलि काल
कानन कृशानुं तज्ज्ञ मज्ञान पाथोधि घट संभवं सर्वगं सर्व सौभाग्य मूलं प्र
चुर भव भंजनं प्रणत मनुरंजनं दास तुलसी शरण सानुकूलं ॥ १२ ॥ राग
वसंत सेवहु शिव चरण शरोज रेनु कल्याण अखिल प्रद कामधेनु
कर्पूर गौर करुणा उदार संसार सार भुजगेंद्र हार सुरव जन्म भूमि महिमा अ
पार निर्गुण गुण नायक निराकार त्रैनयन मयन मर्दन महेश अहंकार
निहार उदित दिनेश वरवाल निशाकर मौलि भ्राज त्रैलोक शोक हर
प्रथम राज जिन्ह काहि विधि सुगति न लिखी भाल तिन की गति का
शीपति दृ पाल उपकारी कोपर हर समान सुर असुर जरत कृत गरल
पान वहु कल्प उपाय करि ये अनेक विनु शंभु कृपा नहिं भव विवेक वि
ज्ञान भवन गिरि सुतार मन कहु तुलसी दास मम त्रास शमन ॥ १३ ॥ दे
खो दे खो बन वन्यो अजु उमाकंत मनु देखत तुम्हें आई ऋतु वसंत ॥ म
नतन ज्योति चंपक कुसुम माल वरवसन नील नूतन नलिन शाल काल

कदलिजंघपदकमललालसूचीनकोटिकेहरिगतिमरालभूषणप्र
सूनवहुविधिरंगनूपुरकिंकिणीकलरवविहंगकरनवलकुंडलप
ल्लवरसालश्रीफलउरुवकंचुकिलताजालआननसरोजकचमधु
पपुंजलोचनविशालनवनीलकंजपिकवचनचरितवरवर्हिकीरसि
तसुमनहासलीलासमीरकहतुलसिदाससुनिशिवसुजानउरवसिप्रपं
चरचेपंचवानकरिकृपाहरियभ्रमफंदकामजाहिंहृदयवसहिंसुख
दशिराम॥२४॥रागमारू॥दुसहदोषदुखदलनिदेवकरुदाया विश्वमू
लासिजनसानुकूलासिकरशूलधारिणीमहामूलमायानडिंतगर्भो
गसर्वांगसुंदरलसतदिव्यपटभव्यभूषणविराजैबालमृगमंजुखंजन
विलोचनिचंद्रवदननलखिकोटिरतिमारलाजेरूपसुखशीलसीमा
सिभीमासिरामासिवामासिवरबुद्धिवानीछमुखहेरवअम्बासिजगदंबि
केशंभुजायासिजैजेभवानीचंडभुजदंडखंडनविहंडनमुंडमहिषमदभं
गकरिअंगतोरेशुंभनाशुंभकुंभीशरणकेशरिनिक्रोधवारिधिवैरिवं
दवोरेनिगमआगमअगमगुर्वितवगुणकथनउर्विधरकहतजेहिसह
सजीहादेहुमामोहिंप्रणप्रेमयहनेमनिजरामघनश्यामतुलसीपपीहा
२५॥रागसारंगजयजयजगजननिदेविसुरनरमुनिअसुरसेविभुक्तिमु
क्तिदायकनिभयहरणिकालिकामंगलमुदसिद्धिसदनिपर्वशर्वरीश
वदनिताप तिमिरतरुणतरणिकिरणमालिकावर्मचर्मकरकृपाण
शूलशेलधनुषबाणधरणिदलनिदानवदलरणकरालिकापूतनापि
शाचप्रेतडाकिनीशाकिनीसमेतभूतग्रहवेतालखलमृगालिजालिका
जयमहेशभामिनीअनेकरूपनामिनीसमस्तलोकस्वामिनीहिमशै
लबालिकारघुपतिपदपरमप्रेमतुलसीचहैअचलनेमदेहुहैप्रसन्नपा
हिप्रणतपालिका॥२६॥जयभागीरथनंदिनिमुनिजनकोरचंदिनिनर
नागविबुधबंदिनिजयजन्हुबालिकाविष्णुपदसरोजजासिईशशीशप
रविभासित्रिपथगासिपुण्यराशिपापछालिकाविमलविपुलवहसि

वारिशीतलत्रयतापहारीभवंवरविभंगात तरंगमालिकापुञ्जन
पूंजोयहार शोभितशशिधवलधारभंजनभवभारभक्तिकल्पथालि
कानिजतरवासीविहंगजलथलचरपसु पतंगकीटजटिलतापरसव
शासरिसपालिका॥१७॥रागरामकली॥ जयतिजयसुरसरिजगद
खिलपावनीविष्णुपदकंजमकरंदइवअंबुवरवहसिअघवृंदकालिंद
द्रावअवनीमिलितजलपानअजयुक्तहरिचरणरजवरवारित्रिपुरारिशिर
धामिनीजन्हुकन्याधन्यपुण्यकृतसगरसुतभूधारणद्रविणीअघदरणिबहुना
मिनी पतगंधर्वमुनिकिन्नरोरगदनुजमनुजमज्जहिंसुकृतपुंजयुतकामिनीस्वर्ग
सोपानविज्ञानप्रदमोहमदक्रोधमत्सरमदनपाथोजवनजामिनीदरित
गंभीरवानीरदहुंतीरवरमध्यधाराविशदविश्वअभिरामनन्दनालपर्यं
काकृतनर्थनसर्थेशजनुसहसशीशावलीस्रोतसुरस्वामिनी अभिम
महिमाअमितअमितरूपभूपावलीमुकटमणिवंदित्रैलोकपथगामि
नीरहिरघुवीरपदप्रीतिनिर्भरमातुदासतुलसीत्रासहरहरणभवमानि
नी॥१८॥ हरनिसकलपापत्रिविधितापसुमिरतसुरसरितविलसतमहि
कल्पवेलिसुरम्मनोरथफिरतशोहतशशिधवलधारसुधासलिलभरत
विमलतरतंरगलसतरघुवरकेरोचरिततोविनुजगदंवगंगकलियुगका
कारनघोरभवअपारसिंधुतुलसीकिमतरित॥१९॥ईशसीशवससित्रिप
थलससिनभपातालधरनिमुनिसुरनरनागसिद्धसुजनमंगलकरनिर
खतदुखदोषदुरितदारुरासिदहनिस्मरसुअनसातातिशमानिजलनिध
जलमरणि महिमाकीअवधिकरीबहुविधिहरिहरनितुलसिवानीकरु
विमलावमलवारिबरनि॥२०॥रागबिलावल यमुनाज्योंज्योंलागीवाढन
त्योंत्योंसुकृतसुभटकलभूपहिनिदरलगेवहुकाढनज्योंज्योंजललगली
नत्योंत्योंयमगणमुखमलीनलहेआढनतुलसीदासजगदघजवासज्यों
अनधअगिलेगढ़ाढन॥२१॥रागभैरव सईसरिहितसंनेहदेहभरिकामधे
नुकलकाशीशमनशोकसंतापपापरुजसकलसुमंगलराशीमरयादा

चहुं ओर चरण वर सेवत सुरपुरवासी तीरथ सब सुभ अंग रोम शिवलिंग
अमित अविनासी अंतर अयन अयन भल थन फल बच्छ वेद वि
स्वासी गलकंवल वरुणा विभाति जनु लूम लसति सरितासी दंडपानि
भैरव विषाण मलरुचि खलगण भयदासी लोलदिनेश त्रिलोचन करण
घंट घंटासी मणिकर्णिका वदन शशि सुंदर सुरसरि सुख सुखमासी
स्वारथ परमारथ परिपूर्ण पंचकोश महिमासी विश्वनाथ पालक कृ
पाल चित लालति नित गिरिजासी सिद्धि शची सारद पूजहिं मनु जुगवत र
हति रमासी पंचाक्षरी प्राण मुद माधव गव्य सुपंचनदासी ब्रह्मजीव स
म रामनाम जुग आखर विश्व विकासी चारितु चरति कर्म कुकर्म करि म
रत जीवगण घासी लहत परमपद पय पावन जेहि चहत प्रपंच उदासी क
हत पुराण रची केशव निज कर करतूति कलासी तुलसी वसि हरपुरी रा
म जपु जो भयो चाहै सुपासी २२ राग वसंत सव शोच विमोचन चित्रकूट क
लिहरण करण कल्याण बूट सुचि अवनि सुहावनि आलबाल का
नन विचित्र वारि विशाल मंदाकिनी मालिनि सदा सींच वर वारि विषम न
र नारि नीच शाखा सुशृंग भूरुह सुपात निर्झर मधुवर मृदु मलय वात सुक पि
क मधुकर मुनिवर विहार साधन प्रसून फल चारि चारु भव घोर घाम हर सु
खद छांह जानकीनाह थाप्यो थिर प्रभाव साधु सुपथिक वड भाग पाइ
पावत अनेक अभिमत अघाइ रस एक रहित गुण कर्म काल सिय राम
लखन पालक कृपाल तुलसी जो पद चहसि प्रेम सेइय गिरि करि निरुपा
धि नेम २३ राग कान्हरा अब चित चेति चित्रकूटहि चलु कोपित कलि
लोपित मंगल मग विलसत बढ़त मोह माया मल भूमि विलोकि राम पद अं
कित वन विलोकि रघुवर विहार थल शैल शृंग भव भंग हेतु लखु दलन क
पट पाखंड दंभ दल जहं जनमे जग जनक जगतपति विधि हरि हर परि
हरि प्रपंच छल सुकृत प्रवेश करत जेहि आश्रम विगत विषाद भये पा
रथ नल न करु विलंब विचारु चारुमति वरष पाछिले सम अगिले पल म

सोज्ञाङ्गपद दिजो मपत भेअजरअमर हर अंचई हला हलरामनाम जप
जाम कारत निज़मज्जत भय पानि पीवत जल करिहैं राम भावती मन्न को सु
खसाधन अन पास महा फल कामशारमृति कामना कल्पतरु सोयुग
युगजागत जग तीमल तुलसी तोहि विशेष बूझिये एक प्रतीति प्रीति एकैब
ल२४ राग धनाश्री जयत्यंजनागर्भ अंभोधिसंभूत विधु विबुध कुलकैर
वानंदकारी केशरी चारु लोचन चकोर सुखद लोक गणशोक संताप हा
री जयति जयति जय बालकपिकेलि कौतुक उदित चंडकर मंडल ग्रा
सकर्त्ता राहु रविशक्र पवि गर्व खर्वी करण शरणभय हरण जय भुवन
भर्त्ता जयति रणधीर रघुवीर हित देवमणि रुद्र अवतार संसार पाता विप्र
सुर सिद्ध मुनि आशिषाकार वपुषं विमल गुण बुद्धि वारिधि विधाता ॥
जयति सुग्रीव सिक्षादि रक्षण निपुण बालि बल शालि वध मुख्य हेतु ॥
जलधि लंघन सिंह सिंहिका मद मथन रजनिचर नगर उत्पात केतु जयति
भूनंदनी शोच मोचन विपिन दलन घननाद वस विगत शंका लसल्लीला
नलज्वालमालाकुलित होलिका करत लंकेश लंका जयति सौमित्र
रघुनंदनानंदकर रिक्ष कपि कटक संघट विधाई बंध वारिधि सेतु अमर मं
गलहेतु भानु कुल केतु रण विजय दाई जयति जय वज्रतनु दशन नख
मुख विकट चंडभुजदंड तरु शैल पानी समर तैलिक यंत्र तिल तमीचर नि
कर पेरि डारे सुभट रण घानि घानी जयति दश कंठ घट करण वारिद नाद
कदन कारण कालिका लंनेगि हंता अघट घटना सुघट सुघट बिघटन
विकट भूमि पाताल जल गगन गंता जयति विख्यात विश्व वानैत विरदाव
ली बिदुख वरणत वेद विमल वानी दास तुलसी त्रास शमन सीता रवण
संग शोभित सुभग राम राजधानी ॥२५॥ जयति मर्कटाधीश मृगराज
विक्रम महादेव मुद मंगलालय कपाली मोह मद क्रोध कामादि खल सं
कुला घोर संसार सशि किरणमाली जयति लसदंजनादिति नकपिके
शरी कश्यप प्रभव जगदार्त्ति हर्त्ता लोक लोकप कोक कोकनद शोक हर

हंसहनुमानकल्पालकर्त्तोजयतिसुविशालविकरालविग्रहवज्रसा
रसर्वांगभुजदंडभारीकुलिशनखदशनवरलसतवालधिबृहद्वैरिशस्त्रा
स्त्रधरकुधरधारीजयतिजानकीशोचसंतापमोचनरामलक्ष्मणानंदवा
रिजविकासीकपीसकौतुककेलिलूमलंकादहनदलनकाननतरुणतेज
राशीजयतिपाथोधिपाषाणजलजानकरजातुधानप्रचुरहर्षहाता
रदुष्टरावणकुंभकर्णपाकारिजितमर्मभित्कर्मपरिपाकदाताजयति
भुवनैकभूषणविभीषणवरदविहितकृतिरामसंग्रामसाकापुष्पकारूढ
सौमित्रसीतासहितभानुकुलभानुकीरतिपताकाजंयतिपरयंत्रमंत्रा
भिचारग्रसनकार्मनकूटकृत्यादिहंताशाकिनीडाकनीपूतनाप्रेतवे
तालभूतप्रमथयूथजंताजयतिवेदांतविद्विविधविद्याविशदवेदवेदांग
विद्ब्रह्मवादीज्ञानवैराग्यविज्ञानभाजनविभोविमलगुणगनंतिशुकनारदा
दीजयतिकालगुणकर्ममायामथननिश्चलज्ञानव्रतसत्यरतधर्मचा
रीसिद्धसुरवृंदयोगींद्रसेवितसदादासतुलसीप्रणतभयतमारी२६जयतिमंगलाग
रसंसारभारापहरवानराकारविग्रहपुरारीरामरोषानलज्वालमालामिष
ध्वांतचरशलभसंहारकारीजयतिमरुदंजनामोदमंदिरनतग्रीवसुग्रीवदु
खैकबंधोजातुधानोद्धतक्रुद्धकालाग्निहरसिद्धसुरसज्जनानंदसिंधोजयतिरु
द्राग्रणीविश्ववंद्याग्रणीविश्वविख्यातभटचक्रवर्त्तीसामगाताग्रणी
कामजेताग्रणीराममहितरामभक्तानुवर्त्तीजयतिजयरामसंग्रामसंदेशहर
कौशलाकुशलकल्याणभाषीरावणविद्रोहकेसंतप्तभरतादिनरनारिशीतल
करणकल्पशाखीजयतिसिंहासनासीनसीतारमणनिरखिनिर्भरहरषनृ
त्यकारीरामसंभ्राजशोभासहितसर्वदातुलसिमानसरामपुरविहारी॥
२७॥जयतिवातसंजातविख्यातविक्रमवृहद्बाहुबलविपुलवालधिवि
शालाजयतिरूपाचलाकारविग्रहलसतलोमविद्युल्लताज्वाल
मालाजयतिबालार्कवरवदनपिंगलनयनकपिशकर्कशजटाजूटधा
रीविकटभृकुटीवज्रदशननखवैरिमदमत्तकुंजरपुंजकुंजरारीजयतिभीमा

जंनव्यालसूदनगर्वहरधनजयरथत्राणकेतूभीषमद्रोणकरणादि
पालितकालदृकसुजोधनचमूनिधनहेतूजयतिगतराजदातारहंतारसं
सारसंकटदनुजदर्पहारीइतिभीतिग्रहप्रेतचौरानलव्याधिबंधाशमन
घोरमारीजयतिनिगमागमव्याकर्णकरणलिपिकाव्यकौतुककल
कोटिसिंधोसामगायकभक्तकामदायकवामदेवरामप्रियप्रेमबंधोज
यतिधर्मांसुसंदग्धसंपातिनवपक्षलोचनदिव्यदेहदाताकालकलिपा
पसंतापसंकुलसदाप्रणततुलसीदासताततमाता२८जयतिनिर्भरानंद
संदोहकपिकेशरीकेशरीसुवनभुवनैकभर्त्तादिव्यभूम्यंजनामंजुलाक
रमणेभक्तसंतापचिंतापहर्त्ताजयतिधर्मार्थकामापवर्गदविभोब्रह्म
लोकादिवैभवविरागीवचनमानसकर्मसत्यधर्मव्रतीजानकीनाथचर
णानुरागीजयतिबिहगेशबलबुद्धिवेगातिमदमथनमन्मथमथन
ऊर्द्धरेतामहानाटकनिपुणकोटिकबिकुलतिलकगानगुणगर्वगं
र्वजेताजयतिमंदोदरीकेशकर्षणबिद्यमानदशकंठभटमुकटमानी
भूमिजादुःखसंजातरोषांतकृतजातनाजंतुकृतजातुधानीजयतिराम
णश्रवणसंजातरोमांचलोचनसजलशिथिलवाणीरामपद
कारंदमधुकरपाहिदासतुलसीसरणपाणी२९रागसारंगजाके
हैहनुमानकीताकीपयजपूजिआवैयहरेखाकुलिशपषानकीघटि
तघटनसुघटबिघटनऐसीबिरदावलीनहिंआनकीसुमिरतसंकटसोच
बिमोचनमूरतिमोदनिधानकीकहतिनामनारहलतदुसहदुखगिरिजा
नञजानकीतुलसीकपिकीकृपाविलोकनिखानिसकलकल्यानकी३०
रागगौरीताकिहैतमकिताकीओरकोजाकेहैसबभांतिभरोसोकपिकेश
रीकुमारकोजनरंजनअरिगणगंजनमुखभंजनखलबरजोरकोवेदपुराण
प्रगटपुरुषारथसकलसुभटशिरमौरकोउथपेथपनथप्योथपनमनबि
बुधबंदबंदीछोरकोजलधिलांघिदहिलंकप्रबलदलनिशचरघोर
कोरजाकोबालबिनोदसमुझिजियडरतदिवाकरभोरकोजाकीचि

तुके चोट चूरण कियरदमरकुलिश कठोरको लोक पाल अनुकूलवि
लोकिवो यहत दलोचन कोरको सदा अभय जय मुद मंगल मय सोसेव
करणरोरको भक्त कामतरु नाम राम परिपूरण चंद चकोरको तुलसी
पालचारों करतल यश गावत गई हैं हरि को ३१ राग विलावल। ऐसी तो हि न
बूझिये हनुमान हठीले साहिव कहूं न राम से तो से न वासी ले चारों युगनि हूं
काल मैं तिहुं राम गीलि तेरे देखत सिंह का सिसु मेढ़क मेले जानत हौं कलि
तेरे उमनो गुण कीले हांक सुनत दशकंध के भये बंधन ढीले सो बल गयो
कि धौं भये अब गर्व गहीले सेवक को परदा फटै तुम समरथ सीले अधि
क आपु तें आपनो सनुमान सहीले सासति तुलसीदास की सुनि सुय
श तुही ले तिहूं काल तिन को भलो जे राम रसीले ३२ समर्थ सुअन स
मीर को रघुवीर पियारे मो पर कीवे तो हि जो करलेहि भियारे तेरी महि
मा ते चलें चिंचिनी चियारे अधियारो मेरी वार को त्रिभुवन उजियारे॥
हि करणी जिय जानि के सनमान कियारे कोहि अघ अवगुण आप
करि डारि दियारे खाय खोंचि जग मांह मंतिरानाम लियारे तेरे कसवल
लों जग जाग जियारे जो हौं तो तो सों फिरो मेरो हनू हियारे तव कौं
दरवावत कहि वचन इयारे तेसों ज्ञान निधान को सर्वज्ञ वियारे
हो तसोइ दोह कीगति छार छियारे तेरे स्वामी राम सों स्वामिनि
सिय तुलसी के कौन को काको तकियारे ३ ३ राग विलावल अति आ
रति आरथी अति दीन दुखारी इनको विलगुमानिये वोलो हिन विचारी
लोक दीरवी सुनी व्याकुल नरनारी अति बरषे अनवरष हूं देहि दैवहि
गारी नाकी आयेनाथं सों सासति भइ भारी कहि आयो कीवे क्षमानि
ज और निहौ मय संकोरे सुमिरिये समरथ हितकारी से विधि सव उपका
रकरि अपराध धारी विगरी सेनक सदा साहिव हिसुधारी तुलसी पर तेरी कृपा
निरुपाधि निपारी ३४ दुक हियेगाढीय सुनि समझि सुसांई करहि अनभले को भ
लो आपनी भलाई सर्व्व समुभ जो पाइये वीर पीर पराई ताहि तके सव ज्यौं

नदी वारिधिन वुलाई अपने अपने को भलो चहै लोगलुगाई भावै जो जेहि तेहि भजें सुभ असुभ सगाई बाहु वोलि दै थापिये जो निज बरिआई विनु बासो पालिये सेवक की मांई चूक चपल ता मेरियै तू बड़ो बड़ाई होत आदरे ढीठ है अति नीच निचाई वंदि छोर विरदावली निगमागम गाई नीको तुलसीदास को तेरियै निकाई ३५ राग गौरी मंगल मूरति मारुतनंदन सकल अमंगल मूल निकंदन पवन तनय संतन हितकारी हृदय विराजत अवध विहारी मातु पिता गुरु गणपति सारद सिवा समेत शंभु सुक नारद चरण बंदि विनवौं सब काहू देहु राम पद नेह निवाहू बंदौं राम लषन वैदेही जे तुलसी के परम सनेही ३६ ठुमुक चलत लाल लाइलि लषन हौं हित जन के सुमिरे संकट हारि सकल सुमंगल करि पालक कृपाल अपने पन के धरणि धरण दारु भंजन भुवन भार अवतार साहसी सहस फन के सत्य संध सत्य व्रत परम धरम रत निर्मल करम वचन अरु मन के रूप के निधान धनुवाण पाणि तूण कटि महावीर विदित जितैया वड़े रण के सेवक सुखदायक सबल लायक सहायक गायक जानकीनाथ गुण गण के भावते भरत के सुमित्रा सिया के दुलारे चातिक चतुर रामश्याम घन के वल्लभ उर्मिला के सुलभ सनेह वश धनी धन तुलसी निरधन के ३७ राग धनाश्री जयति लक्ष्मणानंत भगवंत भूधर भुजगराज भुवनेश भूभार हारी प्रलय पावक महा ज्वाल माला वमन शमन संताप लीलावतारी जयति दाशरथि समर्थ सुमित्रा सुअन भुवन विख्यात राम भरत बंधो चरु चंपक वरण वसन भूषण धरण दिव्यतर भव्य लावण्य सिंधो जयति गाधेय गौतम जनक सुख जनक विश्व कंटक कुटिल कोटि हंता वचन चय चातुरी परसुधर गर्व हर सर्वदा राम गुण ग्राम भद्रानुगंता जयति सीतेश सेवा सरस विषय रस निरस निरुपाधि धुर धर्म धारी विपुल वल मूल शार्दूल विक्रम जलनाद मर्दन महावीर भारी जयति संग्राम सागर भयंकर तरण राम हित करण वर वाहु सेतू उर्मिला रवण कल्याण मंगल भवन दास तुलसी दोष दमन हेतू ३८ जयति भूमि जा रवण पद कंज मकरंद रस रसिक मधुकर भरत भूरि

रिभागी भुअन भूषण भानुवंश भूषण भूमिपाल मणि रामचंद्रानुरागी
जयति विबुधेश धनुदादि दुर्लभ महाराज सम्राज सुखप्रद बिरागी खड्गधा
राव्रती प्रथम रेखा प्रगट शुद्धमति युवति पति प्रेम पागी जयति निरुपा
धि भक्ति भाव यंत्रित हृदय बंधु हित चित्रकूटाद्रि चारी पादुका नृप सचि
व पुहमिपालक परम धर्म धुर धीर बर भीर भारी जयति संजीवनी समय संकट
हनूमान धनुबाण महिमा बखानी बाहुबल बिपुल परमित पराक्रम अतुल
गाति गूढ जानकी जानि जानी जयति रण अजिर गंधर्व गण गर्व हर किये
रामगुण गाथ गाथा मांडवी चित्त चातक नवांबुद बरण शरण तुलसीदा
स अभय पद दाता ३९ जयति जय शत्रु करि केशरी शत्रुहन शत्रुतम तुहिन हर कि
रण केतु देव महिदेव महि धेनु सेवक सुजन सिद्धि मुनि सकल कल्याण
केत जयति सर्वांग सुंदर सुमित्रा सुअन भुवन विख्यात भरतानुगामी बर्म चर्मा
सि धनु बाण तूणीर धर शत्रु संकट शमन नवम प्रणामी जयति लवणां
बुनिधि कुंभसंभव महा दनुज दुर्जन दवन दुरित हारी लक्ष्मणानुज भरत
राम सीता चरण रेणु भूषित भाल तिलक धारी जयति श्रुति कीर्ति वल्लभ
सुदुर्लभ सुलभ नमन नर्मद भक्त दाता दास तुलसी चरण शरण शीतल
विभो पाहि दीनार्त्ति संताप हाता ४० जयति श्री जानकी भानुकुल भानु की
प्राण प्रिय बल्लभा व तरणि भूपे राम आनंद चैतन्य घन विग्रहा शक्ति अह
लादिनी सार रूपे जयति चित चरण चिंतन बनिजोहि धरत हरि काम भय के
ह मद मोह माया रुद्र विधि विधि बि भ्रमु सुर सिद्धि बंदित पदे जयति सर्वेश्वरी
राम जाया कभी जप योग विज्ञान बैराग्य लहि मात हरि जोगि जे प्रभु मनावै जयति
देह हो सब शक्ति शिर भूषणे जे न तन बद्ध शिवनिकाय हूँ पावैं जयति कोटि ब्रह्मां
ड जग ईश को इशानि हनि गम मन बुद्धि ते अगम गावैं विरति पर गाय त्र्यह
मान कुल माथ सोना धन ब दान मे हाथ आवैं हिय शत बर्ष जप ध्यान जव शि
ध से राम गुरु रूप मिल पथ बतायो मिते हित लीन लव विकश पाकी निगम बैर हसे
रव द्रा शापायो जयति श्री स्वामिनी सीय शुभ नाम दामिनी कोटि निज देह दर

शौंइरिरा आरिहै मतगजगामिनीरेखभाविनीनवसैवैपांपरसैदुरितिमल
रिवभक्तिविनदर्शनिजरूपनवजनजययमनितंपुलभनाहीं कृपापीरप्रणीनदकं
जलजलोचनीप्रगटभईजनकनृपअजिरमाहीं रमितनवाहिये।नयियप्रेमप्रग
टनकरनलंकपतिव्याजकछुखेलकन्योगोपिकाकुसननवनल्पबहुयन
कोरमोहिमिलईशआनंदमान्योहीननवसुखुखकेसंगरहिरंकसोविमुख
जोदेव नहि नाहिहेरो अधम उद्धरणायदजान गहिशरणमनदासतुलसी
भयोआयचेरो ४१ रागकेदार कबहुक अंबअवसर पाईमेरीऔसुधिद्याइबी
कछुकरुणकथाचलाईदीनसब अंगहीनक्षीणमलीन अघीअघाईनामले
उदरभरयोप्रभुएकदासकहाईबूझिहैंसोहैकौनकहिबोनामदशाजनाईसु
ननहीरामकृपालकेसरिविगारे औवनिजाइजानकीजगजननिजनकीकि
येबचनसहायदासतुलसीतरैभवतवनाथगुणगणगाई४२रागकबहूसमय
सुधि ॥ द्वैमेरीमातुजानकीजनकहानामलेतहोंकियेपनचातकज्यों
प्यासप्रेमपानकीसरलप्रकृतिआपुजानियेकरुणानिधानकीनिजगुण
अरिकृतअनहितोदासदोषसुरतिचित्तरहैतीहदियेदानकीवाणीविम
लशीलरहैमानदअमानकी४३जयतिजयसच्चिद्व्यापकानंदपरब्रह्मवि
ग्रहव्यक्तलीलावतारीविकलब्रह्मादिसुरसिद्धसंकोचवशकृपालशरणगु
हनरदेहधारीजयतिकौशलाधीशकल्याणकोशलसुतासुतकुशलकैवल्य
फलचारुचारीवेदबोधितकर्मधर्मधरणीधेनुविनसेवकसाधुमोदकारीनृप
तिकरषिमखपालशमनसज्जनशालशापवशमुनिवधूपापहारीभंजिभव
चापदलदापभूपावलीसहितभृगुनाथनतमाथभारीजयतिधार्मिकधौर
धुवीररघुवीरगुरुमातुपितुवधुवचनानुसारीचित्रकूटादिविंध्यादिदंडक
कियेनधन्यकृतपुण्यकाननविहारीजयतिपाकारिसुतकाकरतूतिफल
दानिखनिगर्तगोपितविराधादिव्यदेवीवेषदेखिलखिनिसचरीजनुविडं
विनकरीविश्वबाधाजयतिखरत्रिशिरदूषणचतुर्दशसहस्रसुभटमारीचसं
हारकर्तागृद्धशबरीभक्तिविवशकरुणासिंधुचरितनिरुपाधित्रिविधार्तिहर्त्ता

तो जयति मरवअघुक कबंधुबधिबालिबलिशालबधकरणसुग्रीवरा
जासुभटमर्कटभालुकटकसंघटसजनतबनपदरावणानुजनिवाजाजय
ति पाथोधिकृतसेतुकौतुकहेतुकालमनअगमलईललकिलंकासकुल
सानुजसदलदलितदशकंठरण लोकलोकपकियेरहितशका हितच
लेपुष्यकारूढ निजराजधानी दासतुलसीमुदितअवधवासीसकल
राम भेभूपवैदेहिरानी ४४ जयतिराजराजेंद्र राजीवलोचननामनाम
कलिकामतरुश्यामशालीअजयअबोधिकुंभजनिशाचरनिकरतिमि
घनघोरखर किरणमालीजयति जयदेवमुनिदेवनरदेवदशरत्थकेमुनि
वंद्यकियेअवधवासीलोकनायककोकशोकसंकटसमनभानुकुलकम
लकाननं विकाशी जयतिसृंगाररसतामरसदाम द्युतिदेहगुणगेहविश्वो
पकारीसकलसौभाग्यसौंदर्यसुखमारूपमनोभवकोटिगर्वापहारीजयति
सुभगसारंगसुनिखंगशायकशक्ति चारुचर्मासिवरवर्मधारी धर्मधुरधीर
रघुवीरभुजबलअतुलहेलयादलितभूभारभारी जयति कलिधौतमणि
मुकरकुंडलतिलकझलकभलिभालविधुवदनशोभादिव्यभूषणवस
नपीतउपवीतकियध्यानकल्याणभाजननकोमा जयतिभरतसौमित्रशत्रुघ्
नसेवितसुमुखसदासचिवसेवकसुखदसर्वदाता अधम आरतिदीनपतितपा
तकसकृतनतिमात्रकहेपाहिपाता जयतित्रिभुवनदशचारीयशजगमगतपुण्यमय
धन्य जयजयधन्य रामराजा चरितसुसरितकविमुखगिरनिःसरितपिवत
मज्जतमुदितसतसमाजा जयतिवर्णाश्रमाचारिवरनारिनरसत्यशमदम
दानरतशीलाविगतदुखदोषसंतोषसुखसर्वदासुनतगावतरामराजली
लाजयतिवैराग्यविज्ञानवारांनिधेनमतनर्मदपापतापहर्ता तुलसीदासचर
णशरणसंशयहरणदेहिअवलंबवैदेहिभर्ता ४५ रागगौरी श्रीरामचंद्रकृ
पालुभजुमनहरणभवभयदारुणं नवकंजलोचनं कंजमुखकरकंजपदकं
जारुणं कंदर्पअगणितअमितछविनवनीलनीरजसुंदरं पटपीतमानहुतडित
रुचिशुचिनौमिजनकसुतावरं भजदीनबंधुदिनेशदानवदैत्यवंशनिकंदनं

रघुनंदन आनंदकंद कौशलचंद दशरथनंदनं शिरमुकट कुंडलतिलक
चारुउदारु अंगादिभूषणं आजानुभुज शरचापधरसंग्रामजितखरदू
षणं इतिवदति तुलसीदास शंकर शेषमुनिमनरंजनममहृदयकंज
निवासकरिकामादिखलदलगंजनं ४६ रागराम कली देवसदारामजपु
राम जपुरामजपु मूढमढ मनवारवार सकल सौभाग्य सुखखनिजियजा
निशठ मानिविश्वास वदवेदसारं कौशलेंद्र नवनील कंजाभतनुमदन
रिपुकंजहृदिचंचरीकं जानकीरवण सुखभवन भुवनैकप्रभुन मभं
जसमर परमकारुणीकं दनुजवनधूमध्वज पी आजानुभुजदंडकोदंड
परचंडबाणं अरुण कारचरण मुखनयनराजीवगुणअयन बहुमयन
शोभानिधानं वासनावृंद कैरव दिवाकर काम क्रोधमद कंजकाननतुषारं
लोभअतिमत्तनागेंद्रपंचाननं विप्रहितहरण संसारभारं केशवं क्लेशहं
केश वंद्यं पदद्वंद्व मंदाकिनी मूलभूतं सवेदानंदसंदोह मोहापहं घोरसंसार
पाथोधि पोतं शोक संदेह पाथोदपटलानिलं पापपर्वत कठिनकुलिश
रूपं संतजनकामधुकधेनुविश्रामपद नामकलिकलुषभंजन अनूपंध
र्मकल्पद्रुमोद्यमहरि धाम पथि संबलं मूलमिदमेव मेकं भक्ति वैराग्य वि
ज्ञानशमदानदम नाम आधीनसाधन अनेकं तेन तप्तं तेन दत्तमेवाखि
लं तेन सर्वं कृतं कर्म जालं येन श्रीरामनामामृतं पानकृतमनसिमनवद्य
मवलोक कालश्वपचवल भिन्नयमनादि हरिलोकगतिनामवल
विपुलमनिमलिन परसी त्यागिसब आस संत्रास भवपाशिअसिनि
शितहरिनामजपुदास तुलसी ४७ ऐसी आरती रघुवीरकी करहुमन हर
णदुखद्वंद गोविंद आनंदघन चर अचर रूप हरिसर्वदा वसतइतिवा
सनाधूपदीजे दीपनिजबोधगत क्रोधमदमोहतम प्रौढ अभिमानचित
वृत्तिछीजे भाव अतिशय विशद प्रवर नैवेद्य शुभ श्रीरमण परमसंतोषका
रीमैप्रेतांबूलगत शूलसंशयसकलविपुलभववासनाबीजहारी अशुभश्रु
भकर्मनाघृत पूर्णदशवर्त्तिका त्यागपावक सतोगुणप्रकाशी भक्तिवरा

यथिविज्ञानदापावली अर्पेनी रंजनं जंग निवा श्रीविमलहरि भवनक्र
तिशांतिपर्यंक सुभशयनविश्राम श्रीरामराया क्षमाकरुणाप्रभुसुख
तत्रपरिचारि कायत्र हरि तत्र गहिं भेदमाया इद आरतीनितसनकादिक
स्तुतिशेषशिवदेव नारद विअखिलमुनत न्वदरखी करेसोई पैरपोरहरे
कामारिमलबदीतिगति अमलमतिदासतुलसी ४८ हरत आरतिसक
ल आरतीरामकी दहनि दुखदोष निर्मूलनिः कामीकी सुभगसौरमधु
पदीपबरमालिका उडुन अघविहग सुनिताल करतालिका भक्तहृद
यभवन अज्ञान तमहारणी बिमलविज्ञान मयतेजविस्तारिणी मोह
मदकोह कलिकंज हिमजामिनी मुक्तकी दूतिका देहदुति दामिनी प्र
णत जन कुमद बन इंदुकर जालिका तुलसी अभिमान महिषेशबहु
कालिका ४९ देव दनुज वन दहन गुनगहन गोविंद नंदादि आनंददा
ता अविनाशी शंभु शिव रुद्र कर भयंकर भीम घोर तेजायतन क्रोधराशी
अनंत भगवंत जगदंत अंतक त्रास शमन श्रीरवन भवनाभिरामं भूधराधीश
जगदीश ईशान विज्ञान घन ज्ञान कल्याण धामं वामनाव्यक्त पावन परावन
बिभो प्रगट परमात्मा प्रकृतिस्वामी चंद्रशेखर शूलपाणिहर अघ अज अमि
त अविच्छिन्न वृषभेष गामी नीलजलदाभतनु श्यामबहु काम छबिराम राजी
वलोचन कृपालं कंबुकर्पूर वपु धौल निर्मल मौल जटा सुरतटिनि सित सुग
नमालं बसन किंजल्क धर चक्र सारंग दर कंज कौमोदकी अति विशालं
मार करि मत्त मृगराज त्रय नयन हर नौमि अपहरण संसार ज्वालं कृष्णक
भक्त वन काली पहल विपुल कैसादि निर्वश कारी त्रिपुर मद भंगकारी मत्त गा
ज चर्मधर अंधकोरग ग्रसनपन्नगारी ब्रह्म व्यापक अकल सकल पर परमहि
त ग्यान गोतीत गुणवृत्ति हरता सिंधुसुतगर्भगिरि वज्र गौरीश भव दक्ष मख
अखिल विध्वंस कर्ता भक्त प्रिय भक्तजन कामधुक धेनु हरि हरण दुर्घट
विकट विपरीति भारी सुखद नर्मदा वरद विरज अनवद्य अखिल विपिन आनंदवीथि
निविहरि [illegible] गीता मम [illegible] नोद [illegible] आनंदवानिवि

सशिवलोक सोपान सम सर्वदा वदति तुलसीदास विशद बानी। ५०॥ देव भानु
कुलकमल रविकोटि कंदर्प छवि काल कलि व्याल मिव वैनतेयं प्रबल
भुजदंड परचंड कोदंड धर तूणवर विशिषबलमप्रमेयं अरुण राजीव दल न
यन सुखमा अयन श्याम घन कांति वर वारिदाभं तप्त कांचन वस्त्र शस्त्र विद्या नि
पुण सिद्ध सुरसेव्य पाथोजनाभं अखिल लावण्य गृह विश्व विग्रह परम प्री
ढ गुण गूढ महिमा उदारं दुर्द्धर्ष दुस्तर दुर्ग स्वर्ग अपवर्ग पति भग्न संसार पा
दप कुठारं शापवश मुनि वधू मुक्ति कृत विप्र हित यज्ञ रक्षण दक्ष पक्ष कर्ता
जनक नृप सदसि शिव चाप भंजन उग्र भार्गवागर्व गरिमापहर्त्ता घोर गु
रु गिरा गौरव सु दुस्त्यज राज्य त्यक्त सकल सौमित्र भ्राता सहित जनकात्मजा
मनुज मनुसृत्य अज दुष्ट बधि निरत त्रैलोक्य त्राता दंडकारण्य कृत पाव
नरण हरण मारीच माया कुरंग बालि बल मत्त गजराज इव केशरी हनुमत्सु
ग्रीव दुष राशि भंगारि हन्ता बटविकट भट उद्भट समर शैल संकाश रिपुत्रा
सकारी बाधि पाथोधि सुरनिकर मोचन सकुल दलन दशशीश भुज बीस
भारि दुष्ट विबुधारि संघात अपहरण महिभार अवतार कारण अनूपं अ
मल अनवद्य अद्वैत निर्गुण सगुण ब्रह्म सुमिरामि नर भूप रूपं शेष श्रुति सा
रदा शंभु नारद सनकादि गनत गुण अंत नहि तव चरित्रं सोइ राम कामारि
प्रिय अवधपति सर्वदा दास तुलसी निधि विचित्रं ५१॥ जानकीनाथ रघु
नाथ रागादि तम तरणि तारुण्य तनु तेज धामं सच्चिदानंद आनंद कंदाक
र विश्व विश्राम रामाभिरामं नील नव वारिधर सुभग शुभ कांति कर पीत कौ
शेय वर वसन धीरा रत्न हाटक जटित मुकुट मंडित मौलि भानु शत सदृ
श उद्योतकारी श्रवण कुंडल भाल तिलक भ्रू रुचिर अति अरुण अंभोज
लोचन विशालं वक्र अवलोक त्रैलोक शोकापहं मार रिपु हृदय मानस म
राल नासिका चारु सुकपोल द्विज बज्र दुति अधर बिंबोपमा मधुर हासं कं
ठ दर चिबुक वर वचन गंभीरतर सत्य संकल्प सुरत्रास नाशं सुमन सुचिर
चित्र नव तुलसिका दल युत मृदुल वनमाल उर भ्राजमानं भ्रमत आमोद

बद्यामलमधुकरनिकरमधुरनिरसुस्वर कुर्वंतिगानंम्प्रभाग्श्रीवत्सकेसु
रकंकणहारकिंकणीरटत्तिकटितटरसालंवामदिशिजनकजासीन
सिंहासनं कनकमृदुवल्लिमीवतरुतमालंम्प्रजानुभुजदंडकोदंडमंडि
तामवहदक्षिणपाणिवाणमेकंम्प्रखिलमुनिनिकरसुरसिद्धगंधर्ववा
नमननरनागम्प्रवनिपश्चनेकंम्प्रनघम्प्रविछिन्नसर्वज्ञसर्वेशखलुसर्वतो
मद्रदातासमाकंप्रणतजनखेदविच्छेदविद्यानिपुणानौमिश्रीराममसौपि
त्रिशाकंयुगलपदपद्मसुसद्मपद्मावलीचिन्हकुलिशादिशोभातिभारीह
नुमतहारविमलकृतपरममंदिरसदादासतुलसीसरणशोकहारीपरेव
कौशलाधीशराजगदीशजगदेकहितम्प्रमितगुणाविपुलविस्तारलीलामप
नितवचरितसुपवित्रम्प्रतिशेषम्प्रकेशभुसनकादिमुनिमननलीलावारि
चरवपुषधरभक्तनिस्तारधरणीकृतनावम्ब्राहिमानिगुर्वीसकलम्प्रत्यास
मयउग्रविग्रहकोड़मर्दिदनुजेशउद्धरणउर्वीकमठम्प्रतिविकटतनुकठि
नपृष्ठोपरिभ्रमतमंदरं कुंदसुखघुरारिणार कृतम्प्रमितगोइरिराइंदुवंदारका
रस्प्रानंदकारीमनुजमनुसिद्धिसुसागमासकरुद्रदनुजद्विजधर्ममर्यादहर्जोम्प्रतुल
म्गराजवपुधारतविदारितम्प्ररिभक्तप्रहलादम्प्रहादकर्ता॥छलितनलिकपट
तरूपवावनव्रह्मभुवनपर्यंतपदतीनकरणांचरणाननखनीरत्रैलोक्यपावनसरम
विपुलजननीदुसहशोकहरणीसात्रियाधीशकरिनिकरवरकेशरीपरसुधरवि
प्रशशिजलदरूपंवीशभुजदंडदशशीशखंडनचंडवेगशायकनौमिरामरूपं
भूमिभरभारहरप्रगटपरमात्मब्रह्मनररूपधरभक्तिहेतबृष्णिकुलकुमुद
राकेशराधारमणकंसवंशाटवीधूमकेतुप्रवलपापंडमहिमंडलाकुलक
रविततिथाकृतम्प्रखिलमखकर्मजालंशुद्धवोधैक घनज्ञान गुणधामम्प्रज
म्प्रवतारवरकृपाजंकालंकालिजनिनमलमलिनमनसर्वनरमोहनिशिनिविड
यमनाधकारविमुयशामुक्तकलकीदिवाकरंउदयदासतुलसीहरणविपतिभारं
सरेवसकलसौभाग्यप्रदसर्वतोभद्रनिधिसर्वसर्वेशसर्वाभिरामंसर्वहदिकंज
मकरंदमधुकररुचि [illegible] धामगुणधाम विश्राम

पदनामसर्वोपद्रवमातिपुनीतंनिर्मलशांतिसुविशुद्धबोधायतनक्रोध
मदहरणकरुणानिकेतं अजितनिरूपाधिगोतीतमव्यक्तविभुमेकमन
वद्यमजमद्वितीयंप्रकृतिमगारं परमात्मापरमहितमेकानंदवंदेतुरीयंभू
धरंसुंदरंश्रीवरंमदनमदमथनसौंदर्यसीमातिरम्यंदुःप्राप्यदुःप्रेक्ष्यदुस्तर्क्यदु
पारसंसारहरसुलभमृदुभावगम्यंसत्यकृतसत्यरतसत्यव्रतसर्वदापुष्टसंतु
ष्टसंकष्टहारीधर्मवर्माणिब्रह्मकर्मबोधकविप्रपूज्यब्रह्मण्यजनप्रियमु
रारीनित्यनिर्ममनित्यमुक्तनिर्मानहरिज्ञानघनसच्चिदानंदमूलंसर्वर
क्षकसर्वभक्ताध्यक्षकूटस्थगूढार्चिभक्तानुकूलंसिद्धसाधकसाध्यवाच्यवा
चकरूपमंत्रजापकजाप्यसृष्टस्रष्टापरमकारणंकंजनाभिंजलदाभतनुसगुण
सकलदृश्यदृष्टाव्योमव्यापकविरजब्रह्मवरदेशवैकुंठवामनविबुधसंचारी
सिद्धवृंदारिकावंदवंदितसदा खंडपाखंडनिर्मूलकारीपूर्णानंदसंदोहअपहर
णसंमोहअज्ञानगुणसन्निपातंवचनमनकर्मगतशरणतुलसीदाससंत्रास
पाथोधिविकुंभजातं॥५४॥ देवविश्वविख्यातविश्वेशविश्वायतनविश्वम
र्यादव्यालारिगामीब्रह्मवरदेशवागीशव्यापकविमलविपुलबलखानि
निर्वाणस्वामीप्रकृतिमहत्तत्वशब्दादिगुणदेवताव्योममरुदग्निअमलांबुउर्वी
बुद्धिमनइंद्रियाप्राणचित्तात्माकालपरमाणुचिच्छक्तिगुर्वीसर्वमेवात्र
द्रूपभूपालमणिव्यक्तमव्यक्तगतभेदविष्णोभुवनभवदंगकामारिवंदित
पदद्वंदमंदाकिनीजनकजिष्णोआदिमध्यांतभगवंतत्वंसर्वगतमीशप
श्यंतिजेब्रह्मवादीयथापटतंतुघटमृत्तिकासर्पस्रगदारुकरिकनककटकां
गदादीगूढगंभीरगांवधगूढार्थविकुण्ठगोतीतगुरुज्ञानज्ञाताज्ञेयविज्ञानप्रि
यप्रचुरगरिमागारघोरसंसारपरपारदातासत्यसंकल्पछांनिकलकल्या
णकृतकल्पनातीतअहितल्पशायीवनजलोचनवनजनाभिवनदाभवपुव
नचरध्वजकोटिलावण्यराशीसुकरदुःकरदुराराध्यदुर्व्यसनहरदुर्गदु
र्धर्षदुर्गार्तिहर्तावेदगर्भार्भकादर्भगुणगर्भकरिखर्वपरगर्भनिवाप
कर्ताभक्तअनुकूलभवशूलनिर्मूलकरतूलअघनामपावकसमानंतालु

त्रस्मातभीतरणिधरणीधरशरणभयहरणकरुणानिधानंवल्ल
वहारुवृंदारिकोवृंदपरद्वंद्वयमंदारमालोरधारीपाहिमामीशसंतापसंकु
लसदादासतुलसीप्रणतरावणारी॥५५॥देवसंतसंतापहरविश्वविश्रामकररा
मकामारिअभिरामकारीशुद्धबोधायतनसच्चिदानंदघनसज्जनानंदवर्द्धन
खरारीशीलसमताभवनविषमतामतिशमनरामरामारमनरावणारीख
ड्गकरचर्मवरवर्मधररुचिरकटितूणशरशक्तिसारंगधारीसत्यसंधाननि
र्वाणप्रदसर्वहितसर्वगुणज्ञानविज्ञानशालीसघनतमघोरसंसार
भरशर्वरीनामदिवसेशखरकिरणमालीतपनतीक्ष्णतरुणतीव्रतापघ्न
तरूपतनुभूपतमपरतपस्वीमानमदमदनमत्सरमनोरथमथनमोहअं
भोधिमंदरमनस्वीवेदविख्यातवरदेशवामनविरजविमलवागीशवैकुंठस्वा
मीकामक्रोधादिमर्दनविवर्द्धनक्षमाशांतिविग्रहविहगराजगामीपरमपाव
नपापपुंजमुंजाटवीअनलमिवनिमिषनिर्मूलकर्त्ताभुवनभूषणदूषणारि
भुवनेशभूनाथश्रुतिमाथजयभुवनभर्त्ताअमलअविचलअकलसक
लसंतप्तकलिविकलताभंजनानंदरासीउरगनायकशयनतरुणपंकज
नयनक्षीरसागरअयनसर्ववासीसिद्धकविकोविदानंददायकपदद्वंद्वमंदा
त्ममनुजैर्दुरापंयत्रसंभूतअतिपूतजलसुरसरीदर्शनादेवअपहरतिपा
पं॥नित्यनिर्मुक्तसंयुक्तगुणनिर्गुणानंदभगवंतन्यामकनियंताविश्व
पोषणभरणविश्वकारणकरणतुलसीदासत्रासहंता॥५६॥देवदनुजसूदनदया
सिंधुदंभापहनदहनदुर्दोषदर्पापहर्त्तादुष्टतादमनदमभवनदुःखौघहरदु
र्गदुर्वासनानाशकर्त्ता॥भूरिभूषणभानुमंतभगवंतभवभंजनाभयदभुवनेशभा
रीभानुभीतिभवबंधभवभक्तिहितभूमिउद्धरणधारी॥सखवानराभव
गीशविश्वात्माविरजवैकुंठमंदरविहारी॥व्यापकंव्योमवंदारवामनविभो
ब्रह्मविद्ब्रह्मचिंतापहारी॥सहजसुंदरसुमुखसुमनशुभसर्वदाशुद्धसर्वज्ञ
स्वच्छंदचारी॥सर्वकृतसर्वभृतसर्वहितसत्यसंकल्पकल्पांतकारी॥नित्यनिर्मो
हनिर्गुणनिरंजननिजानंदनिर्वाणनिर्वाणदाता॥निर्भरानंदनिःकंपनिःसीमनिर्मुक्त

निरुपाधिनिर्ममविधाता॥महामंगलमूलमोदमहिमायतनमुग्धमधु
मथनमानदअमानी॥मदनमर्दनमदातीतमायारहितमंजुमानाथपाथोज
पानीकमललोचनकलाकोशकोदंडधरकोशलाधीशकल्याणराशी॥जा
तुधानप्रचुरमत्तकरिकेसरीभक्तमनपुण्यआरण्यवासी॥अनघअद्वैतअन
वद्यअव्यक्तअजअमितअविकारआनंदसिंधो॥अचलअनिकेतअविरलअ
नामयअनारंभअंभोदनादघ्नबंधो॥दासतुलसीखेदखिन्नआपन्नइहशो
कसंपन्नअतिशयसभीतं॥प्रणतपालकरामपरमकरुणाधामपाहिमामु
र्विपतिदुर्विनीतं॥५७॥देहिसतसंगनिजअंगश्रीरंगभवभंगकारणशर
णशोकहारी॥जेतुभवदंघ्रिपल्लवसमाश्रितसदाभक्तिरतविगतसंशयमु
रारी॥असुरसुरनागनरयक्षगंधर्वखगरजनिचरसिद्धयेचापिअन्येसंतसं
सर्गत्रैवर्गपरपरमपदप्राप्यनिःप्राप्यगतित्वयिप्रसन्ने॥वृत्रबलिबाणप्रल्हाद
मयव्याधगजगृद्धद्विजबंधुनिजधर्मत्यागी॥साधुपदसलिलनिर्धूतकल
मषसकलश्वपचयवनादिकैवल्यभागी॥शांतनिरपेक्षनिर्ममनिरामयअ
गुणशब्दब्रह्मैकपरब्रह्मज्ञानी॥दक्षसमदृकस्वदृकविगतअतिस्वपर
मतिपरमरतिविरतितवचक्रपानी॥विश्वउपकारहितव्यग्रचितसर्वदात्यक्त
मदमन्युकृतपुण्यरासी॥यत्रतिष्ठंतितत्रैवअजसर्वहरिसहितगच्छंतिक्षी
राब्धिवासी॥वेदपयसिंधुसुविचारमंदरमहाअखिलमुनिवृंदनिर्मथनक
र्ता॥सारसतसंगमुद्धृत्यइतिनिश्चितंवदतिश्रीकृष्णवैदर्भिभर्ता॥शोकसं
देहभयहर्षतमतर्षगणसाधुसद्युक्तिविच्छेदकारी॥यथारघुनाथसायक
निशाचरचमूनिचयनिर्दलनपटुवेगभारी॥यत्रकुत्रापिममजन्मनिजकर्मवश
भ्रमतजगजोनिसंकटअनेकं॥तत्रत्वद्भक्तिसज्जनसमागमसदाभवतुमे
रामविश्राममेकं॥प्रबलभवजनितत्रैव्याधिभेषजभक्तिभक्तभैषज्यमद्वैतद
रसी॥संतभगवंतअंतरनिरंतरनहींकिमपिमतिविमलकहदासतुलसी॥
५८॥देहिअवलंबकरकमलकमलारमणदमनदुखशमनसंतापभा
री॥अज्ञानराकेशग्रासनविधुंतुदगर्वकामकरिमत्तहरिदूषणारि॥वपुब्र

दसप्रवृत्तिलंकादुर्गरचितमनदनुजमयरूपधारी॥विविधिकोसौघअ
तिसंचिरमंदिरनिकरसत्यगुणप्रमुखत्रैकूटकारी॥कुनयअभिमानसाग
रभयकर्णधारविपुलअवगाहदुस्तरअपारं॥नक्ररागादिसंकुलमनोरथ
सकलसंगसंकल्पवीचीविकारं॥मोहदसमौलितद्भ्रातअहंकारपाकारि
जितकामविश्रामहारी॥लोभअतिकायमत्सरमहोदरदुष्टक्रोधपापिष्ट
विबुधांतकारी॥द्वेषदुर्मुखदंभखरअकंपनकपटदर्पमनुजादमदसूल
पानी॥अमितबलपरमदुर्जयनिशाचरनिकरसहितषडवर्गगोजातुधानी॥
जीवभवदंघ्रिसेवकविभीषणबसतमध्यदुष्टाटवीग्रसितचिंता॥नियमय
मसकलसुरलोकलोकेसलंकेसवसनाथअत्यंतभीता॥ज्ञानअवधेशगृहगे
हनीभक्तिसुभतत्रअवतारभूभारहर्त्ता॥भक्तसंकष्टअवलोकिपितुवाक्यकृ
तगमनकियगहनवैदेहिभर्त्ता॥कैवल्यसाधनअखिलभालुमर्कटविपुलज्ञान
सुग्रीवकृतजलधिसेतू॥प्रबलवैराग्यदारुणप्रभंजनतनयविषयवनभव
नमिवधूमकेतू॥दुष्टदनुजेशनिर्बंशकृतदासहितविश्वदुखहरणबोधैकरासी॥
अनुजनिजजानकीसहितहरिसर्वदादासतुलसीहृदयकमलवासी॥५८॥देव
दीनउद्धरणरघुवर्यकरुणाभवनशमनसंतापपापौघहारी॥विमलविज्ञा
नविग्रहअनुग्रहरूपभूपवरविबुधनर्मदखरारी॥संसारकांतारअतिघोरगं
भीरघनगहनतरुकर्मसंकुलमुरारी॥वासनावल्लिखरकंटकाकुलविपुल
निबिडविटपाटवीकठिनभारी॥विविधचित्तवृत्तिखगनिकरसेनोलूककाक
बकगृद्धआमिषअहारी॥अखिलखलनिपुणछलछिद्रनिरखतसदाजीव
जनपथिकमनखेदकारी॥क्रोधकरिमत्तमृगराजकंदर्पमददर्पवृकभालु
अतिउग्रकर्मा॥महिषमत्सरक्रूरलोभसूकररूपफेरुछलदंभमार्जारधर्मा॥
कपटमर्कटविकटव्याघ्रपाखंडमुखदुखदमृगव्रातउत्पातकर्त्ता॥हृदयअवलोकि
यहशोकशरणागतंपाहिमांपाहिभोविश्वकर्त्ता॥प्रबलअहंकारदुर्घटमहीध
रमहामोहगिरिगुहानिबिडांधकारं॥चित्तबेतालमनुजादमनप्रेतगणरोगभो
गवृश्चिकविकारं॥विषयसुखलालसादंशमसकादिखलझिल्लिरूपा

दिसव संपे स्वामी॥तव आक्षिप्त दव विषम मायानाथ अंधमैं मंदव्याला
रिगामी॥घोर अवगाह भव आपगा पापजल पूर दुःप्रेक्ष्य दुस्तर अपार मक्र
रखड्वर्गगो नक्र चक्राकुलाकूल शुभ अशुभ दुखतीव्र धारा॥सकलसंघट
पोचशोचवश सर्वदा दासतुलसी विषमगाहनग्रस्तं॥त्राहि रघुवंशभूषण
कृपा कर कठिन काल विकराल कलित्रास त्रस्तं॥६०॥देव॥नौमिनारायणं
नरंकरुणायनंध्यानपारायणं ज्ञानमूलं॥अखिलसंसार उपकारकारणसदय
हृदयतनपतिरत प्रणतानानुकूलं॥स्याम नवतामरस दाम दुति वपुष छवि कोटि मदनार्क
अगणित प्रकासं॥तरुण रमणीय राजीवलोचन ललितवदन राकेश करनिक
रहासं॥सकल सौंदर्यनिधि विपुल गुणधाम विधि वेद बुध शंभु सेवित अमानं
॥अरुण पद पंकज मकरंद मंदाकिनी मधुप मुनिवृंद कुर्वंति पानं॥श
क्रप्रेरित घोर मार मद भंग कृत क्रोध गत बोध रत ब्रह्मचारी॥मार्कंडेय
मुनिवर्य हित कौतुकी बिनहि कल्पांत प्रभु प्रलयकारी॥पुण्य वन शैल स
रि बद्रिकाश्रम सदासीन पद्मासनं एकरूपं॥सिद्ध योगींद्र वृंदारकानंद प्र
द भद्रदायक दरस अति अनूपं॥मान मन भंग चित्त भंग मद क्रोध लोभादि
पर्वत दुर्ग भुवन भर्त्ता॥द्वेष मत्सर राग प्रबल प्रत्यूह प्रति भूरि निर्दय क्रूर
कर्मकर्त्ता॥विकटतर वक्र क्षुर धार प्रमदा तीव्र दर्प कंदर्प खर खड्ग धारा॥
धीर गंभीर मन पीर कारक तत्र के वराका वयं विगत सारा॥परम दुर्घट पथ खल
असंगत साथ नाथ नहि हाथ वर विरति यष्टी॥दर्शनारत दास त्रसित मा
या पाश त्राहि हरि त्राहि हरि दास कष्टी॥दास तुलसी दीन धर्म संबलहीन अमित अति
खेद मति मोह नाशी॥देहि अवलंब न विलंब अंभोज कर चक्र धर तेज बल सर्मराशी॥
६१॥सकल सुखकंद आनंदवन पुण्यकृत बिंदु माधव द्वंद विपत्ति हारी॥यस्यां
घ्रि पाथोज अज शंभु सनकादि शुक शेष मुनिवृंद अलि निलयकारी॥अमल
मरकत स्याम काम शत कोटि छवि पीत पट तडित इव जलद नीलं॥अरुण श
तपत्र लोचन बिलोकन चारु प्रणत जन सुखद करुणार्द्र शीलं॥कालगजराज
मृगराज दनुजेश वन दहन पावक मोह निसि दिनेशं॥चारु भुज चक्र कौमो द८

कौजलजुदर सरसिजे। पारे यथा हंसं॥ मकरकुंडलतिलकभालंकाभ्र
लिग्रात्स्तूत भृकुटि द्विज अधरवर चारुनासा॥ रुचिरसुकपोलदरग्रीवसुख
सीवहरिइंदुकरकुंदमिवमधुरहासा॥ उरसिवनमालसुविशाल नवमंजरी
भ्राजश्रीवत्सलांछनउदारं॥ परमब्रह्मण्य अतिधन्यगत मन्यु अज अमि
तबलविपुलमहिमाअपारं॥ हारकेयूरकरकनककंकणरत्नजटितमणि
मेखलाकटिप्रदेशं॥ युगलपदनूपुरं मुखर कलहंसवत सुभगसर्वांगसौंदर्य
वेशं॥ सकलसौभाग्यसंयुक्तत्रैलोक्य श्रीदक्षदिसिरुचिरवारीशकन्या॥ व
भे
सतिबिबुधापगा निकटतट सदनवरनयन निरखंतिनरतेतिधन्या॥ अखिलमं
गलभवन निबिडसंशयशमनदमनवृजनाटवीकष्टहर्त्ता॥ विश्वधृतविश्व
हितअजितगोतीत शिवविश्वपालनहरनविश्वकर्त्ता॥ ज्ञानविज्ञानवैरा
ग्यऐश्वर्यनिधिसिद्धिअणिमादिदेभूरिदानं॥ ग्रासतभवव्यालअतित्रासतु
लसीदासबाहि श्रीराम उरगारियानं॥ ६२॥ रागआसावरी॥ इहैपरमफलपरम
बड़ाई॥ नखसिखरुचिरबिंदुमाधवछबिनिरखहिनयनअघाई॥ बिसदकि
शोरपीन सुंदरवपु स्यामसुरुचिअधिकाई॥ नीलकंजबारिद तमालमणि
इन्ह तनतेदुतिपाई॥ मृदुलचरण सुभचिन्ह पदजनख अतिअद्भुतउपमाई॥
अरुणनीलपाथोजप्रसवजनुमणियुतदलसमुदाई॥ जातरूपमणिजटि
तमनोहरनूपुर जन सुखदाई॥ जनुहरउरहरिविविधरूपधरिरहेबरभवन
बनाई॥ कटितटरटतचारुकिंकिणिरवअनुपमबरनिनजाई॥ हेमजलज
कलकलितमध्यजनुमधुकरमुखरसुहाई॥ उरविशालभृगुचरणचारुअ
तिसूचतिकोमलताई॥ कंकणचारुविविधिभूषणविधिरचिनिजकरम
नलाई॥ गजमणिमालबीचभ्राजतकहिजातिनपदकनिकाई॥ जनुउडु
गणमंडलबारिदपरनवग्रहरचीअथाई॥ भुजगभोगभुजदंडकंजदरचक्र
गदाबनिआई॥ शोभासीवग्रीवचिबुकाधरवदनअमितछबिछाई॥ कुलि
शकुंदकुंडमलदामिनिदुतिदसननिदेखिलजाई॥ नासानयनकपोलललित
श्रुतिकुंडलभ्रूमोहिभाई॥ कुंचितकचसिरमुकुटभालपरतिलककहौ

समुझाई। अलप तडित युग रेख इंदु महँ रहि तजि चंचलताई॥ निर्मल
पीत दुकूल अनूपम उपमा हियन समाई॥ बहु मणि युत गिरि नील शि
खर पर कनक बसन रुचि रई॥ दक्ष भाग अनुराग सहित इंदिरा अधि
क ललिताई॥ हेमलता जनु तरुन तमाल निकट नील निचोल उढाई॥ सत
सारदा शेष श्रुति मिलि करि शोभा कहि न सिराई॥ तुलसीदास मति मंद
द्वंद्वरत कहै कौन विधि गाई॥ ६३॥ राग जैतश्री॥ मन इतनो है या तनु को परम
फल॥ सब अंग सुभग बिंदुमाधव छवि तजि सुभाव अवलोक एक पल॥
तरुण अरुण अंभोज चरण मृदु नखद्युति हृदय तिमिर हारी॥ कुलिश के
तु ध्वज जलज रेख बर अंकुश मन गज वश कारी॥ कनक जटित मणि नू
पुर मेखला कटितट रटत मधुर बानी॥ त्रिवली उदर गंभीर नाभि सर जहँ
उपजे विरंचि ज्ञानी॥ उर बनमाल पदिक अति शोभित बिप्र चरण चिन्ह क
रखे॥ स्याम तामरस दाम बरन बपु पीत बसन शोभा बर रखे॥ कर कंकण के
यूर मनोहर देति मोद मुद्रिका न्यारी॥ गदा कंज दर चारु चक्र धर नाग शु
ड सम भुज चारी॥ कंबु ग्रीव छवि सींव चिबुक द्विज अधर अरुण उन्नत ना
सा॥ नव राजीव नयन शशि आनन सेवक सुखद विशद हासा॥ रुचिर क
पोल श्रवण कुंडल सिर मुकुट सुतिलक भाल भ्राजै॥ ललित भृकुटि
सुंदर चितवनि कच निरखि मधुप अवली लाजै॥ रूप शील गुण खानि र
दक्षिण सिंधुसुता रत पद सेवा॥ जाकी कृपा कटाक्ष चहत शिव विधि मुनि
मनुज दनुज देवा॥ तुलसीदास त्रास मिटै तब जब मति इह स्वरूप अटकै॥
नाहिं तौ दीन मलीन हीन सुख कोटि जन्म भ्रमि भ्रमि भटकै॥ ६४॥ राग बसंत॥
बंदौं रघुपति करुणानिधान॥ जाते छूटै भव भेद ज्ञान॥ रघुवंश कुमुद सु
खप्रद निशेश॥ सेवित पद पंकज अज महेश॥ निज भक्ति हृदय पाथोज भृंग॥
लावण्य वपु अगणित अनंग॥ अति प्रबल मोह तम मार्तंड॥ अज्ञान
गहन पावक प्रचंड॥ अभिमान सिंधु कुंभज उदार॥ सुररंजन भंजन भूमि
भार॥ रागादि सर्प पन्नगारि॥ कंदर्प नाग मृगपति मुरारि॥ भव जलधि

पोतचरणारविंद ॥ जानकीरमणीआनंदकंद ॥ हनुमंतप्रेमवापीमराल
निष्कामकामधुकगोदयाल ॥ त्रैलोक्यतिलकगुणगहनराम ॥ कहतु
लसिदासविश्रामधाम ॥ ६५ ॥ रागभैरवी ॥ रामरामरमराम रामरटरामरा
मजपुहो ॥ हा ॥ रामनामनवनेहमेहकोमनहठिहोहुपपीहा ॥ सबसा
धनफूलकूपसरितसरसागरसलिलनिरासा ॥ रामनामरतिस्वाति
सुधाशुभकेसीकरप्रेमपियासा ॥ गरजतरज पाषाणपरषिपविप्रीति
परखिजियजानैं ॥ अधिकअधिकअनुरागउमगिउरपरपरमितपहि
चानै ॥ रामनामगतिरामनाममतिरामनामअनुरागी ॥ ह्वैगयेहैंजेहोहिं
गेतेईगणियततवडभागी ॥ एकअंगमगअगमगवनकरिविलंवुनक्षि
णछलछाहैं ॥ तुलसीहितअपनोअपनीदिशिनिरूपधिनेमनिवाहैं
६६ ॥ रागभैरव ॥ रामजपुरामजपुरामजपुवावरे ॥ घोरभवनीरनिधिना
मनिजनावरे ॥ एकहिसाधनसवरिद्धिसिद्धिसाधरे ॥ ग्रसेकलरोगयोग
संजमसमाधिरे ॥ भलोजोहैपोचजोहैदाहिनोजोवामरे ॥ रामनामहींसों
अंतसवहीकोकामरे ॥ जगनभवाटिकारहीहैफलिफूलरे ॥ धुंआंकै
सधौरहरदेखितूनभूलिरे ॥ रामनामछाडिजोभरोसोकरैओररे ॥ तुल
सीपरोसोत्यागिमागैकूरकौररे ॥ ६७ ॥ रामरामजपिजियसदासा
नुरागरे ॥ कलिनविरागयोगयागतपत्यागरे ॥ रामनामसुमिरणसवविधि
सुखसाजरे ॥ रामनाममहामणिफणिजगजालरे ॥ मणिलिएफणि
जियैव्याकुलविहालरे ॥ रामकोविसारिवोनिषेधसिरताजरे ॥ रामनामका
मतरुदेतफलचारिरे ॥ रामनामप्रेमपरमारथकोसाररे ॥ रामनामतुलसी
कोजीवनअधाररे ॥ ६८ ॥ रामरामरामजी जौलौंतूनजपिहै ॥ सुरसरी
तीरविनुनीरदुखपाइहै ॥ सुरतरुतरतोहिदुखदारिदसताइहै ॥ जागनवा
गनसुखसपनेनसोइहै ॥ जन्मजन्मयुगयुगजगरोइहै ॥ छूटिवेकेयत्नवि
शेषवांध्योजाइगो ॥ ह्वैहैविषभोजनसुधाजोसानिखाइगो ॥ तुलसीतिलो
कतिहूंकालतोसेदीनको ॥ रामनामनामहीकोगतिजैसेजलमीनको

॥६९॥ सुमिरसनेहसौंतूरामनामरायकौ॥संबरनिसंबरीकोसरवाअसा
हायकौ॥भागुहैअभागेहूकोगुणगुणहीनकौ॥गाहकुगरीवकोदया
लदानीदानीदीनकौ॥कुलअकुलीनकौसुन्योहैवेदसारिवैहै॥पागुर
कोहाथपाउअांधरेकोआंरिवहै॥मायबापभूखेकोअधारनिरधारकोसे
तुभवसागरकोहेतुसुखसारकौ॥पतितपावनरामनामसोनदूसरो॥
सुमिरिसभूमिभयौतुलसीसोऊसरो॥७०॥भलोभलीभांतिहैजोमेरे
कहेलागिहै॥मनरामसोंसुभायअनुरागिहै॥रामनामकोप्रभावजान
जूड़ीआगिहै॥सहितसहायकलिकालभीरुभागिहै॥रामरामनाम
सोंबिरागयोगजागिहै॥रामनाममोदकसनेहसुधापागिहै॥पाइपरतो
षतूनद्वारद्वारवागिहै॥कामतरुरामनामजोईमागिहै॥तुलसीदास
स्वारथपरमारथनरवागिहै॥७१॥ऐसेहूसाहिबकीसेवातूहोतचोरुरे॥
आपनीनबूझनकहेकोराउरोरुरे॥मुनिमनअगमसुगमभाइबाप
सों॥कृपासिंधुसहजसरवासनेहीआपुसों॥लोकवेदविदितबडोन
रघुनाथसों॥सबदिनसबदेससबहीकेहाथसों॥स्वामीसरवआसोकेस
नचोरीचारकी॥प्रीतिपहिचानयहरीतिदरबारकीकायनकलेशलेत
मानवातमनकी॥सुमिरसकुचिरुचिजोगवतजनकी॥रीझिबसहोत
खीझदेतनिजधामरे॥फलतसकलफलकामतरुनामरे॥बेचेखो
टेदामिनिमिलैनराखैकामरे॥सोऊतुलसीनिवाज्योऐसोराजाराम
रे॥७२॥मेरोभलोकियोरामआपनीभलाई॥हौंतोसाईद्रोहीपैसेव
कहितसांई॥रामसोंबड़ोहैकौनमोसोमोसोकौनछोटो॥रामसोखरो
हैकौनमोसोकौनखोटो॥लोकहैरामकोगुलामहौंकहावौं॥एतोबड़ोअ
पराधभौनमनपायो॥यामायेचढेतृणतुलसीजोनीचो॥बोरततनवाहि
ताहिजानिआपुसींचो॥७३॥जागजागजीवजड़जोहैजगजामिनी॥
देहनेहगेहजानजैसेधनदामिनी॥ सोवतसपनेईसहैसंसृतसंताप
रे॥बूड़ोमृगवारिखायोजेवरीकोसांपरे॥कहैवेदबुधतौबूझमनमांहिरे

दोषदुखसपनेकेजागेहीपैजांहिरे॥तुलसीजागेतेजाहिंतापतिहुं
तायरे॥७४॥रागबिलास॥जानकीशकीकृपाजगावतीसुजानजी
वजगत्यागमूढतानुरागश्राहरे॥करिबिचारतजिबिकारभजिउदार
रामचंद्रभद्रसिंधुवेदविदतेरे॥मोहमयकुहूनिशाबिशालकाल
बिपुलव्यालसोयोखायोसोश्रनूपरूपस्वप्नजूतेरे॥श्रवप्रभातप्रग
टज्ञानभानुकोप्रकाशवासनासरागमोहद्वेषनिबिडतमटरे।भागे
मदमानचोरभोरजानिजातुधानकामकोधलोभक्षोभनिकरश्रप
डरे॥देखतरघुवरप्रतापबीतेसंतापसापत्रिविधिप्रेमश्रापदूरिही
करे॥श्रवणसुनिगिरागंभीरजागेश्रतिधीरवीरवरविरागतोषसक
लसंतश्रादरे॥तुलसीदासकृपालप्रभुनिरखिजीवजनविहालभ
ज्योभवजालपरममंगलाचरे॥७५॥रागललित॥खोटोखरोरावरो
हौंरावरीसोंझूठक्योंकहौंजानैसबहीकेमनकी॥कर्मवचनहियेकहौं
नकपटकियेऐसीहठजैसीगांठिपानीपरेसनकी॥दूसरोभरोसोनहिपास
नाउपासनाकीबासवबिरंचिसुरनरमुनिगनकी॥स्वारथकेसाथीमेरेहा
थीस्वानलेवादेईकाहूतोनपीररघुवीरदीनजनकी॥सांपसभासावर
लवारभयेदेवदिव्यदुसहसांसतिकीजेश्रागेह्यातनकी॥सांचेपरेपा
वांपानपांचनमेंपणप्रमाणतुलसीचातकश्रासरामस्यामघनकी॥७६
रामकोगुलामनामरामबोलानामराख्योकामइहैनामद्वैहौंकबहूं
कहतुहौं॥रोटीलूगानीकेराखेश्रागेहूकोबेदभाषैभलोह्वैहैतेरोतातेश्रान
दलहतुहौं॥बांध्योहौंकर्मजडगर्वगूढनिगडसुनतदुसहहौंतोसांसति
सहतहौं॥श्रारतिश्रनाथनाथकौशलकृपालपाललीन्होछीनदीनदेखो
दुरितदहतिहौं॥बूझियोजौंहौंकह्योमैंहूंचेरोह्वैहौंरावरोजूमेरोकोऊक
हूंनाहींचरणगहतुहौं॥मीजोगुरुपीठिश्रपनाइगहिबांहबोलिसेव
कसुखदसदाबिरदबहतुहौं॥लोगकहैंपोचसोनसोचनसंकोचमेरेब्याहन
बरेखीजातिपांतिनचहतुहौं॥तुलसीश्रकाजकाजरामहीकेरीझेखीझे

प्रीतिकी प्रतीतिजिनेमनमुदितरहतुहैं॥७७॥ जानकीजीवन जगजीवन जग
गतहितजगदीश रघुनाथराजीवलोचनराम॥ सरदविधुबदन सुखशील
श्रीसदनसहज सुन्दर तनशोभाअगणितकाम॥ जगसुपिता सुमाता
सुगुरुसुहितमीत सबकौदाहिनौदीन बंधुकाहूकौनवाम॥ आरतहर
णअतुलितदानिप्रणतपाल कृपालपतितपावननाम॥ सकलवि
श्ववंदितसकलसुरसेवित आगम निगम कहैंतेरेई गुणग्राम॥ इहैजा
निकैतोतुलसीतिहारोजनभयोन्यारोकैगणिवोजहांगनेगरीबगुलाम॥
॥७८॥ रागटोड़ी॥ देव॥ दीनकौदयालदानिदूसरोनकोई॥ जाहिदीनता
कहौंदीनदेखोंसोई॥ मुनिसुरनरनागअसुरसाहिवतौघनेरे॥ येतौलौ
जौलौंरावरेननेकुनैनफेरे॥ त्रिभुवनतिहुंकालविदितवेदवदतिचा
री॥ आदिमध्यअंतरामसाहिबीतिहारी॥ तोहिमांगिमांगनैंनमांगनौ
कहायो॥ सुनिसुभावशीलसुयशजाचनजनआयो॥ पाहनपशुविट
पविहंगअपनेकरलीन्हे॥ महाराजदसरथकेरंकरावकीन्हे॥ तूगरीब
कोनिवाजहौंगरीबतेरो॥ बारककहियेकृपालतुलसीदासमेरो॥७९॥
देव॥ तूदयालदीनहौंतूदानीहौंभिखारी॥ हौंप्रसिद्धपातकीतूपापपुंज
हारी॥ नाथतूअनाथकौअनाथकौनमोसो॥ मोसमानआरतनहिंआ
रतिहरतोसो॥ ब्रह्मतूहैंजीवतूहैंठाकुरहौंचेरो॥ तातमातगुरुसखातू
सबविधिहितमेरो॥ तोहिमोहिनातेअनेकमानियेजोभावै॥ ज्योंत्यों
तुलसीकृपालचरणशरणपावै॥८०॥ देव॥ औरकाहिमांगियेकोमांगिवो
निवारै॥ अभिमतदातारकौनदुखदरिद्रदारै॥ धर्मधामरामकामको
टिरूपरूरो॥ साहिवसवविधिसुजानदानखङ्गसूरो॥ सुसमयदिनद्वै
निसानसवकेद्वारबाजै॥ कुसमयदसरथकेदानितैंगरीबनिवाजै॥ से
वागुणविनविनहीनदीनतासुनाई॥ जेजेतैंनिहालकियेफूलेफिरतपा
ए॥ तुलसीदासजाचतरुचिजानिदानदीजै॥ रामचंद्रचंद्रतूचकोरमो
हिकीजै॥८१॥ रागभैरव॥ दीनवंधुसुखसिंधुकृपाकरकारुणी

कै रघुराई॥ सुनहु नाथ मन जरत त्रिविधि जर करत फिरत बैराइ॥ क
बहुं योग रत भोग निरत सठ हठ बियोग बस होई॥ कबहुं मोह बस द्रो
ह करत बहु कबहुं दया अति सोई॥ कबहुं दीन मति हीन रंक तर कबहु
भूप अभिमानी॥ कबहुं मूढ़ पंडित बिडंबरत कबहुं धर्म रत ज्ञानी॥
कबहुं देख जग धनमय रिपुमय कबहुं नारमय भासै॥ संसृत संनिपात
दारुण दुख बिनु हरि कृपा न नासै॥ संजम जप तप नेम धर्म ब्रत बहु भेष
ज समुदाई॥ तुलसीदास भवरोग राम पद प्रेम हीन नहिं जाई॥ ८२॥ मो
ह जनित मल लाग बिबिध बिधि कोटिहु यत्न न जाई॥ जन्म जन्म
अभ्यास निरत चित अधिक अधिक लपटाई॥ नयन मलीन परनारि निरखि
मन मलिन बिषय संग लागे॥ हृदय मलीन बासना मान मद जीव सहज
सुख त्यागे॥ परनिंदा सुनि श्रवण मलिन भए बचन दोष पर गाए॥ सब प्रका
र मल भार लाग निज नाथ चरण बिसराए॥ तुलसिदास ब्रत दान ज्ञान तप शुद्धि हे
तु श्रुति गावै॥ राम चरण अनुराग नीर बिनु मल अति नाश न पावै॥ ८३॥ रागजे
नसीक कछु दैन आइ गयो जन सुजाय॥ अति दुर्लभ तनु पाइ कपट तजि भजे
न राम मन बचन काय॥ लरिकाई बीती अचेत चित चंचलता चौगुनी चाय॥
यौवन ज्वर जुवती कुपथ्य करि भयो त्रिदोष भरि मदन बाय॥ मध्य बयस ध
न हेतु गंवाई॥ कृषी बनिज नाना उपाय॥ राम बिमुख सुख लह्यो न सपने
हुं निसि बासर हुंत यौं तिहुं ताय॥ सेये न हिसीनापति सेवक साधु सुमति
भलि भक्ति भाय॥ सुने न पुलकि तनु कहे न मुदित मन किए जे चरित रघुवंसरा
य॥ अब सोचत मणि बिनु भुअंग ज्यों बिकल अंग दले जरा घाय॥ सिर धुनि
धुनि पछतात मीजि कर कोउ न मीत हित दुसह दाय॥ जिन्ह लगि निज प
रलोक बिगार्यो ते लजात होत ठाढ़े ठाय॥ तुलसी अजहुं सुमिरि रघुना
थहि तर्यो गयंद जाके एक नाय॥ ८४॥ तौ तू पछितैहै मन मीजि हाथ॥ भ
यो है सुगम तोको अमर अगम तन समुझि धौं कत खोवत अकाथ॥ सुख सा
धन हरि बिमुख बृथा जैसे श्रम फल घृत हित मथे पाथ॥ यह बिचारि तजि

कुपथ कुसंगति चलिसि पंथ लिमि भले साथ॥ रेखराम सेवक सुनिकीर
तिरहि साम करीनगाथा॥ दरस अनि धुनि वान पाणि प्रभुलखि शुनि
पटकाहि कसे हाथ॥ तुलसिदास परिहरि प्रपंच सब नाव राम पद कमल मा
थ॥ जिन उर पहि जो से अनेक खल अपनायेहै जान कोपराया॥८५॥रा
गधनाश्री॥ मन माधव कोने कुनिहारहि॥ सुनसठ सदा रंक के धन ज्यों
क्षिण क्षिण प्रभुहि समारहि॥ शोभा शील ज्ञान गुण मंदिर सुंदर परम उदा
रहि॥ रंजन संत अखिल अघ गंजन भंजन विषय विकारहि॥ ज्यों बिनु यो
ग यज्ञ व्रत संगम गयो चहहि भवपारहि॥ तौ जिन तुलसिदास निसिवास
र हरिपद कमल बिसारहि॥८६॥ इहै कह्यो श्रुति वेद चहू॥ श्री रघुवी
र चरण चिंतन तजि नाहिन ठौर कहू॥ जाके चरण विरंचि सेइ सिधि पाई
शंकरहू॥ शुकसनकादि मुक्ति विचरत तेउ भजन करत अजहू॥ य
द्यपि परम चपल श्री संतत थिर न रहति कहू॥ हरिपद पंकज पाइ अचल भ
ई कर्म वचन मनहू॥ करुणासिंधु भक्त चिंतामणि शोभा सेवनहू॥ और
सकल सुर असुर ईश सब खाए उरग छहू॥ सुरुचि कह्यो सोइ सत्य ता
त अति परुख वचन जवहू॥ तुलसिदास रघुनाथ विमुख नहि मिटै विपत्ति
कवहू॥८७॥ सुनि मन मूढ सिखावन मेरो॥ हरिपद विमुख लह्यो लहो
सुख सठ यह समुझ सबेरो॥ बिछुरे शशि रवि मन नयनन ते पावत दुख बहु
तेरो॥ भ्रमित श्रमित निशिदिवस गगन महत हा सिरण रहुवडेरो॥ यद्यपि अ
ति पुनीत सुरसरिता तिहुंपुर सुयश घनेरो॥ तजे चरण अजहूं न मिटत नित
बहिवो ताहु केरो॥ छुटे न बिपति भजे बिनु रघुपति श्रुति सिंदेह निवेरो॥ तु
लसिदास सब आस छाड करि होहु राम को चेरो॥८८॥ कबहुं तो मन वि
श्राम न मान्यो॥ निशिदिन भ्रमत बिसार सहज सुख जहां तहां इंद्रि
न तान्यो॥ यदपि बिषय संग सहे दुसह दुख विषम जाल अरुझान्यो॥ तद
पि न तजत मूढ ममता वस जानत हूं नहि जान्यो॥ जन्म अनेक किए नाना वि
धि कर्म कीच चित सान्यो॥ होइ विमल विवेक नीर बिनु वेद पुराण बखान्यो॥

निजहरिनाथपिनाकहरसोहरिषहृदयनहिंआन्यौ॥ तुलसीदासकबतृ
षाजाइसरखनतहिंजनमसिरायौ॥८९॥ मेरोमनहरिहठनतजै॥ निशिदि
ननाथदेउंसिखबहुविधिकरतसुभावनिजै॥ ज्यौंयुवतीअनुभवतप्रसवअ
तिदारुणदुखउपजै॥ ह्वैअनुकूलबिसरिसूलसठपुनिखलपतिहिंभजै॥
लोलुपभ्रमतगृहपशुज्यौंजहांतहांसिरपदत्राणबजै॥ तदपिअधमबिच
रततिहिमारगकबहुंनमूढ़लजै॥ हौहारयौंकरियत्नविविधअतिशय
प्रबलअजै॥ तुलसीदासवसहोइतबैजबप्रेरकप्रभुबरजै॥९०॥ ऐसी
मूढ़तायामनकी॥ परिहरिरामभक्तिसुरसरिताआसकरतओसकनकी
॥धूमसमूहनिरखिचातकज्यौंतृषितजानिमतिघनकी॥ नहिंतहंशीतल
तानवारिपुनिहानिहोतलोचनकी॥ ज्यौंगचकांचबिलोकिसेनजड़छांह
आपनेतनकी॥ टूटतअतिआतुरअहारबसछतिबिसारिआननकी॥ क
हंलौंकहौंकुचालिकृपानिधिजानतहौगतिजनकी॥ तुलसीदासप्रभु
हरहुदुसहदुखकरहुलाजनिजपनकी॥९१॥ नाचतहींनिशिदिवसमर्यो
तबहींतेनभयोहरिथिरजबतेंजिवनामधरयो॥ बहुवासनाबिबिधिकं
चुकभूषणलोभादिभरयो॥ चरअरुअचरगगनजलथलमेंकानर्सगुन
करयो॥ देवदनुजमुनिनागमनुजनहिंजांचतकोउउबरयो॥ मेरोदुसह
दरिद्रदोषदुखकाहूतौनहरयो॥ थकेनयनपदपाणिसुमतिबलसंग
सकलबिछुरयो॥ अबरघुनाथशरणआयोजनभवभयबिकलडरयो॥
जेहिगुणतेंबसहोहुरीझिप्रभुसोमोहिंसबबिसरयो॥ तुलसीदासनि
जभवनद्वारप्रभुदीजैरहनपरयो॥९२॥ माधोजूमोसममंदनकोऊ॥ ज
द्यपिमीनपतंगहीनमतिमोहिनपूजैंओऊ॥ रुचिरस्वरूपअहारवश्यउन्ह
पावकलोहनजान्यौं॥ देखतबिपतिबिषयनतजतहौंतातेंअधिकअया
न्यौं॥ महामोहसरितापारमहंसंततफिरतबह्यौ॥ श्रीहरिचरणक
मलनौकातजिफिरफिरफेनगह्यौ॥ अस्थिपुरातनछुधितश्वानअति
ज्यौंभरिमुखपकरयौ॥ निजतालूगतरुधिरपानकरिमनसंतोषधरयौ

परमकठिनभवव्यालग्रसितहौंत्रसितभयोअतिभारी॥चाहतअभ
यभेकशरणागतखगपतिनाथविसारी॥जलचरबृंदजालअंतरगतहोत
सिमिटिएकपासा॥एकहिएककखातलालचबसनहिंदेखतनिजनास
मेरेअघसारदअनेकयुगगणतपारनहिंपावै॥तुलसीदासपतितपावनप्रभुय
हभरोसजियआवै॥९३॥कृपासिंधोकहाविसारीराम॥जेहिकरुणासु
नश्रवणदीनदुखधावतहौंनिजधाम॥नागराजनिजवलविचारिहियहा
रिचरणचितदीन्ह॥आरतगिरासुनतखगपतितजिचलतविलंबन
कीन्ह॥दितिसुतत्रासत्रसितनिशिदिनअतिप्रह्लादप्रतिज्ञाराखी॥
अतुलितबलमृगराजमनुजतनुदनुजहत्योश्रुतिसाखी॥भूपसदसि
सबनृपविलोकिप्रभुराखुकह्योनरनारी॥बसनपूरिअरिदर्पदूरिकरिभू
रिकृपादनुजारी॥एकएकरिपुत्रासितजनतुमराखेरघुवीर॥अबमोहिंदे
तदुसहदुखबहुरिपुकसनहरहुभवपीर॥लोभग्राहदनुजेशक्रोधकुरुरा
जबंधुखलमार॥तुलसीदासप्रभुयहदारुणदुखभंजहुरामउदार॥९४॥
काहेतेंहरिअबमोहिबिसार्यो॥जानतनिजमहिमामेरेअघतदपिननाथ
संभार्यौ॥पतितपुनीतदीनहितअशरणशरणकहतश्रुतिचार्यौ॥हौं
नहिंसबनअधमदीनाकैधौंबेदनमृषापुकार्यौ॥खगगनिकागजव्याध
पांतिजहांतहांहौंहूंबैठार्यौ॥अबकेहिलाजकृपानिधानपरसतपनवा
रोफार्यौ॥जौंकलिकालप्रबलअतिहोतोतुवनिदेशतेंन्यार्यौ॥तौह
रिरोषभरोसदोषगुणतेहिभजतेतजगार्यौं॥मसकविरंचिविरंचिमस
कसमकरहुप्रभाउतुम्हार्यौ॥यहसामर्थ्यअछतमोहित्यागहुनाथत
हांकछुचार्यौ॥नाहिंननरकपरतमोकहंडरयद्यपिहौंअतिहार्यौ॥यह
बडित्रासदासतुलसीप्रभुनामहुपापनजार्यौ॥९५॥तऊनमेरेअघअवगुण
गनिहैं॥जोजमराजकाजसबपरिहरियहैख्यालउरआनिहैं॥चलिहैंछूटि
पुंजपापनिकेअसमंजसजियजानिहैं॥देखखलनअधिकारप्रभूमेरीभू
रिभलाईमानिहैं॥हंसकरिहैंपरतीतभक्तिकीभक्तसिरोमणिमनैहैंज्यौं

त्यौ तुलसि कौ शालयति अपनायहि परि वनिहैं ॥९६॥ जौपै जिय धरिहै
अवगुण जनके ॥ तो क्यों कटत सुकृत नखतें मोपै विपुल वृंद अघवनके
कहिहैं कौन कलुख मेरे कृत कर्म वचन अरु मनके ॥ हारहि अमित शेष
सारद श्रुति गणनारा ए कण कपवनके ॥ जो चित चढ़ै नाम महिमा निज गु
णगण पावन पनके ॥ तो तुलसिहि तारिहौ विप्र ज्यों दसन तोरि यमगनके ॥९७॥
जौपै हरि जनके अवगुण गहते ॥ तौ सुरपति कुरुराज वालिसों कत हठि
वैरि विसहते ॥ जो जप यज्ञ योग व्रत वरजित केवल प्रेम न चहते ॥ तौ कित
सुर मुनिवर विहाय व्रज गोप गेह वसि रहते ॥ जो जहं तहं पन राखि भक्ति
कौ भजन प्रभाव न कहते ॥ तो कलि कर्म मारग जउ हम केहि भांति निव
हते ॥ जौ सुतहित लिए नाम अजामिल के अघ अमित न दहते ॥ तो यम
भट सासति हर हम से वृषभ खोजि खोजि न हते ॥ जो जग विदित पतित
पावन अति वांकुर विरद न वहते ॥ तौ वहुकल्प कुटिल तुलसी से सपने हु सुग
ति न लहते ॥९८॥ ऐसे हरि करत दास पर प्रीति ॥ निज प्रभुता विसारि जनके
वस होत सदा यह रीति ॥ जेहि वांधे सुर असुर नाग नर प्रवल कर्म की डोरी ॥
सोः अवछिन्न व्रह्म यसुमति वांध्यो हठि सकत न छोरी ॥ जाकी माया व
सि विरंचि शिव नाचत पार न पायो ॥ करतल ताल वजाइ ग्वाल युवति
न्ह सोई नाच नचायो ॥ विश्वंभर श्रीपति त्रिभुवनपति वेद विदित यह लीख ॥
वलि सों कछु न चली प्रभुता वरु है द्विज मांगी भीख ॥ जाके नाम लिये छू
टत भव जन्म मरण दुखभार ॥ अंवरीष हित लागी कृपानिधि सोइ जनमे दस
वार ॥ योग विराग ध्यान जप तप करि जेहि खोजत मुनि ज्ञानी ॥ वानर भा
लु चपल पशु पामर नाथ तहां रति मानी ॥ लोकपाल यम काल पवन रवि
शशि सव आज्ञाकारी ॥ तुलसीदास प्रभु उग्रसेन के द्वार वेत कर धारी ॥९९॥
विरद गरीवनिवाज राम को ॥ गावत वेद पुराण शंभु शुक प्रगट प्रभाव नाम
को ॥ ध्रुव प्रह्लाद विभीषण कपि यदुपति पंडव सुदाम को ॥ लोक सु
यश परलोक सुगति इनमें को है राम काम को ॥ गणिका कोल किरात

आदि कवि इन हूते अधिक बाम को॥ बाजिमेध कब कियो अजामि
लगज गायक बस्याम को॥ छलीमलीन हीनसबही अंगतुलसोसो छि
नछाम को॥ नाम नरेशप्रताप प्रबल जगयुगयुग चलत चाम को॥
१००॥ सुनसीतापतिशीलसुभाऊ॥ मोदन मन तन पुलक नयन जलसो
नरखेह खरखाऊ॥ शिशुपन तें पितुमात बंधु गुरु सेवक सचिव सखाऊ॥
कहत राम विधुबदन रिसौंहैं सपनेउ लख्यो न काऊ॥ खेलत संग अनुज बाल
कनित जुगवत अनट अपाऊ॥ जीत हारि चुचुकारि दुलारत देत दिवावत
दाऊ॥ शिला शाप संताप विगत भई परसत पावन पाऊं दई सुगति सो न हे
रि हरिषि हिय चरण छुए को पछिताऊ॥ भवधनु भंजि निदरि भूपति भृगु
नाथ पाइ गए ताऊ॥ छमि अपराध छमाइ पाय परि इतौ न अनत समाऊ
कह्यौ राजु बन दियो नारि बस गरि गलानि गो राऊ॥ ता कुमातु कौ मन जुग
वत ज्यौं निज तन मरम कुघाऊ॥ कपि सेवा बस भए कनौडे कह्यो पवनसु
त आऊ॥ देवे कौ न कछू रिनियां हौं धनिक तू पत्र लिखाऊ॥ अपनाए सुग्री
व विभीषण तिन न तज्यो छल छाऊ॥ भरत सभा सनमानि सराहत
होत न हृदय अघाऊ॥ निज करुणा करतूति भक्त पर चपल चलत चर
चाऊ॥ सुकृत प्रणाम प्रणत यश वर्णत सुनत कहत फिरि गाऊ॥ समुझि स
मुझि गुणग्राम राम के उर अनुराग बढ़ाऊ॥ तुलसिदास अनयास रामपद
पैहौ प्रेम पसाऊ॥१०१॥ जाउँ कहाँ तजि चरण तुम्हारे काको नाम पतितपा
वन जग केहि अति दीन पियारे॥ कौन देव बराइ बिरद हित हठि हठि अध
म उधारे खग मृग व्याध पषाण विटप जड़ यवन कवन सुर तारे॥ देव दनुज मु
नि नाग मनुज सब माया विवस विचारे॥ तिनके हाथ दास तुलसी प्रभु कहा
अपनपौ हारे॥१०२॥ हरि तुम बहुत अनुग्रह कीन्हों॥ साधन धाम विबुध
दुर्लभ तनु मोहि कृपा करि दीन्हों॥ कोटिहुँ मुख कहि जात न प्रभु के एक
एक उपकार॥ तदपि नाथ कछु और मांगिहौं दीजे परम उदार॥ विषय बारि
मन मीन भिन्न नहिं होत कबहुँ पल एक॥ ताते सहिय विपति अति दारुण

जन्मत योनि अनेक ॥ कृपाडोरि बनसी पद अंकुश परम प्रेम मृदु चारो ॥ एहि
विधि वेधि हरहु मेरो दुख कौतुक राम तुम्हारो ॥ है श्रुति विदित उपाय स
कल सुर केहि केहि दीन निहोरयो ॥ तुलसीदास यहि जीव मोह रजु जोइ बां
ध्यो सोई छोरयो ॥ १०३ ॥ इहै बिनती रघुबीर गुसांई ॥ और आस विश्वास भरो
सो हरि जियकी जड़ताई ॥ चहौं न सुगति सुमति संपति कछु रिधि सिधि
बिपुल बड़ाई ॥ हेतु रहित अनुराग रामपद बढ़ै अनुदिन अधिकाई ॥ कुटिल क
र्म लै जाय मोहि जहां जहां अपनी बरिआई ॥ तहं तहं जिनि छिन छांड्यो कम
ठ एक मठ अंडकी नाई ॥ है जगमें जहां लगि या तनकी प्रीति प्रतीति सगाई ॥ ते स
ब तुलसीदास प्रभुहीसों होहु सिमिटि एक ठाई ॥ १०४ ॥ जानकीजीवनकी बलि
जैहों ॥ चित कहै राम सिय पद परिहरि अब न कहूं चलि जैहों ॥ उपजी उर प्री
तीन सपनेहु सुख प्रभु पद बिमुख न पैहों ॥ मन समेत या तनके बासिन्ह इहै
सिखवन देहों ॥ श्रवणनि और कथा नहि सुनिहों रसना और न गैहों ॥ रोकि
हों नैन बिलोकत औरहि सीस ईश ही नैहों ॥ नातो नेह नाथसों करि सब नाते
नेह निबैहैं हों ॥ यह छर भार ताहि तुलसी जग जाको दास कहैहों ॥ १०५ ॥ अब
लौं नसानी अब न नसैहों ॥ रामकृपा भवनिशा सिरानी जागे फिर न डसैहों ॥ पा
यो नाम चारु चिंतामणि उर करतें न खसैहैं ॥ स्यामरूप सुचि रुचि कसौटी चित
कंचनहि कसैहों ॥ पर अबस जान हंस्यो निज इंद्रिन्ह इन बन है न हसैहों ॥ मन
मधुकर पण करि तुलसी रघुपति पदकमल बसैहों ॥ १०६ ॥ राग रामकली ॥ म
राज रामादर्यो धन्य सोई ॥ गरुअ गुणरासि सरबज्ञ सुकृती सुघर शील नि
धि साधु तेहि सम न कोई ॥ उपल केवट कीस भालु निशिचर सबरि गीध
सम दम दया दान हीने ॥ नाम लिये राम किये परम पावन सकल नरतरत तिन
के गुणगान कीन्हे ॥ व्याधि अपराधि की साध राखी कौन पिंगला कौन मति
भक्ति भई ॥ कौन धौं सोमजाजी अजामिल अधम कौन गजराज धौं बाजपेयी ॥
पांडुसुत गोपिका विदुर कुबरि सबरि शोध किये शुद्धता लेस कैसो ॥ प्रेम लखि
कृष्ण किए आपने तिन कौं अब सुयश संसार हरिहर को जैसो ॥ का लख

लभिल्ल यवनादि पररामकहिनीचहै उंचपदकेनयायो॥दीनदुखदवन
आरवणाकरुणाभ नपतितपावनविरदवेदगायो॥मदमतिकुटिलखल
तिलकतुलसीसरस भौननिहुलोकतिहुकालकोऊ॥नामकीकानितयहिता
तिजन आपनेयसत कलिव्यालरखवसरासोऊ॥१०७॥रागविलावल॥है
नीकोमेरोदेवताकै शलपतिराम॥सुभगसरोरुहलोचनसुठिसदरस्याम
सियभमनशोभितस दा छविअमित अनंगा॥भुजविसालसरधनुधरेकटि
चारुनिषंग॥बलिप गाचाहतनहिंचाहैएकप्रीति॥सुमिरतहीमानैभले
पावनसवरीति॥देह सकलसुखदुखदहैआरतजनवंधु॥गुणगहिअघ
अवगुणहरैअसक रुणासिंधु॥देसकालपूरणसदावरदेवपुरान॥सबकोप्र
भुसबमेबसेसबकी गतिजानी॥कोकरिकोटिककामनापूजैवहुदेव॥तुल
सीदासतेहिसेइयेसंकरजेहिंसेव॥१०८॥वीरमहाअवराधिएसाधेसुधि
होइ॥सकलकाम पूरणकरै जानेसबकोइ॥वेगिविलंवनकीजियेलीजैउप
देश॥महामंत्रजो गसोई जोजपतिमहेश॥प्रेमवारितरपणभलोघृत
सहजसनेहु॥संशय समिधअग्निक्षमाममतावलिदेहु॥अघउचाटिमनवसक
रैमारेमदमार॥आ कर्षेसुखसंपदासंतोषविचार॥जेहिएहिभातिभजनकि
योमिलेरघुपति ताहिं॥तुलसीदासप्रभुपथचढ्योजोलेहुनिवाहि॥१०९॥
भयहारी॥यहक लिकालजनितमलमतिमंदमलिनमन॥तेहिपरप्रभु
हिंकारिसम्हार तेहिभांतिजियेजन॥सबप्रकारसमरथप्रभौमेंसबविधि
हीन॥यहजियज नोद्रवीनहोमैकरमविहीन॥भ्रमतिअनेकयोनिरघुप
तिआननमोर॥दुखसुखसहोंरहोंसदाशरणागततोर॥तोसमदेवनको
उकृपालसमुझो मनमाहीं॥तुलसीदासहरितोरिदियेसाधननाहीं॥११०॥
कहूंकोल्किाहि ।कृपानिधिभयजनितविपतिअति॥इंद्रियसकलविक
लसदानिजनिज सुभाउरति॥जेसुखसंपतिस्वर्गनर्कसंततसंगलगी॥हरि
परिहरिसोइयत्न करितमनमोरअभागी॥मैंअतिदीनदयालदेवसुनमनअ
नुसनकरउकरहु ।हरदुखशमनमुरारि॥त्रिविधितापसंदेहशोकसंशय=

रागै।।जौंनइवरहुरघुवीरधीरकाहिदुखलागे यद्यपिमैंअपराधभवनदु
खशमनमुरारे॥तुलसिदास कहुआसइहैविहुमतितउधारे१११ केसव
कहिनजाइका कहिये।।देखततवरचनाविचित्रहरिसमुझि मनहिमनर
हिये।।सून्यभींतिपरचित्रंरंगनहिविनकरलिखाचितेरे।।धोयेमिटैनमरै
इभींतदुखपाइयएहतनहेरे।।रविकरनीरवसैअतिदारुणमकरूपते
हिमाहीं।।वदनहीनसोंग्रसेचराचरपानकरनजेजाहीं।।कोउकहैसत्य
झूठकहकोऊ युगलप्रवलकरमानें।।तुलसिदासपरिहरैतीनभ्रमसों
आपनपहिचानें॥१२॥केशवकारणकौनगुसांई।।जेहिंअपराधअस
धुजानमोहितजेअजकीनाई।।परमपुनीतसंतकोमलचितजिन्हुहितुम
हिवनिआई।।तौकततविप्रव्याधिगजगानिकाहिन्नारयोकछुरहीसगाई
कालकर्मगतिअगतिजीवकेसवहरिहाथतुम्हारे।।सोइकछुकारहुमम
तायेंफिरहुनतुम्हहिविसारे।।जोतुम्ह तजहुभजोनआनप्रभुयहप्रमाणम
नमेरैं।।मनवचकर्मनरकसुरपुरजहंतहंरघुवीरनिहोरैं।।जद्यपिनथउचि
तनहोतअसप्रभुसोंकरोंढिठाई।।तुलसिदाससीदतनिशिदिनदेखत
तुम्हारीनिठुराई।।१३।।माधवअवनद्रवहुकेहिलेखेप्रणतपालप्र
णमोरप्रणजिअउकमलपदहेरेवे।।जवलगिमैंनदीनदयालतैंमैनदास
तैंस्वामी।।तवलगिजोदुखसहेउंकहेउंनहियद्यपिअंतरजामी।।तैंउदार
मैंकृपणपतिततमैंतैंपुनीतश्रुतिगावै।।वहुतनातरघुनाथतोहिमोहि
अवनतजेवनिआवै।।तैंजनकजननिगुरुवंधुसहृदयपतिसवप्रकारहित
कारी।।द्वैतरूपतमकूपपरौंनहिंअसकछुयत्नविचारी।।सुनुअदभ्रकरु
णावारिजलोचनमोचनभयभारी।।तुलसिदासप्रभुतवप्रकाशविनसं
शयटरनटारी।।१४ माधवमोसमानजगमाहीं।।सवविधिहीनजो
दीनमलिनअतिलीनविषयकोउनाहीं।।तुमसमहेतुरहितकृपाल
आरतहितईशनत्यागी।।मैंदुखशोकविकलकृपालकाहिकारणद
यानलागी।।नाहिनगुणअवगुणतुम्हारेअपराधमोरमैंनेमाना।।

ज्ञानभवनतनदियेहु नाथ सोउ पाय न मैं प्रभु जाना॥ वेरम करील स्त्रि
षंडि वसंतहि दूषण मृषा लगावै॥ साररहित हतभाग्य सुरभि पल्ल
व सो कहहु किमि पावै॥ सब प्रकार मैं कठिन मृदुल हरि दृढ विचार
जिय मोरे॥ तुलसिदास प्रभु मोहशृंखला छुटिहै तुम्हरे छोरे ११५ माध
व मोह पास क्यौं टूटै॥ बाहिर कोटि उपाय करिय अभ्यंतर ग्रंथि न छूटै॥
घृतपूरण कराह अंतरगत शशिप्रतिबिंब दिखावै॥ ईंधन अनल लगा
इ कल्पशत औटत नाश न पावै॥ तरुकोटर महं बस विहंग तरु काटे मरै
न जैसे॥ साधन करिय विचारहीन मन शुद्ध होय नहिं तैसे॥ अंतर म
लिन विषय मन अति तन पावन करिय पखावै॥ मरइ न उरग अनेक जत
न बल्मीक विविधि विधि मारै॥ तुलसिदास हरि गुरु करुणा विन
विमल विवेक न होई॥ विन विवेक संसार घोरनिधि पार न पावै कोई
११६॥ माधव असि तुम्हारि यह माया॥ करि उपाय पचि मरिय तरिय न
हिं जब लगि करहु न दाया॥ सुनिय सुनि। समुझिय समुझाइय दसा हृदय
नहिं आवै॥ ब्रह्मपियूष मधुर शीतल ज्यौं पै मन सो रस पावै॥ तौ कत
मृगजलरूप विषै कारण निशिवासर धावै॥ जिहके भवन विमल चिं
तामणि सो कत कांच बटोरै॥ सपने परवस परयो जागि देखत केहि
जाइ निहोरै॥ ज्ञान भक्ति साधन अनेक सब सत्य झूठ कछु नाहीं॥ तुलसिदास
हरि कृपा मिटै भ्रम यह भरोस मन माहीं॥ ११७॥ हे हरि कवन दोष तोहि दी
जै॥ जेहि उपाय सपनेहुं दुर्लभ गति सोइ निशिवासर कीजै॥ जानत अर्थ
अनर्थरूप तमकूप परब यहि लागे॥ तदपि न तजत श्वान अज खर ज्यों फिर
त विषय अनुरागे॥ भूतद्रोह कृत मोहवश्य हित आपन मैं न विचारा॥
मद मत्सर अभिमान ज्ञानरिपु इन महं रहनि अपारा॥ वेद पुराण सुन
त समुझ रघुनाथ सकल जगव्यापी॥ भेदत नहिं श्रीखंड वेणु इव सार
हीन मन पापी॥ मैं अपराधसिंधु करुणाकर जानत अंतरजामी॥ तुलसिदा
स भवव्याल ग्रसित तव शरण उरगरिपुगामी॥ ११८॥ हे हरि कवन यतन सुख

मानहु॥ ज्यौं जग दसन तथा मम करनी सब प्रकार तुम जानहु॥ जो क
छु कहिय करिय भवसागर तरिय बच्छ पद जैसे॥ रहनि निआन विधि
करिय आन हरि पद सुख पाइये कैसे॥ देखत चारु मयूर वचन शुभ बोल
सुधा इव सानी॥ सविष उरग आहार निठुर अस यह करनी वह वानी॥ अखि
ल जीव वत्सल निर्मल चरण कमल अनुरागी॥ ते तव प्रिय रघुवीर धीर म
ति अतिशय निज पर त्यागी॥ यद्यपि मम गुण गुण अपार संसार योग रघु
राया॥ तुलसीदास निज गुण विचारि करुणानिधान करु दाया॥ ११८॥ हे
हरि कवन यत्न भ्रम भागै॥ देखत सुनत विचारत यह मन निज सुभाउ न
हि त्यागै॥ भक्ति ज्ञान वैराग्य सकल साधन यहि लागि उपाई॥ कोउ भल
कहउ देउ कछु असि वासना हृदयौं न जाई॥ जिहि निशि सकल जीव सू
तहि तव कृपा पात्र जन जागै॥ निज करनी विपरीत देखि मोहि समुझि महा
भय लागै॥ जद्यपि भग्न मनोरथ विधि वस सुख इच्छत दुख पावै॥ चित्रकार
कर हीन यथा स्वारथ विन चित्र बनावै॥ हृषीकेश सुनि नाउं जाउं बलि अति भ
रोस जिय मोरे॥ तुलसीदास इंद्रियदुषि संभव दुख हरे वनिहि प्रभु तोरे॥ ११९॥ हे
हरि कस न हरहु भ्रम भारी॥ यद्यपि मृषा सत्य भासै जब लगि नहिं कृपा
तुम्हारी॥ अर्थ अविद्यमान जानिय संसृति नहिं जाइ गुसांई॥ विन बांधे
निज हठ सठ परबस परयो कीर की नांई॥ सुपने व्याधि विविध बाधा जनु
मृत्यु उपस्थित आई॥ वैद्य अनेक उपाइ करहिं जागे बिनु पीर न जाई॥ श्रुति
गुरु साधु स्मृति संमत यह दृश्य सदा दुखकारी॥ तेहि बिन तजे भजे बिनु
रघुपति बिपति सकै को टारी॥ बहु उपाइ संसार तरन कहं बिमल गिरा श्रु
ति गावै॥ तुलसीदास मैं मोर गये बिनु जिय सुख कबहुं न पावै॥ १२०॥ हरि यह भ्र
म की अधिकाई॥ देखत सुनत कहत समुझत संशय संदेह न जाई॥ जौ जग मृ
षा ताप त्रय अनुभव होइ कहहु केहि लेखे॥ कहि न जाइ मृगवारि सत्य भ्रम
ते दुख होइ बिसेखे॥ सुभग शयन सोवत सुपने वारिधि बूडत भय लागै॥ को
टिहु नाव न पार पाव सो जब लगि आप न जागै॥ अनविचार रमणीय सदा सं

सारभयंकरभारी॥ सम संतोष दया विवेक तें व्यवहार सुखकारी॥ तुलसी
दास सब विधि प्रपंच जग यदपि झूठि श्रुति गावै॥ रघुपति भक्ति संत संगति
बिन को भव त्रास नसावै॥१२२॥ मैं हरि साधन करइ न जानी॥ जस आमय भे
षज न कीन्ह तस सो दोषक हा दिरमानी॥ सपने नृप कहँ घटै बिप्रबध वि
कल फिरै अघ लागे॥ बाजिमेध सत कोटि करै नहिं सुद्ध होइ बिन जागे॥
स्रग महँ सर्प विपुल भयदायक प्रगट होइ अविचारे॥ बहु आयुध धरि
बल अनेक करि हारहिं मरइ न मारे॥ निज भ्रम तें रविकर संभव सागर अ
ति भय उपजावै॥ अवगाहत बोहित नौका चढ़ि कबहूँ पार न पावै॥ तुल
सीदास जग आपु सहित जब लगि निरमूल न जाई॥ तब लगि जौ कोटि उ
पाय करि मरिय तरिय नहिं भाई॥१२३॥ अस कछु समुझि परै रघुराया॥
बिनु तव कृपा दयाल दास हित मोह न छूटै माया॥ वाक्य ज्ञान अत्यंत नि
पुन भव पार न पावै कोई॥ निशि गृह मध्य दीप की बातन्ह तम निवृत्ति नहिं होई॥
जैसें कोउ एक दीन दुखित अति असन हीन दुख पावै॥ चित्र कल्पतरु का
मधेनु गृह लिखे न बिपति नसावै॥ षटरस बहु प्रकार भोजन कोउ दिन अ
रु रैन बखानै॥ बिन बोले संतोष जनित सुख खाइ सोई पै जानै॥ जब लगि
नहिं निज हृदि प्रकास अरु विषय आस मन माहीं॥ तुलसिदास तब लगि
जग योनि भ्रमत सपनेहुँ सुख नाहीं॥१२४॥ जो निज मन परिहरै विकारा॥
तौ कत द्वैत जनित संसृति दुख संशय शोक अपारा॥ शत्रु मित्र मध्यस्थ ती
नि ए मन कीन्हे बरिआई॥ त्यागन गहन उपेक्षनीय अहि हाटक तृण की ना
ई॥ असन बसन पसु बस्तु विविध विधि सब मणि महँ रह जैसें॥ स्वर्ग नरक
चर अचर लोक बहु बसत मध्य मन तैसें॥ विटप मध्य पुत्रिका सूत्र महँ कंचु
कि बिनहिं बनाये॥ मन महँ तथा लीन नाना तन प्रगटत अवसर पाये॥ रघु
पति भक्ति वारि छालित चित बिनु प्रयास ही सूझै॥ तुलसीदास कहै चिद्बि
लास जग बूझत बूझत बूझै॥१२५॥ मैं जानी विपति कहउँ केहि भारी॥ श्रीरघुबीर धी
र हितकारी॥ मम हृदय भवन प्रभु तोरा॥ तहँ बसे आइ बहु चोरा॥ अतिशय कठो

नकरहिबरजोरा॥मानहिनाहोंविनयनिहोरा॥नममोहलोभअहंका
र॥मदक्रोधबोधरिपुमारा॥अतिकरहिउपद्रवनाथा॥मर्दहिमोहिजा
निअनाथा॥मैंएकअमितबटपारा॥कोउसुनैनमोरपुकारा॥भागेहुनहि
नाथउवारा॥रघुनायककरहुसंभारा॥कहतुलसिदाससुनिरामा॥लूटहिंतस्कर स
तवधामा॥चिंतायहमोहिअपारा॥अपयशनहिंहोइतुम्हारा॥१२६॥राम
नमेरेमानहिसिखमेरी॥जोनिजभक्तिचहैहरिकेरी॥उरआनहिप्रभुकृ
तहितजेते॥सेवहितेजेअपनपौचेते॥दुखसुखअरुअपमानबड़ाई॥सबसम
लेखहिविपतिबिहाई॥सुनसठकालग्रसितयहदेही॥जनितेहिलागिविदूष
हिकेही॥तुलसिदासबिनुअसमतिआए॥मिलहिनरामकपटलयलाए॥१२७॥मैं
जानीहरिपदरतिनाहीं॥सपनेहुनहिंविरागमनमाहीं॥जेरघुवीरचरणअनुरागे॥ति
नसबभोगरोगसमत्यागे॥कामभुअंगडसतजबजाही॥विषयनिंबकटुलगतनता
ही॥असमंजसअसहृदयविचारी॥बढ़तसोचनितनूतनभारी॥जबकबरामकृ
पादुखजाई॥तुलसिदासनहिंआनउपाई॥१२८॥सुमिरसनेहसहितसीताप
तिरामचरणतजिनाहिनअनगति॥जपतपतीरथयोगसमाधी॥कलिमतिवि
कलनकछुनिरुपाधी॥करतहुसुकृतनपापसिराहीं॥रक्तबीजसमबाढ़तजाहीं
हरणएकअघअसुरजालिका॥तुलसिदासप्रभुकृपाकालिका॥१२९॥रुचि
रसनातूरामरामरटतसुमिरतिसुभसुकृतबढ़तअघअमंगलघटजावि
नुश्रमकलिकलुषजालकटुकरालकरजरिनकेके उदैजैसेंतिमिरतोम
फलजोगयागजपविरागतपसुतीर्थअटतबांधिवेकोभवगयंदरेणुकीरजु
रतपरिहरिसुरमणिसुनामगुंजालखिलरतलालचलघुनेरोनासितुलसी
जोटरन॥१३०॥रामरामरामरामरामराम जपतमंगलमुदउदितहोतकलिमलछल
छलतवहकेलैहेफलरसालबबूरबीजवयतहारहिंजनजन्मजाइगो॥लमूलप
तिकालकर्मगुणसुभाएसबकेसीसतपतरामनाममहिमाकीचरचाचलेचपत
साधनविनुसिद्धिसकलविकललोगलपतकलियुगवरवणिजविपुलनामनगरस
पतनामसोंप्रतीतिहरयसुथिरथपत पावनकिएरावणरिपुतुलसीहूसेअपत

३१॥पावनप्रेमरामचरणकमलजन्मलाभपरमेरामनामफलमेंहोतसुलभ
सकलधर्म॥योगमखविवेकविरतिवेदविदितकर्मकरिवेकहुकठिनकठोरसु
नतधरननमेंतुलसीसुनिजानिवूझिभूलहिंजिनिभर्मनेहिप्रभुकोतूंहो
हिसवहिंसौंसम॥३२॥रामसेप्रीतमकीप्रीतिरहितजीवजायजियतजेहिसुखसु
खमानिलेतसुखसोसमझियतजहंतहंजेहियोनिजन्ममहिपातालवि
यततहंतहंविषयसुखहिंचहतलहतनियतकाकविमोहलरयोफस्योगगन
मगनसियततुलसिप्रभुसुयशगाइकोनसुधापियत॥३३॥तोसोंहोंफिरिफि
रिहितप्रियपुनीतसत्यवचनकहतसुनिमनगुनिसमुझिक्योंनसुगमसुमगगहतछोडि
बेरबेरबेरबेरजगजोतजहारहतअपनेअपनेकोभलोकहुसोकोजोनचहतवि
धिलगिलघुकीटअवधिसुखसुखीदुखदहतपसुलोंपसुपालईशबांधतछोरत
नहतविकमृदनिहारभारसिरकोकांधजोंवहतयोंहीजियजानिमानिसठतूसास
तिसहतपायेकोघृतविचारिहरिनवारिमहततुलसीतकुताहिशरणजातेसबल
हत॥३४॥ताहिंहोंबारबारदेवद्वारपरिपुकारकरतआरतिनतठीनतोकहैसुप्रभुसंक
टहरनलोकपालशोकविकलरावणडरडरतकासुनिसकुचेनकृपालनर
शरीरधरतकौशिकमुनितियजनकशोकअनलजरत।साधनकेहिशीतलभ
एसोनसमुझिपरतकेवटखगशबरीसहजचरणकमलनरतसन्मुखते
हिहोतनाथकुतरुसुफरफरतबंधुबैरकपिविभीषणगरुगलानिगरतसेवक
भयेपौनपूतसाहिबअनुहरततोकोलियेनामरामसबकोसुढरढरत॥जोनवि
नुरामरीतिपचिपचिजगमरतपरिहरिछलुशरणगएतुलसीहूसेतरत॥३५॥
रागसुहोविलावल॥रामसनेहीसोंतैंनसनेहकियोअगमजोअमरनिहूंसोतनु
तोहिदियो॥छंद॥दियोसुकुलजन्मशरीरसुंदरहेतुजोफलचारको॥जोपा
इपंडितपरमपदपावतपुरारिमुरारिको॥यहभरतखंडसमीपसुरसरिथलभ
लोसंगतिभली॥तेरीकुमतिकायरकलपवल्लीचहतविषफलफली॥अजहूं
समझिचितदेसुनिपरमारथ॥हितहितसोंजगहूंजाहितेंस्वारथ॥छंद॥स्वारथहि
प्रियस्वारथसोकातेकोनवेदवखानई॥देखखलअहिखेलपरिहरिसोप्रभुहिपहि

चानदं पितुमातु गुरु स्वामी अपनपौतियतनयसेवकसखाप्रियलगतजा
केप्रेमसोंबिनुहेतुहिततनहि तेस्चखा ॥ दूरिनसोहितूहेरहियेहीहै छलहि
छाडिसुमिरे छोहकियेहीहै ॥ कियेछोहछायाकमलकरकीभक्तपरभजतही
भजैजगदीशजीवन जीवकोजोसाजसबसबकेसजैहरैदुखदहिदलावधिहि
विधिता श्रियाहितजिहिंदई सोइ जानकीपतिमधुरमूरतिमोदमयमंगलम
ईठाकुर आनिहिं वंदौ शीतसरलसुठि ध्यान अगमशिवहूंभेंस्यौ केवट उठि ॥
छंद ॥ भरिअंकभेंस्यौ सजलनयनशरीरवै सियरसनेहसौ ॥ सुरसिद्ध मुनि
विकहतकोउनप्रेमप्रियरघुवीरसौ खगशबरिनिशिचरभालुकपिकिए आपु
तेंवंदितवडे तापर तिन्हकीसेवासुमिरि जियजातजनसकुचनिगोइ स्वामीको
सुभाउ कह्योसो जव उर आनिहैं सोचसकलमिटिहैरामभलोमानैगो ॥ छंद ॥
भलोमानिहैं रघुनाथ जोरिजो हाथमाथोनाइहै ततकालतुलसीदासजीवनजन
मकोफलपाइहै जपिनामकरहिंप्रनामकहिगुणग्रामरामहिधरिहियविव
चरहिअवनिअवनीशचरणसरोजमनमधुकरकिये ३ इहिजियजवहरिजोंविलगा
न्यौतवतेंदेहगेहनिजजान्यौ मायावससरूपविसरायौ तेहिभ्रमतेंदारुणदु
खपायो ॥ छंद ॥ पायोजोदारुणदुसहदुखसुखलेससुपनेहुनहिंमिल्यो ॥
भवशूलशोकअनेकजेहितेहिपंथतूहठिहठिचल्यो बहुयोनिजन्मजराबि
पतिमतिमंदहरिजान्यौनहीं श्रीरामबिनविश्रामभूठावचारदेखपायोकहीं
अनंदसिंधुमध्यतवबासाविनजानेकतिमरसिपियासाभगभ्रमवारिसत्य
जलजानीतहांतूमगनभयोसुखमानी ॥ छंद ॥ तेहिंमगनमज्जसिपानकरि
त्रपकालजलनाहींजहां निजसहजअनुभवरूपतवखलभूलअवआयोनहां
निर्मलनिरंजननिर्विकारउदारसुखतेंपरहस्यौ निकाजराजविहायनृपइव
खपनकारागृहपस्यौ ॥ तेंनिजकर्मडोरिदृढ़कीन्हीअपनेकरनिगांठिगहिदीन्ही
तातेंपरवसपस्यो अभागेता फलगर्भवासदुखआगे ॥ छंद ॥ आगे अनेकसमू
हसंसृतिउदरगतिजान्यौसोऊसिरहेठउपरचरणासंकरेबातनहिंपूंछेकोउ
श्रोणितपुरीषजो मूत्रमलकृमिकर्दमावृत सोवहीकोमलशरीरगंभीरवेदन

सीतमधुनिधुनिरोकहौं॥तूनिजकर्मजालजहांघेरो॥श्रीहरीसंगतज्योंन
हिंतेरो॥बहुविधिप्रतिपालनप्रभुकीन्हो।परमकृपालज्ञाननतोहिदीन्हो।।छंद
॥तोहिदियोज्ञानविवेकजन्मअनेककीतवसुधिभई।तेहिईशकीहौंसरणजा
कीविषमसमायागुणमई।जेहिकिएजीवनिकायवसरसहीनदीनअतिनेसो
करौबेगसंभालिश्रीपतिविपतिमहजिनमतिदई॥पुनिबहुविधिगलानिजियमानी।अ
बजगजाइभजौंचक्रपानी॥ऐसेहिकरिविचारचुपसाधी॥प्रसवपवनप्रेरेउअपरा
धी॥छंद॥प्रेर्योजोपरमप्रचंडमारुतकष्टनानातैंसह्यो।सोज्ञानध्यानविरागअनु
भवजातनापावकदह्यो।अतिखेदव्याकुलअलपवलछिणएकबोलनआवही
तवतीव्रकष्टनजानकोउसबलोगहर्षितगावई॥बालदसाजेतेदुखपाए।अति
असीमनहिंजाहिंगनाए।क्षुधाव्याधिबाधाभइभारी।वेदननहिंजानैमहतारी॥छंद॥ज
ननीनजानैपीरसोकेहिहेतुशिशुरोदनकरैसोइकरैविविधउपाइजातेंअधि
कतुवछातीजरै।कौमारसैशवअरुकिशोरअपारअघकोकहिसकै।व्यतिरेकतोहि
निर्दयमहाखलआनकहु कोसहिसकै॥यौवनयुवतीसंगरंगरात्योंतवतूमहा
मोहमदमात्यों।तातेंतजीधर्ममर्यादा।विसरेजवसवप्रथमविषादा॥छंद॥
विसरेविषादनिकायसंकटसमुझिनहिंफाटतहियो॥फिरगर्भगतिआवर्तसं
सृतचक्रजेहिहोइसोइकियो।कृमभस्मबिटपरणामतनुतेहिलागिज
गबैरीभयोपरदारपरधनद्रोहपरसंसारबाढैनितनयो॥देखतहींआईबिरुधाई
जोतैंसपनेहुनाहिंबुलाई।ताकेगुणकछुकहेनजाई।सोअबप्रगटदेखतनमा
हीं॥छंद॥सोप्रगटतनजर्जरजरावसव्याधिशूलसतावही।सिरकंपइंद्रि
यशक्तिप्रतिहतवचनकाहुनभावई।गृहपालहूतेंअतिनरादरखानपानन
पावई॥ऐसेहुदसानविरागतहांतृष्णातरंगवढ़ाईई।कहिकोसकैमहाभ
वतेरेजन्मएककेकछुकगनेरे।खानिचारिसंततअवगाहीं।अजहुनकरुवि
चारमनमाहीं॥छंद॥अजहूंविचारिविकारतजिभजिरामजनसुखदायकं॥
भवसिंधदुस्तरजलरथंभजचक्रधरसुरनायकं।विनुहेतुकरुणाकरउदारअ
पारमायातारणं।कैवल्यपतिजगपतिरमापतिप्राणपतिगतिकारणं॥चुपति

भक्ति सुलभ सुखकारी सोत्रयताप शोक भयहारी बिनसतसंग भक्तिं नहिहो
ईतेनव मलैईवैजवसोई॥छंद॥ जवद्रवैदीनदयालराघवसाधुसंगतिपा
इयेजेहिदरसपरस समागमादिक पापरासिनसाइये॥जिनकेमिलेदुखसु
खसमान अमानतादिक गुण भए॥ मद मोह लोभ विषाद क्रोध सुबोधतेंसह
जहिगए॥ सेवतसाधुद्वैतभयभागे श्रीरघुवीरचरण लयलागेदेहजनितविका
रसवत्यागे तवफिरनिजस्वरूपअनुरागे॥छंद॥ अनुरागसो निजरूप जोजगते
विलक्षण सिमीयसम थामिलसदाश्रमरेहवंतनलेखिए निर्मलनिरामयु
एकरसतेहिहर्षशोकनव्यापई त्रैलोक्यपावनसोसदा जाकीदसाऐसीभ
ईजोतेहिंपंथचलैमनलाईतौहरिकाहेनहोंहिसहाई जोमारगश्रुतिसाधु
दिखावैंतेहिपथचलतसबैसुखपावैं॥छंद॥ पावहिसदासुख हरिकृपासंसार
आसातजिरहैसपनेहुनहिंसुखद्वैतदरसनवातकोटिककोकहेंद्विजदेवगुरुहरिसंत
विनुसंसारपारनपावई यहजानितुलसीदासत्रासहरणरमापतिगावई१३७
रागविलावल॥ जोपैकृपारघुपतिकृपालकीवैर औरकेकाहसौरहोइनवां
कोबारभक्तकोजोकोउकोटिउपायकरै तकेनीचजोमीचसाधुकीसोइपां
वरतेहिमीचमरैवेरविदितप्रहलादकथासुनिकोनभक्तिपथपांउधरैगज
उधारिहरिथप्यौ विभीषणध्रुवअविचलकवहूंनटरै अंवरीषकीशापसु
रतिकरिअजहूंमहामुनिग्लानिगरै सोधौंकहाजोनकियोसुजोधनअवध
आपनेमानजरै प्रभुप्रसादसौभाग्यविजयजशपांउवनेवरआइवरैजोजो
कूपखनेगोकुलकहुसोइसठफिरतेहिकूपपरै सपनेहुसुखनसंतद्रोहीक
हुसुरतरुसोउविषफरनिफरैहै काके द्वैसीसईशकेजोहठिजनकीसीम
वरैतुलसिदासरघुवीरबाहुवलसदाअभयकाहूनडरै१३८ कबहुंसोकर
सरोजरघुनायकधरिहौंनाथसीसमेरेजेहिकरअभयकिएजनआरतवा
रकविवसनाइहेरेजेहिकरकमलकठोरशंभुधनुभंजिजनकसंशयमेटोजेहि
करकमलउठाइबंधुज्योंपरमप्रीतिकेवटभेट्योजेहिकरकमलकृपाल
गीधकहुउदकदेइनिजलोकदियोजेहिकरवालिविदारिदासहितकपिके

लपतिसुग्रीवकियो आयो शरणसिभीतविभीषणजेहिकरकमलनि
लककीन्हों जेहिकरगहिसरचापअसुरहतिअभयदानदेवनदीन्हों शीतल
सुखदछांहजेहिकरकीमेटतिपापतापमायानिशिवासरतेहिंकरसरोज
कीचाहततुलसिदाससछाया १३९॥ दीनदयालदुरितदारिददुखदुनीदुसह
तिहुंतापतईहै देवदुवारपुकारतआरत सवकीसवसुखहानिभईहै प्रभुके
वचनवेदवुधसंमतिममभूरतिमहिदेवमईहै तिन्हकीमतिरिसरागमोह
हलोभलालचीलीलिलईहै राजसमाजकुसाजकोटिकटुकलपतिकलु
षकुचालिनईहै नीतिप्रतीतिप्रीतिपरमितिपतिहेतुवादहठिहेरिहईहै आ
श्रमवर्णधर्मविरहितजगलोकवेदमर्य्यादगईहै प्रजापतितभूपालपाप
रतिअपनेअपनेरंगरईहै शांतिसत्यसुभरीतिगईघटिवढीकुरीतिकपट
कलईहै सीदतिसाधुसाधुतासोचतिखलविलसतहुलसतखलईहै पर
मारथस्वारथसाधनभयअफलसकलनहिसिद्धिसईहै कामधेनुधरणी
कलिगोमरविवसविकलजामतिनवईहै कलिकरनीवरनियेकहांलौं क
रतापिरतविनटहलटईहै तापरदांतपीसकरमीजतकोजानेचितकहाठ
ईहै त्योंत्योंनीचचढतसिरज्योंज्योंशीलवशायवसठीलदईहै सरुषवरजित
रजियेतरजनीकुहिलैहैं कुमहडेकीजईहै दीजेदादिदेखिनातोवलिमहिमोद
मंगलरितईहै भरेभागअनुरागलोगकहैंरामअवधिचितवनचितईहै वि
विविनतीसुनिसानंदहेरिहंसिकरुणावारिभूमिभिजईहै रामराजभयोका
जभयोकाजसगुणशुभराजारामजगतविजईहै समर्थवड़ोसुजानसुसाहिव
सुकृतसेनहारतजितईहै सुजनसुभावसराहतसादरअनायाससासतिवित
ईहै उथपेथपनउजारिवसावनगईवहोरिविरदसईहै तुलसीप्रभुआर
तआरतिहरअभयवांहकेहिकेहिनदईहै १४० जेनरनकारूपजीवनजग
भवभंजनपदविमुखअभागीनिशिवासररुचिपापअसुचिमनखलमति
मलिननिगमपथत्यागीनहिंसनसंगभजननहिंहरिकोश्रवणनरामकथाअ
नुरागी सुतवितदारभवनममतानिशिसोवतअतिनकवहुंमतिजागीतुल

सिद्धसदरिनामसुधातजि सठ महि पियत विषय विषमागी सूकरस्वानसृ
गालसरिसजन जनमत जगत जननि दुखलागी ॥५१॥ रामचंद्र रघुनायक तुम
सोंहांविनतीकेहिभांतिकरों अघअनेकअवलोकअपनेअनघनामअनुमान
डरों ॥ परदुखदुखीसुखीपरसुखतेंसंतसीलनहिंहृदयधरों देखिआनकीवि
पतिपरमसुखसुनिसंपतिविनआगजरों भक्तिविरागज्ञानसाधनकहिबहुवि
धिडहकतलोकफिरों शिवसर्वससुखधामनामतवबेचिनर्कअरहरौं
जानतहूंनिजपापजलधिजियतुलसीकरसमसुनतलरोंरजसमपरअव
गुनसमेरुकरिगुणगिरिसमरजतेंनिदरौंनानाभेषवनाइदिवसनिशिपरवित
जेहिजेहितेहियुक्तिहरौं एकोपलनकबहूंअलोलचितहितदेपदसरोजसुमिरौं
जोआचरणविचारोंमेरो कल्पकोटिलगिअवटिमरौं तुलसीदासप्रभुकृपा
विलोकनिगोपदज्योंभवसिंधुतरौं ॥५२॥ संकुचितहों अतिरामकृपानिधिक्योंक
रिविनयसुनावों सकलधर्मविपरीतिकरतकेहिभांतिनाथमनभावों जानत
हूंहरिरूपचराचरमेंहठिनयननलावों अंजनकेसरिवाययुवतीजहंलोचन
सुलभपठावों श्रवणनिपरदोषनिरंतरसुनिसुनिभरिभरितावोंजेहिरसु
नागरागादिनिहरेविनुप्रयाससुखपावों तेहिसुखपरअपवादभेकज्यों
रटिरटिजन्मनसावों कबहुंहृदयअतिविमलबसतहरिकहिकहिसवहिंसि
खावोंहोंनिजउरअभिमानमोहमदखलमंडलीबसावों जोतनुधरिहरिपदसा
धहिजनसोंविनुकाजगवायोंमनक्रमवचनलाइकीन्हेअघतेकरियतनदुरा
वों परप्रेरितइर्षावसकबहुंकफियोकुछशुभसोंजनायोविप्रद्रोहजनुवांटि
परयोहठिसबसोंबैरबढावों ताहूपरनिजमतिविलासमसवसंतनमाहिंगनावों
निगमशेषसारदनिहोरिजोअपनेदोषकहावों तोनिसिराहिकल्पशतलगि
प्रभुकहाएकमुखगावों तोकरनोअपनोविचारोंतोकिशरणहोंआवों मृदुल
सुभावशीलरघुपतिकोसोबलमनहिंदिखावों तुलसीदासप्रभुसोंगुणनहिं
जोहिसपनेहुंतुम्हहिरिझावोंनाथकृपाभयसिंधुधेनुपदसमजोजानिसिरावों ॥
५३॥ सुनहुरामरघुवीरगुसांईमनअनीतिरतमेरो चरणसरोजविसारितिहारोनि

निशिदिन फिरत अनेरो मानत नाहीं निगम अनुसासन त्रासन काहू केरो भूल्यौं
फिरत कर्म कोल्हु न तिल ज्यों बहु बारिनि पेरो जहं सत संग कथा माधव की
सपनेहु करत न फेरो लोभ मोह मद काम क्रोध रत तिन्ह सों काम घनेरो प
र सुनत दाह पर दूषण सुनत हरषे बहुतेरो आपु पाप को नगर बसावत सहि न
सकत पर खेरो साधन फल श्रुति सार नाम तव भव सरिता कहु बेरो सोइ पर
कर काकिनी लागी सठ बेचि होत हठि चेरो कबहुं कहुं संगति सुभाव तें जाउं
सुमारग नेरो तब करि क्रोध संग कुमनोरथ देत कठिन भट भोरो एक हौं दीन
मलीन हीनमति बिपति जाल अति घेरो तापर सहि न जाइ करुणानिधि मन
को दुसह दरेरो हारि परयो करि यत्न बहुत विधि तातें कहत सबेरो तुल
सीदास यह त्रास मिटै जब हृदय करहु तुम डेरो १४५ तो धों को जो नाम जो जो न हि
रह्यौ रघुबीर करुणा की कविन करणा ही हरि लाहिं विषम भव भीर वेद विदित जग
विदित अजामिलि विप्र बंधु अति धाम घोर जम आलय जात नेवरयौ सुतहित सुमि
रत नाम पसु पावर अभिमान सिंधु गज ग्रस्यौ आइ जब सर हरि सुमिरत सुजन
सपदि आए प्रभु हरयौ दुसह उरदाह ब्याध निषाद गृद्ध गणिका रिक कपि गणनत्र
बगुण मूल नाम वोर तें राम सब सबकों दूरि करयौ भव सूल काहिं अघ खगघाट
हौं तिन तें रघुकुल भूषण भूप सीदत तुलसिदास निसिवासर परयौ भीम तम
कूप ४६ कृपासिंधु जन दीन दुवारे दादि न पावत काहे जब जहं तुमहि पुकारत आ
रत नव तिन के दुख दाहे गज प्रह्लाद पंडु सुत कपि सब कों रिपु संकट मेट्यो प्रण
त बंधु भय विकल विभीषण ताहि भरत ज्यों भेट्यो मैं तुम्हरो लै नाम ग्राम एक उर
आपने सायो भजन विवेक विराग लोग भले कर्म करम करि ल्यायो सुनि रिस मोह क
रि लिकामादिक कराहि जोर बरिआई तिन्ह हि उजारि नारि अरि धन पुर राखि राहि रा
म गुसाईं सम सेवा कष्ट सहा पंथ उरहौं रवि उपाय पवि हाम्यौ किन कारण कौ कलह दउं
दुख प्रभु सों प्रगट पुकारयौ सुरस्वामी अनीस आलायक नितुर दया चित नाहीं
जाउं कहां को बिपति निवारक भवतारक जग माहीं तुलसी यद्यपि पोच तुम्हारो
और न काहू केरो दीजे भक्ति बांह बैरक ज्यों सुबस बसै यह खेरो ४७ हौं सब विधि

रामरावरो चाहत भयो चेरो ठौर ठौर साहिवी होत है ख्याल काल कलिको
रो कामकर्म इंद्रिय विषै गाहक गरा घेरो होंनक वूलत्रि वाधिके मोल करत क
रौं वदि छोर तेरो नाम है विरुदैत वडेरो मैं कहत वछलप्रीतिके मांगो उरउरो नाम
वैंट अवकलगव च्यौ कलयुग जग जरो अवगरीवनज मो मीए पाइवो न हेरो जे
जेहि को गुवव कसान को प्रभु न्याव निवेरो तेहि कौतुक कहिय कृपाल तुलसी है
मेरो ४७ कृपासिंधु तातें रहों निशिदिन मन मारें महाराज लाज आपु ही निज
जांघ उघारें मिल्यो रहे मारयो चहै कामादि संघाती मो विन रहे न मेरिये जो रछलि
छाती ।। वसत हिये हित जानि मैं सवकी रुचि पाली कियो कथक को दंड हों जड़ क
र्म कुचाली देखी सुनी न आजु लों अपनायत ऐसी कराहिं सवै सिरमेर ही फिर
परत अनैसी वडे अवलोकत लरिव परिपाहि हेरें न जाही असमंजस में मगन हों लीजो
हि वाहों वालक ख्यालि अलोकिये कौतुक जन जो को अनायास मिटि जाइगो संकट
तुलसी को १४८ ।। कहों कौन मुख लाइ कै रघुवीर गुसांई सकुचित समुझत आपनी
सब सांइदुहाई सेवत वस सुमिरत सखा सरणागत सो हैं गुण गण सीतानाथ के चित
करत नहीं हौं कृपासिंधु दीनवंधु के आरत हित कारी प्रणतपाल विरुदावली
सुनि जानि विसारी सेइ न धेइ न सुमिरि कै पद प्रीति सुधारी पाइ सुसाहिव राम सो
भरि पेट विगारी नाथ गरीव नवाजि हैं मैं गही न गरीवी तुलसी प्रभु निज ओर तें
वनि परै सो कीवी ४९ दीन हों जाउं कासों कहों और ठौर न मेरे जन्म गवायो तेरे ही
द्वार किंकर तेरे मैं तो विगारी नाथ सों आरति के लीन्हें तो हि कृपानिधि कैसे व
न मेरी सो कीन्हे दिन दुर दिन दिन दुरदसा दिन दुख दिन दूषण जो लौं तू न विलोकि
हे रघुवंश विभूषण दई पीठि विन दीठि मैं तुम विश्वविलोचन तो सो तुही न दूसरो
नत सोच विमोचन पराधीन देव दीन हों स्वाधीन गुसांई वोलन हो रसां कै वोल
विनय की मांई आपरे षिमा हि हरषिये जन मानिय सांचो वड़ो वार राम नाम को
जो हि लई सो व चोर हून रीति राम रावरी नित हियहुलसी है जो भावे त्यों कर कृपा
तेरो तुलसी है ५० राम भई मोहि आपने सो चाहे अरु नाही जो वस कलसंताप को
भाजन जगमाही नातो वड़े समर्थ सो एक ओर किधों हूं तो को मोसे अति घने

मोकोंएकतूहूंवडिमालानिहानिहैहियेसरवस्यसुसाईकूरकुसेवककह
तहोसोवककोनाईभलोपोचुरामकोकहैंमोकोसवनरनारीविगरेसवककसा
नत्र्योंसाहिवसिरगारीअसमंजसमनकोमिटेसोउपावनसूझैदीनवंधुकीजै
सोईवनपरेजोवूझैविरहावलीविलोकियेतिनमैंकोउहैारूं तुलसीप्रभुकौं
परह्यौसरणागतसोहो २५१ जोपैचेराईरामकीकरतोनलजातौजपतरी
रघुनाथकोनामहीअलसातौंवाजीगरकेसूमजौखलखेहलरवातौजोतू
मनमेरकैहरामनामकमातोसीतापतिसन्मुखसुखीसवठांयसमातो
रामहातेतेनाहिंजोमलहिंसुहतो॥ कालकर्मकुलिकारणीकोअंकुर
हातौरामनामअनुरागहीजियजोरतियातौस्वारथपरमारथपथीतौतौहि
सवपतियातौंसोइसाधुसुनिसमुझिकेपरपीरपिरातौजन्मकोटिकोक
देलेहदहहरयथिरातोभवमगअगमअनंततहैविनुश्रमहिसिरातौमहिमाउ
लेटनामकीमुनिमणकिरातौअमरअगमतनुपाईसोजहजायनमातौहितौ
मंगलमूलअनमूलविधातौजोजनप्रीतिप्रतीतिसोरामनामोहितौतुल
सीप्रसादसंतनिहुनापनसातौ २५२ रामभलाईआपनीभलोकियैानकाको
युगयुगजानकीनाथकोजगजागतसाकोव्रम्हादिकविनतीकरीकाहिदुखव
सुधाकोरविकुलकैरवचंदभौअनरसुधाकोकौशिकगरतुतुसाज्योंताके
तेजुअपाकोप्रभुअनहितहितकोदयोफलकोपकृपाकोहरयोपापअ्रा
पुजाइकेसंतापसिलाकोसींचमगनकाल्योसहीसाहिवमिथिलाकोरषराखे
मृगुपतिधनीअहमितिममताकोचितवतभाजनकरलियोउपसमसमता
कोविरदतमानआयसुचलेवनमामातपिताकोधर्मधुरंधरधीरसोगुणशील
जिताकोगुहगरीवगतज्ञातहूंजोवजिहिनभखाकोपायोपावनप्रेमतेंसनमान
सखाकोसद्गतिशवरीगिद्धकीसादरकरताकोसोचसिंधुसुग्रीवकोसंकटहर ग्री
ताकोराषिविभीषणकोसकैनाहिंकालकराकोवालिसत्रासीअवधके
वूझियेनखाकोनपावरपहुंचेतहांजहांमुनिमनथाकोगतिनलहैरामनाम
सोंविधिसोसिरजाकोसुमिरतकहतप्रचारिकैवल्लभगिरिजाकोअकोनआजा

मिलकीकथासानंदनभाकोनामलेतकलिकालहूहरिपुरहिगाकोराम
नाममहिमाकरैकामभूरुहआकोसाखीवेदपुरानहैतुलसीजनतनकौ ५३
मेरेरावरियैगतिहैरघुपतिबलिजाउंनिलजनीचनिरधननिरगुनकहंज
गदूसरोनाठाकुरठाउंहैघरघरभवभरेसुसाहिवसूझतसवनिआपनोदाउंवा
नरबंधुविभीषनहितविनकोसलपालकहूंनसमाउंप्रणतारतभंजनजनरंजन
सरणागतिपविपंजरनाउंकीजेदासदासतुलसीअवकृपासिंधुविनमोलवि
काउं ५४ देवदूसरोकोनदीनकोदयालशीलनिधानसुजानशिरोमणिसार
णागतप्रियप्रणतपालकोसमरथसरवज्ञसकलप्रभुशिवसनेहमानसम
रालकोसाहिवकिएमीतप्रीतवसखगनिशिचरकपिभीलभालुनाथहाथ
मायाप्रपंचसवजीवदोषगुणकर्मकालतुलसीदासभलोपोचरावरोनेकुनि
रखिकीजैनिहाल ५५ रागसारंग॥विश्वासएकरामनामकोमानतनहींप्रती
तिअनतऐसोइसुभावमनवामकोपढवोपर्योनछठीछमतऋगयजुरअ
थर्वणसामकोव्रततीरथतपसुनिसहमतपचिमरैकरैतनछामकोकर्म
जालकलिकालकठिनआधीनसुसाधितदामकोज्ञानविरागयोगजपतपभयलोभ
मोहकोहकामकोसवदिनसवलायकभवगायकरघुनायकगुणग्रामकोवैठे
नामकामतरुतरडरकौनघोरघनघामकोकोजानैकोजैहैयमपुरकोसुरपुर
परधामकोतुलसीहिंवहुतभलोलागतजगजीवनरामगुलामको ५६ ॥ क
कलिनामकामतरुरामकोदलनिहारदारिदुकालदुखदोषघोरघनघामको
नामलेतदाहिनोहोतमनुवामविधाताबामकोकहतमुनीशमहेशमहातम
उलटेसूधेनामकोभलोलोकपरलोकतासुजाकेवलललितललामकोतु
लसीजगजानियतनामतेसोचनकूचमुकामको ५७ सेइयेसुसाहिबरामसों
सुखदसुशीलसुजानसूरसुचिसुंदरकोटिककामसोसारदशेषसाधुमहि
माकहैंगुणगणगायकसामसोसुमिरसप्रेमनामजासोरतिचाहतचंद्रलला
मसोगमनविदेसनलेशकलेशकोसकुचतसकृतप्रणामसोसाखीताकोविदि
तविभीषणवैठोहैअविचलधामसोटहलसहलजनमहलमहलजागतच

रीयुगजामसो देखतदोषन रीझत रीझत सुभसेवकगुणग्रामसों जाके भरोसे
लोकतिलकभयत्रिजगयोनिनतनामसो तुलसीऐसप्रभुहिभजै जो जन ना
हिविधातावामसो ५८ रमनट ॥ कैसे देउं नाथ हि खोरि काम लोलुप भ्रमत
मनहरिभक्तिपरिहरितोरि बहुतप्रीतिपुजाइवे पर पूजिवे परथोरि देतसि
खसिखयोनमानत मूढता असमोरि किए सहितसनेह जे अघ हृदय राखे
चोरि संगवस किए सुभ सुनाए सकल लोक निहोरि करौं जो कछु धरौं सचि
पचि सुकृतसीलबटोरि पैठिउर बरबस दयानिधि दंभ लेत अंजोरि लोभम
नहिंनचाव कपि ज्यों गरें आसा डोरि बात कहौं बनाय विधिवल्लवरविराग।
निचोरि एतेहु पर तुम्हरो कहावत लाज अचई घोरि निलजता पर रीझि रघुबर
लीजै तुलसीहि छोरि १५९ हे प्रभु मेरोई सब दोस सीलसिंधु कृपाल नाथ
आरतपोसु वेषवचन विराग मन अघ अवगुणनि को कोसु रामप्रीतिप्रतीतिपो
लीकरपटकरतवठोसु रागरंगकुसंगहीसो साधुसंगति रोसु चहत केहरि जस
सिंहस्रगालज्यों खरगोसु संभु सिखवन रसनहूं नित रामनामहिं घोसु दंभहू
कलिनामकुंभज सोचसागरसोसु मोदमंगलमूल अति अनुकूल निज निरजोसु
रामनामप्रभावसुनितुलसिहुपरमपरितोसु १६० मैंहरिपतितपावनसुनेमैं
पतिततुमपतितपावनदोउवानकवने व्याधगणिकागज अजामिलसाखि
निगमनिभने और अधम अनेक तारे जात कापै गने जानिनाम अजानिलीं
न्हें नरक यमपुर मने दास तुलसी सरण आयो राखिये अपने १६१ रागमलार
तोसोप्रभु जोपै कहूं कोउ होतो तोसहि निपट निरादर निसिदिन रटिलटि
ऐसोघटिकोतो कृपासुधाजलदान मांगिवौ कहौं सो साच निसोतो स्वातिसनेह
सलिलसुखचाहतचितचातककोसोपोतो कालकर्मवसुमनकुमनोरथक
वहुकवहुकछुभोतो ज्यों मुदमय वसि मीन वारि तजि उछरि भभरि लेत गोतो ॥ जि
तोदुरावदासतुलसीउरक्यौंकहिआवतओतो तेरेराजरायदसरथकेलयोव
योविनजोतो १६२ रागसोरठ ॥ ऐसो को उदार जगमाहीं विनुसेवा जो द्रवै दीन पर राम
सरिसकोउनहीं जो गति योग विराग यत्न करि नहिं पावत मुनि ज्ञानी सो गति देई

गीधशवरीकोहु प्रभुनवहुतजियजानीजासंपतिदससीससाधिकैरावन
शिवपहलीन्हीसोसंपदिविभीषनहुँअतिसकुचसहितहरिदीन्हीतुल
सिदाससवभांतिसकलसुखज्यौंचाहसिमनमेरोतौभजरामकामसवपूरण
करैकृपानिधितेरो१६३एकदानिशिरोमनिसांचोजिहिजाच्यौसोसाईनाचक
तावसफिरवहुनाचननाच्यौसवस्वारथीअसुरसुरनरमुनिकोउनदेतविनुपा
एकोशलपालकृपालकल्पतरुद्रवससकृतसिरनाएहरिहुऔरऔरअव
तारआपनेराखीवेदवडाईलैचिउरानिधिदईसुदामाहियद्यपिवालमिताईक
पिशवरिसुग्रीवविभीषणकोकोनकियोअजाचीअवतुलसिहिदुखदेतिदयानिद
यानिधिदारुणआसपिशाची१६४जानतप्रीतिरीतिरघुराईनातेसवहातेकै
राखतरामसनेहसगाईनेहनिवाहिदेहतजिदसरथकीरतिअचलचलाइ
ऐसेहुपितुतेंअधिकगीधपरममतागुणगरुआईतियविरहीसुग्रीवसखाल
खिप्राणप्रियाविसराईरणपरेवंधुविभीषणहीकोसोचुहृदयअधिकाई
घरगुरुगृहप्रियसदनसुसारेभईजवजहांपहुनाईतहंतहंकहिसवरीकेफलन
कीरुचिमाधुरीनपाईसहजसरूपकथामुनिवरननरहतसकुचसिरनाईकेव
टमीतकहतसुखमानतवानरवंधुवडाईप्रेमकनौडोरामसौप्रभुत्रिभुवनति
हुकालनभाईतेरोऋणीहौंकह्यौकपिसोंऐसीकोमानिहिसेवकाईतुलसी
रामसनेहशीललखिजौनभक्तिउरआईतौतोहिजन्मजाइजननीजडतन
तरुणतागवाई१६५रघुवररावरीइहैवडाईनिदरिगनीआदरगरीवपरकरतकृ
पाअधिकाईथकेदेवसाधनअनेककरिसपनेहुनहिंदेइदिखाईकेवटकुटि
लभालुकपिकौनपकियेसकलसंगभाईमिलिमुनिवृंदफिरेदंडकवनसेचरचा
नचलाईवारहिवारगीधशवरीकीवरननप्रीतिसुहाईस्वानकिएतेंकिएपुरवा
हरजतीगयंदचढाईतियनिंदकमतिमंदप्रजारजनिजनयनगरवसाईइहद
रवारदीनकोआदररीतिसदाचलिआईदीनदयालदीनतुलसीकीकाहुनसुर
तिकराई१६६ऐसेरामदीनहितकारीअतिकोमलकरुणानिधानविनकारणप
रउपकारीसाधनहीनदीननिजअघवससिलाभईमुनिनारीगृहतेंगवनप

राखिपदु पावन धोरश्रापतें नारी हिंसारत निनिषाद तामसवपु पशुसमान
वनचारी जद्यपि द्रोह किये सुरपति सुत काहि न साइ अति भारी सेतेहृद
य पलगाइ प्रेम घन नहिं कुल जानि विचारी सकल लोक अवलोकि शोकहत
शरण गये भय टारी विहंगयोनि आमिष अहार पर गीध कवन व्रतधारी ज
नक जमान किया ताकी निजकर सब बात सवारी अधम जाति सबरी योषित
सउ लोक वेदतें न्यारी जानि प्रीति दै दरस कृपानिधि सोउ रघुनाथ उधारी कपि सुग्रीव
बंधु भय व्याकुल आयो शरण पुकारी सहि न सके दारुण दुख जनके हत्यो बालि
सहि गारी रिपुको बंधु भवीषण निशिचर कौन भजन अधिकारी शरणागत
आगे ह्वै लीन्हो भस्यो भुजा पसारी अशुभ होइ जिनके सुमिरणतें बानर रीछ
विकारी वेदविदित पावन किये ते सब महिमा नाथ तुम्हारी कहं लगि कहौं
गणिना जिन्हको तुम विसमनि निवारी कलिमल ग्रसित दास तुलसी पर काहे कृ
पा विसारी ॥ १६७ ॥ रघुपति भक्ति करत कठिनाई कहत सुगम करनी अपार जानै
सोई जेहि बनआई जो जेहि कुशल ताकहुं सोई सुलभ सदा सुखकारी ॥ स
फरी सनमुख चल प्रवाह सुरसरि वहै गज भारी ज्यों सर्करा मिलै सिकता महु ब
लतें न कोउ बिलगावै आनि रसज्ञ सूक्षम पिपीलिका बिनु प्रयास ही पावै स
कल दृश्य निज उर मेलि सोवनिद्रा तज योगी सोइ हरिपद अनुभवै परम सुख अ
तिशय द्वैत वियोगी शोक मोह भय हर्ष दिवसनिशि देस काल तिहं नाहीं तुलसि
दास यह रहसा हीन संशय निर्मूल न जाहीं ॥ १६८ ॥ जो पै राम चरण रति होती तौ का त्रि
विधि शूल निशिवासर सहते विपति निसोती जो संतोष सुधा निशिवासर सपने
हुं कबहुं क पावै तौ कत विषय विलोकि झूठ जल मन कुरंग ज्यों धावै जो श्रीप
ति महिमा विचारि उर भजते भाव बढ़ाए तौ कत द्वार द्वार कूकर ज्यों फिरते पे
ट खसाए जे लोलुप भए दास आस के ते सबही के चेरे प्रभु विश्वास आस जीती
जिन्ह ते सेवक हरि केरे नहिं एकौ आवस भजन कौ विनय करत हौं तातें कीजे
कृपा दास तुलसी पर नाथ नाम के नाते ॥ १६९ ॥ ज्यों मोहि राम लागे तैं मीठे तो नवरस ष
ट रस रस अनरस ह्वै जाते सब मीठे बंचक विषय विविध तन धरि अनभये सुने अरु डीठे

पभु जानत हैं हृदय आपने सुपने न अघाइ उवीठे तुलसीदास प्रभु सों ए
क बल बचन कहत अति ढीठे नाम की लाज राम करुणाकर किहि न दिये
कर चीठे १७०॥ यों मन कबहुं तुमहिं न लाग्यो ज्यों कछु छाडि सुभाव नि
रंतर रहत विषय अनुराग्यो ज्यों चितई परनारि सुने पातक प्रपंच घरघर के
त्यों न साधु सुरसरि तरंग निर्मल गुणगण रघुबर के त्यों नासा सुगंध रस बस रसना षट
रस रति मानी राम प्रसाद माल जूठनि लगि त्यों न ललकि ललचानी चंदन चंद्र
वनि भूषण पट ज्यों चह पावर परस्यो त्यों रघुपति पद पद्म परसि को तनु पात
की न तरस्यो॥ ज्यों सब भांति कुदेव कुठाकुर सेये बचन हिए हूं त्यों न राम सुकृत
जे सकुचत सकृत प्रणाम किए हूं चंचल चरण लोभ लगि लोलुप द्वार द्वार
जग बागे॥ राम सीय आश्रम न चलत सपने न भये श्रमित अभागे सकल
अंग पद विमुख नाथ मुख नाम कि ओट लई है है तुलसिहि परतीति एक प्रभु मूर
ति कृपा भई है १७१ कीजे मोकों जमजातनामई राम तुमसे सुचि सुहृद साहि
हि मैं सठ पीठ दई॥ गर्भवास दस मास पालि पितु मातु रूप हित कीन्हों जड़हि विवेक
सुशील खलहि अपराधहि आदर दीन्हों कपट करों अंतरजामिहु सों अघ व्याप
कहि दुरावों ऐसे कुमति कुसेवक पर रघुपति न कियो मन बावो उदर भर्यो किंक
र कहाइ बेच्यो विषयन हाथ हियो है मोसे बंचक को कृपाल छल छाडि के छोह
कियो है पल पल को उपकार रावरो जानि बूझि सुनि नीके भिद्यो न कुलिशहु
तें कठोर चित कबहु प्रेम सिय पी के स्वामी की सेवक हितता सब कछु निज सांई द्रोह
ई मैं मति तुला तौलि देखी भई मेरहि दिसि गरु आई एतेहु पर हित करत नाथ मे
रो करि आयो औ करिहै तुलसी अपनी ओर जानियत प्रभुहि कनौड़ो भरि
है १७२ कबहुं कहों इहि रहनि रहोंगो श्रीरघुनाथ कृपाल कृपा ते संत सुभा
व गहोंगो यथालाभ संतोष सदा काहू सों कछु न चहोंगो परहित निरत निरं
तर मन क्रम बचन नेम निबहोंगो परुष बचन अति दुसह श्रवण सुनि तेहि पाव
क न दहोंगो विगत मान सम शीतल मन पर गुण नहि दोष कहोंगो परिहरि
देह जनित चिंता दुख सुख सम बुद्धि सहोंगो तुलसीदास प्रभु इहि पथ रहि अवि

विचलदहरिभक्तिलहोंगो१७३नाहिनआवतआनभरोसो॥इहिकलिका
लसकलसाधनतरुहैश्रमफलनिफरोसोतपतीरथउपवाससकलमख
जोहैजोरुचेकरोसोपाएहीपैजानिवोकर्मफलभरिभरिवेदपरोसोआ
गमविधिजपजागकरतनरसरततनकाजखरोसोसुखसपनेहुनयोगसि
धिसाधनरोगबियोगधरोसोकामक्रोधमदलोभमोहमिलज्ञानबिरागहरो
बिगरतमनसन्यासलेततजलनावतआमघरोसोबहुमतिसुनिबहुपंथमिबा
रणनिजयहांतहांफगरोसोगनककहौंरामभजननीकोमोहिरामराजडगरो
सोतुलसीबिनपरतीतप्रीतिफिरिफिरपचिमरैमरोसोरामनामबोहितभव
सागरचौहैतरनतरोसो१७४जाकेप्रियनरामवैदेहीसोछाडियेकोटिवैरीसम
यद्यपिपरमसनेहीतज्योपितापह्लादविभीषणबंधुभरतमहतारीबलिगु
रुब्रजवनितनिपतिन्यागेभइजगमंगलकारीनातेनेहरामकेमनियतसुहृद
सुपव्यजहांलोंअंजनकहाआंखिजेहिफूटैबहुतकहोंकहांलोंसोतुल
सीसबभांतिपरमहितपूज्यप्रानतेप्यारोजासोंहोइसनेहरामपदसोईहित
हमारो१७५जोपैरहनिरामसोंनाहींतौनरखरकूकरसूकरसेजायजियतजगमा
हीं॥कामक्रोधमदलोभनींदभयभूखप्याससबहीकेमनुजदेहसुरसाधुसरा
हतसोनातसनेहसियपीकेसरससुजानसपूतसुलच्छनगनियतगुनगरुआई
बिनहरिभजनइंद्रायनकेफलतजतनहींकरुआईकीरतिकुलकरतूति
भूतिभलिशीलसरूपसलोनेतुलसीप्रभुअनुरागरहितजैसेसालनसागअ
लोनो१७६राख्योरामसस्वामीसोंनीचनेहननातोएतेअनादरहूतोहितेनहा
तोजोरेनएननातेनेहफोकटफीकेदेहकेदाहकगाहकजीकेअपनेअपनेको
सबचाहतनीकोमूलदुहूंकोदयालदूलहसीकोजीवकोजीवनप्रानकोप्यारो
सुखहूकोसुखरामसोंतैंबिसारोकियाकैसौंतोसिखवनकोभलोरा
संसारहूसोंनेकचालिचलोतुलसीतेरीभलाईअजहूंबूझेराडरगाड़तनको
नाफिरिकेजरो१७७जोतुमत्यागोरामहौंतौनाहिंत्यागोंपरिहरिपायकाहिअ
नुरागौंसुखदसुप्रभुतुमसोंजगमाहींश्रवणनयनमनगोचरनाहींजर

जीवईश्वरघुरायपातुम मायापतिहो वसमायाहैनोकुजीचकस्वामिसुहृ
नाहैंकेपूननुमहिहौपितुमाताओपैकहूंकोउवूझनवातो। तौतुलसीविनमो
लविकातो॥७८॥मयेहूं उदासरामभेरेआसरावरीआरतस्वारथीसबकैहैंवात
वावरी। जीवनकोदानिधनकहानाहिंचाहियेप्रेमनेमकेनिवाहेचातकसंराहि
एमीननेनलाभलेसपानोपुन्यपीनकोजलविनथलकहांमीचविनतीनको
वरेहीओटवलिवांचिआयेछोटहैंचलतखरेकेसंगजहांखोटहैं(गही
रखवारभलोदाहिनेहूंवामकोमोकोशुभदायकभगोमेरामनामकोऊह
तनसानीव्हेहैहियेनाथनीकोहैजानतकृपानिधितुलसीकेनीकोहै॥७९॥
रागविलावल॥कहांजाउंकासोंकहोंकोसुनेदीनकीत्रिभुवनतुहीगतिसव
अंगहीनकीजगजगदीशघरघरनिघनेरेहैंनिराधारकोआधारगुणगणग
तेरेहैंराजराजकाजखगराजतजिधायोकोमोसेदासकोभयेमिलेशोमाय
जायोकोमोसेकूरकायरकपूतकौडीआधकेकियेवहुमोलतैंकरेयागडुआ
धकेतुलसीकीतेरेहीवनायवलिवैनेगीप्रभुकीविलवअंवदोषदुखजनेगी
॥८०॥वारकविलोकिवलिकीजेमोहिआपनोरायरसरथ्यकेतूउथपनथापनो
साहिवशरणपालसबलनदूसरोतेरेनामलेतहीसुखेरहोतऊसरोवचन
कर्मतेरेमनगडैहैवेसुनेजानेमैजहांनजेतेवडेहैंवैसेकियासभाधानसन
मानसिलाकोभृगुनाथसाखिवोजितेयाकोनलीलाकोमातुपितुवंधुहितु
लोकपालवेदको। वोलकोअचलनतकरतनिहालकोसंग्रहसनेहसनेहवसअ
अ
धमंधमअसाधुकोगीधशवरीकोकहोकरिहैसराधकोनिप्रधारकोआधा
रहीनकोदयालकोमानिकपिकेवटरजनीचरभालकोअंकरानिरगुणीनीवजे
तनिवाजेहैंनरराजसुजनसमाजमेंविराजेहैंसावीकिरावलीनवठोकहीगई
हैशीलसिंधुढीलतुलसीकीवारभईहै॥८१॥केहूंभांतिकृपासिंधुमेरीवी
हरियैमाकोओरढोरनसकैरेकराकरालकेतोरियेसहसमिलातेअतिमतिजड
भईहैकासोंकहोंकोनेगतिपाहनोहरईहैपररागजागचहेकोशिकज्योंके
वोहकलिमलखलखलेरेरविभारिभांतिभियोहेकर्मकपीशवालिवालित्रास

नस्योहै वाहतन्अनाथनाथतेरीवांहसयोहैं माहमोहरावराविभीषराज्यौं
हयोहै नाहितुलसीस चाहितिहूं नापतयोहै ८२ नाथगुनगाथसुनिहोतचि
तचाउसोरामरीझवोकोजानोभक्तिनभाउसोकर्मसुभाउकालठाकुरनठाउसोसु
धनत्ऐजननसुभ्याउसोजाचोजलजाहिकहैअमियउपाउसोकासोंकहोंका
हूसोंनकष्टनाहियाउसोवापवलिजाउंआपकोरिएउपाउसोतेरेइनिहोरेपरहोरहू
सुदाउसोतेरीहीसमुझैएसमुझैअसुझसुझाउसोतेरेहीवुझैवुझायवूझैअवुझा
उसोनामअवलंब अंबुदीनमीनराउसोप्रभुसोंवनाइकहैंजीहजरजाउसो
सबभांतिविगरीहैएकसुवनाउसोतुलसीसुसाहिबहिदियोहैजनाउसो८३
राग असावरी॥ रामप्रीतिकीरीति आपुजिनजानियतहै वडेकीवडाईछोटेकी
छुटाईदूरिकरैऐसियोवावरी वलिमनआनतहै गीधकोकरायौश्राद्ध भीलनीके
खवारेफलसोऊसाधुसवभलीभांतिमनआनतहै रावरीआदरीलोककेवेरहू८
आदरीआनियोगज्ञानहूंतेंगुरुगनिआनतहै प्रभुकीकृपाकृपालकठिनकलि
हुकालमहिमासमुझिउरआनिआनतहैतुलसीपरारावसभाएससअनरसरितवंधुं८
ओरदुरठौनआनतिहै ८४ रामनामकेजपेजाइजियकीजरनिकलिकालअ
परउपायेतअपायभएजैसेंतमनासिवेकोचित्रकेतरनिकर्मकपालपरिताप्या
पसानेसवजैसुफूलफूलेतरुफैकरकारनिहंभलोभलाल वउपासनाकिनासनी
केसुगतिसाधनभईउदरभरनियोगनिसमाधिनिक्रियाधिनविरागज्ञानवच
नवेषविसेषिकहूनवारनिकपटकुपथिकोटिकहनिरहनिखोटिसकलसि
राहैनिजनिजआचरणिमरतमहेशउपदेसहैकहाकरततुरसरीतीरकाशी
धर्मधरिणीरामनामकोप्रतापहरकहैंजपैंआपयुगयुगजानैजगवेदहूंवर
निमानिरामनामहींसोंअंतिरामनामहीसोंगतिरामनामहीकीविपतिहर
निरामनामसोंप्रतीतिप्रीतिराखेकवहुंकतुलसीढरैंगेरामआपनीढरनि
८५लाजनलागतदासकहावतसोआचरणविसारसोचतजिजोहरितुम
कोभावतसकलसंगतजिभजतिजाहिमुनिजपतपयोगवनावतमोसम
मंदमहाखलपांवरकोनयत्नतेहिपावतहरिनिर्मलमलग्रसितहृदयअ

समंजसमोहिजनावतजोहिसरकाककंकवकसूकरक्यौंमरालतहांआ
वतजाकीशरणजाइकोबिरुदारुनत्रैतापनसानसावतभवसरितांकहं
नावसंतयहकहिऔरनिसमुझावतहोतिन्हसोहरिपरमैरकरितुम्हसों
भलोमनावतनाहिनऔरठौरमोकहंतातेंहठिनातोलावतराखुशरण
उदारचूडामणितुलसिदासगुणगावत१८६कौ।नयनन्तेंविनतीकरिए
निजआचरणविचारिहारहियमानजानिजियडरियेजेहिसाधनहोइ
इवहुजानिजनसोहठिपरिहरिएजातेंविपतिजालनिशिदिनदुखतिहि
पथअनुसरिए।जानतहूंमनकर्मवचनपरहितकीन्हेतरिएसोइविपरीतदे
खपरसुखविनुकारणहीजरिएश्रुतिपुराणसवकोमतयहसतसंगसुदृढ
धरिएनिजअभिमानमोहईर्षावशतिनहिंनआदरिएसंततसोइप्रिय
मोहिसदाजातेंभवनिधिपरिएकहोअवनाथकवनवलतेंसंसारशोकह
रिएजवकवनिजकरुणासुभायतेंद्रवहुतेंनिस्तरिएतुलसिदासबिस्वा
सआननहिंकालपचिपचिमरिए१८७नाहींतेआयोशरणसवेरेज्ञान
विरागभक्तिसाधनकछुसपनेहुंनाथनमेरेलोभमोहमदक्रोधवाधारि
पुफिरतरैनदिनघेरेतिन्हहिंमिलिमनभयोकुपथरतिफिरैतिहारे
हिफेरेदोषनिलययहविषयशोकप्रदकहतसंतिश्रुतिटेरेजानतहूं
अनुरागतहांअतिसोउहरितुम्हारेहिप्रेरेविषपियूषसमकरहुअगिनि
हिमतारिसकवहुविनवेरेतुमसमईशकृपालपरमहितपुनिनपाइहौं
तेरेयहजियजानिरहौंसवतजिरघुवीरभरोसेतेरेतुलसिदासयह
विपतिवागुरातुमसोंवनिहिंनिवेरे१८८मैंतोअवजान्योसंसार।।वांधि
नसकहिमोहिहरिकेवलप्रगटकपटआगारदेखतहीकमनीयकछू
नाहिंनपुनिकिएविचारज्योंकदलीतरुमध्यनिहारतकवहुंनानिकर
तसारतैसेलिएजन्मअनेकमैंफिरतनपायोपारमाहोमोहमृगजलस
रितामहंवोरयोहौंवारहिवारसुनिरवलछलवलकोकिएवसलोहिन
भक्तउदारसहितसहायतदांवाँसिअवजिहिहृदयतनरकुमारजासों

करहुचातुरीजोनहिजानोमरमतुम्हारसैंपरिमोरेउरेरजुअहिनवूझै
नाहंब्यवहारनिजहितसुनसठहठनकराहिजोचहहिकुशलपरिवार
तुलसीदासप्रभुकेदासनहतजिभजहिजहामदमार॥१८८॥रागगौरी॥राम
कहतचलरामकहतचलभाईरे॥नाहितोभवबेगारीपरिहोंछूटव
अतिकठिनाईरे॥बांसपुरानसाजसबअठकठसरलतिकोन
खटोलारे॥हमहिदिहलकरकुटिलकर्मचंदमंदमोलबिनडोलारे
विषमकहारमारमदमातेचलहिनपाउबयोरेरे॥मन्दबिलखअभेराद
लकनपाइयदुखझकझोरेरे॥कांटकुरायलपेटनलोटनठांवहिठाव
बझाररे॥जसजसचलियदूरितसतसनिजवासनभेटलगाऊरे॥मार
गअगमसंगनहिंसंबलनाउगांवकरभूलारे॥तुलसिदासभवत्रास
हरहुअवहोहुरामअनुकूलारे॥१८९॥सहजसनेहीरामसोंतैंकियौन
सहजसनेह॥तातेंभवभाजनभयोसुनअजहुंसिखावनएहु॥ज्यौंमुखमु
करविलोकियेअनुचितनरहेअनुहारि॥त्योंसवजहुनिराएनेमातुपि
तासुतनारि॥दैदैसुमनतिलवासिकेअरुखरिपरिहरिरसलेत॥स्वा
रथहितभूतलभरेमनमेचकतनसेत॥कारवोत्यौंअवकरतुहैकरिवे
हितमीतअपार॥कहूंनकोउरघुवीरसोंनेहनिवाहनहार॥जासोंसब
सोंफिरेतासोंनकरीपहिचानी॥तातेंकछुसमुझोनहींकहालाभकाहा
नि॥सांचोजान्योझूठकोझूठकहुसांचोजानि॥कोनगयोकोनजानेहै
कोनजैहैकरिहितहानि॥बेदबदोबुधकहततैंहैअरुहौहुकहांहारेरि
तुलसीदासप्रभुसांचोहितजुहियकीआखिनहेरि॥१९०॥एकसनेहीसां
चिलोकेवलकोशलपालु॥प्रेमकनौडोरामसोनहिंदूसरोदयालु॥तन
नसाथीसबस्वारथीसुरव्यवहारसुजान॥नादनिठुरसमचरसिखीस
लिलसनेहनसूर॥शशिसरपेमदिनकरवडेपयरपेमपथकूर॥जाकोम
नज्यासोंबंध्योताकोसुखदायकसोई॥सरलसीलसाहिबसदासीतापति
जिससरिसनकोइ॥सुनिसेवासरिकोकरेपरिहरेकोदूखणदेखि॥केहिदि

वानरनिदीनकौ आदरु अनुराग विशेषे ॥ खगशवरी पितुमातु ज्यों मा
नेकपिकै कियमीत ॥ केवट भेंट्यौ भरत ज्यों ऐसो को कहै पतितपुनीत ॥
२६ ॥ अभागिहु भामुको वैरा रविशरणसमीत ॥ केर विदित विरुदावली कवि
कोविद गावत गीत ॥ कैसेउ पावर पातकी जेहि लई नामकी ओट ॥ गांठि
बांध्यौ रामसो परख्यौ न फेरि खर खोट ॥ मन मलीन कलि किलविषी होत
सुनत जासों कृतकाज ॥ सोउ तुलसी कियौ आपनौ रघुवीर गरीबनिवाज ॥
१६१ ॥ जो पै जानकीनाथसों नातो नेह न नीच ॥ स्वारथ परमारथ कहा कलि
कुटिल विगारो वीच ॥ धर्म वर्ण आश्रमनि के पैयत पोथिही पुराण ॥ क
रतव विनु वेष देखिये ज्यों शरीर विनु प्राण ॥ वेद विदित साधन सवै सुनियत दाय
क फल चार ॥ रामप्रेम विनु जानिवो जैसे सरसरिता विनु वारि ॥ नाना पथनि
वीणा के नाना विधान वहु भाँति ॥ तुलसी तू मेरे कहे जपु राम नाम दिन राति ॥ १
६३ ॥ अजहुं आपने राम को करतव समुझत हित होइ ॥ कहाँ तू कहाँ कोश
धनी ताको कहा कहत सब कोइ ॥ रीझिनिवाज्यो कबहिं तू कबखीझि दई तो
हि गारि ॥ दरपन वदन निहारिकै सुविचार मान हिय हारि ॥ विपरीजन्मअनेक
की सुधरत पल लगै न आधु ॥ पाहि कृपानिधि प्रेम सों कहे कोन राम कि
यो साधु ॥ बालमीक केवट कथा कपि भील भालु सनमान ॥ सुनि सनमुख जे
न राम सों नेहि को उपदेस हि ज्ञान ॥ कासे वा सुग्रीव की का प्रीति निनीति निर्वाहु ॥
जासु बंधु बध्यौ व्याध ज्यों सो सुनत सुहात न काहु ॥ भजन विभीषण को कहा
फल कहा दियो रघुराज ॥ राम गरीब नेवाज के बड़ी बांह बोल की लाज ॥ जप
हि नाम रघुनाथ को चरचा दूसरी न चालु ॥ सुमुख सुखद साहिब सुधी समरथ
कृपालु नत पालु ॥ सजल नयन गदगद गिरा गहवर मन पुलकि शरीर ॥ गाव
त गुणगण राम के केहि कीन मिटी भव भीर ॥ प्रभु कृतज्ञ सर्वज्ञ हैं परिहरि पाछि
ली गलानि ॥ तुलसी तोसों राम सों कछु नई न जानि पहिचानि ॥ १६४ ॥ जो अनु
राग न राम सनेही सों ॥ तौ लह्यो लाहु कहा नर देहि सों ॥ जो तनु धरि परिहरी सब
सुख भयो सुमति राम अनुरागी ॥ सो तनु पाइ अघाइ किये अघ अव

गुण अथ अघ धर्म अभागी॥ ज्ञान विराग योग जप तप मख जग मुद मग नहिं थो
रो॥ राम प्रेम बिनु नेम जाय जैसे मृग जल जलधि हिलोरो॥ लोक बिलोकि पु
रान वेद सुनि समुझि बूझि गुरु ज्ञानी॥ प्रीति प्रतीति राम पद पंकज सकल सु
मंगल खानी॥ अजहुं जानि जिय हारि मानि हिय होइ पलक महं नीको॥ सु
मिरु सनेह सहित हित रामहिं मानु मतो तुलसी को॥ १८४॥ बलि जाउं हौं
राम गुसांई॥ कीजिये कृपा आपनी नाईं॥ परमारथ सुरपुर साधन सब स्वा
रथ सुखद भलाई॥ कलि सकोप लोपी सुचालि निज कठिन कुचालि चलाई॥
जहां जहां चित चितवत हित तहां नित नव विषाद अधिकाई॥ रुचि भावती
भभरि भागहि समुहां अमित अनभाई॥ आधि मगन मन ब्याधि विकल
तन बचन मलीन झुठाई॥ एतेहु पर तुम सों तुलसी की प्रभु सकल सनेह स
गाई॥ १८५॥ काहे को फिरत मन करत बहु यतन मिटै दुख विमुख रघुकुल
बीर॥ कीजै जो कोटि उपाय त्रिविधि ताप न जाइ कह्यो जो भुज उठाइ मुनि
वर कीर॥ सहज टेव बिसारि तुही धौं देखि बिचारि मिलै न मथत बारि घृत
बिनु छीर॥ समुझि तजहिं भ्रम भजहिं पद युगम सेवत सुगम गुण गहन
गंभीर॥ आगम निगम ग्रंथ ऋषि मुनि सुर संत सबही को एक मत सु
नि मति धीर॥ तुलसिदास प्यास मरै पशु यद्यपि है निकट सुरसरी तीर॥
१८६॥ नाहिन चरण रति तांहि ते सहौं विपति कहत श्रुति सकल मुनि म
ति धीर॥ बसै जो शशि उछंग सुधा स्वादित कुरंग ताहि को भ्रम निरखि
रवि कर नीर॥ सुनिय नाना पुराण मिटत नाहिं अज्ञान पढिय न समुझिय जिमि
खग कीर॥ बझत बिनहिं पास सेमर सुमन आस करत चरत तेइ फल बि
नु हीर॥ कछु न साधन सिधि जानौं न निगम विधि नहिं जप तप बस मन न समी
र॥ तुलसिदास भरोस परम करुणा को प्रभु हरिहैं विषम भव भीर॥ १८७॥
मन पछितैहै अवसर बीते॥ दुर्लभ देह पाइ हरि पद भजु कर्म बचन अरु ही ते
सहसबाहु दशबदन आदि नृप बचे न काल बली ते॥ हम हम करि धन धाम
संवारे अंत चले उठि रीते॥ सुत बनितादि जानि स्वारथरत न करु नेह सब

हीनै॥ अंतहुँतोहिं तजहिंगे पामर तूनतजहिं अवहीनै॥ अवनाथहिंअ
नुरागुजागुजड़त्याग दुरासा जीनै॥ बुझैनकामअगिनितुलसीकहुँ विषय
भोगबहुघीनै॥१९९॥ काहेकोफिरत मूढ़मनधायो॥ तजिहरिचरण
सरोज सुधारस रविकरजल लय लायो॥ त्रिजगदेवनरअसुरअपरजग
योनिसकलभ्रमआयो॥ गृहवनितासुतबंधुभये बहुमातुपितानिजजायो
जातेनिरयनिकायनिरंतर सोइनतोहिंसिखायो॥ तवहितहोइकटैभ
वबंधन सोमगतोहिंनबतायो॥ अजहुँविषयकहुँयत्नकरत यद्यपिबहु
विधिडहकायो॥ पावककामभोगघृततेंसठ कैसेंपरतबुझायो॥ विषय
हीनदुखमिलैविपति अतिसुखसपनेहुनहिंपायो॥ उभयप्रकारप्रेतफ
वकज्यों धनदुखप्रदश्रुतिगायो॥ छिनछिनछीनहोतजीवनदुर्ल
भतनवृथागवायो॥ तुलसिदासहरिभजहिंआसतजि कालउरगजगखा
यो॥२००॥ तांबेसोपीठमनहुँतनपायो॥ नीचमीचजानतनसीसपरईशनि
पटबिसरायो॥ अवनिरवनिधनधामसुहृदसुतकोनइन्हहिंअपनायो॥
काकेभगगयेसंग किसबसनेहछलछायो॥ जिन्हभूपनजगजीति
बांधितमअपनीबांहवसायो॥ तेऊकालकलेऊकीन्हे तूगनतीकवआ
यो॥ देखिविचारिसारकासांचो कहानिगमनिजगायो॥ भजहिंनअजहुँ
समुझितुलसी तेहिं जेहिंमहेशमनलायो॥ लाभकहामानुषतनुपाए॥
कायवचनमनसपनेहुँकबहुँक घटतनकाजपराए॥ जोसुखसुरपुरनरक
हवनाआवतबिनहिंबुलाए॥ तेहिसुखकहँबहुयत्नकरतमनसमुझतनाहिं
समझाए॥ परदारापरद्रोहमोहवसकिएमूढ़मनभाए॥ गर्भवासदुखरासिज
ातनातीव्रविपतिविसराए॥ भयनिद्रामैथुनअहारसबकेसमानजगजाए॥ सुदु
र्लभतनधरिनभजेहरिमदअभिमानगंवाए॥ गईनर्निजपरिबुद्धिसुद्धि
हैरहेनरामलयलाए॥ तुलसिदासयहिअवसरवीतेकापुनिकेपछिताए
॥२०१॥ काजकहानरतनधरिसारयो॥ परउपकारसारश्रुतिकोसोधोखेहु
मैंनविचारयो॥ द्वैतमूलभयशूलशोकफलभवतरुटरैनटारयो रामभज नीवा

णकुठार लैसोनहिं काटि निवारयौ॥ संशयसिंधुनामबोहितभुजनिज
आंन्मामितारयौ॥ जन्मअनेकविवेकहीनवहुयोनिभ्रमतनहिंहार
यौ॥ देखआनंकीसहजसंपदाद्वेषअनलमनजारियौ मम दमदर्पदीन
पालनशीलहियहरिनमंभारयौ॥ प्रभुगुरुपितासखारघुपतिमैं
मनक्रमबचनबिसारयौ॥ तुलसिदासएहित्रासशरणाराखहिंजेहि
गहेउधारयौ॥३॥ श्रीहरि गुरुपदकमलभजहु मनतजिअभिमान॥ जेहिं
सेवतपाइयहरिसुखनिधानभगवान॥ परिवाप्रथमप्रेमविनुरामिलनअ
तिदूरियद्यपिनिकटहृदयनिजरहैसकलभरिपूरि॥ दुइजद्वैतमतिछाडि
रहिमहिमंडलधीर॥ विगतमोहमायामदहृदयसदारघुवीर॥ तीजित्रि
गुणपरपरमपुरुषश्रीरमणमुकुंद॥ गुणसुभावत्यागेविनुदुर्लभपरमानं
द॥ चौथिचारपरिहरहुबुद्धिमनचितअहंकार॥ बिमलविचारपरमपद
निजसुखसहजउदार॥ पांचइंपावपरसरससब्दगंधअरुरूप॥ इनद
करकदानकीजियबहुरिपरबभवकूप॥ छठिषटकोंकरियजपज
निकसुतापतिलायी॥ रघुपतिकयावारिविनुनहिं बताइलोभागि
सातेसप्तधातुनिर्मितजनकरियविचारि॥ तेहीतनकेरएकपलकीजि
येपरउपकार॥ आफइआठप्रकृतपरानिर्विकार निर्विकारश्रीराम॥ के
हिप्रकारपाइयेहरिहृदयबसहिंबहुकाम॥ नवमीनवद्वारपुरवसिजे
हिनआपुनकीन्ह॥ तेनरयोनिअनेक भ्रमतदारुणदुखदीन्ह॥ दस
ईदसहुकरसंयमजोनकरियजियजानि॥ साधनबृथाहोहिंसबमिल
हिंनसारंगपानि॥ एकादसीएकमनवसकैसेबहुकारिमनजाइ॥ सो
इव्रतकरिफलपावआवागमननसाइ॥ द्वादसीदानंदेहुअसअभय
होइत्रैलोक॥ परहितनिरतसोमारखबहुरिनव्यापैशोक॥ तेरसितीनअव
स्थानजहुभजहुभगवंत॥ मनकर्मबचनअगोचरव्यापकवायअनंत॥
चौदसचौदहभुवनअबरचररूपगुपाल॥ भेदगएबिनरघुपतिअतिन
हरहिंजगजाल॥ एनहुप्रेमपाकिसहरिसुजानहिंदास॥ विविधि

मूलदोलरंजारियेयज्ञारियेखेलिये अस फागु॥जौजियचहसिपरमसुख
तौएहिमारगलागु॥श्रुतिपुराणबुधिसंमतचाचरिचरितमुरारि॥करि
विचारभवतरियपरियनकबहूंजमधारि॥संशयशमनदमनदुखसु
खनिधानहरिएक॥साधुकृपाविनमिलहिनकरियउपायअनेक॥भव
सागरकहंनावशुद्धसंतनकेचरण॥तुलसिदासप्रयासविनमिलहिंराम
दुखहरण॥२०४रागकान्हरा॥जोमनलागैरामचरणअस॥देहगेहसुत
वितकलित्रमहंमगनविनयत्नकियेजस॥द्वंदरहितगतमानज्ञानरति
विषयविरतघटाइनानाकस॥सुखनिधानसुजानकोशलपतिह्वैप्र
सन्नकहुक्यौंनहोंहिवस॥सर्वभूतहितनिर्व्यलीकचितभक्तिप्रेमदृढ़
नेमएकरस॥तुलसिदासयहहोइतवहिंजवद्रवैईशजिहिंहतेसी
सदस॥२०५॥जौमनभजौचहैहरिसुरतरु॥तौतजिविषयविकार
सारभजिअजहूंजेजोमैंकहौंसोईकरु॥समसंतोषविचारविमलअति
सतसंगतिएचारिदृढ़करिधरु॥कामक्रोधअरुलोभमोहमदरागद्वे
षनिशेषकरिपरिहरु॥श्रवनकथामुखनामहृदयहरिसिरप्रणामसे
वाकरिअनुसरु॥नैननिनिरखिकृपासमुद्रहरिअगजगरूपभूपसीतावरु
यहभक्तिवैराग्यज्ञानयहहरितोषनयहसुभव्रतआचरु॥तुलसिदा
शिवमतमारगयहिचलतसदासपनेहुनाहिनडरु॥२०६॥नाहिनऔरको
उशरणलायकदूजोश्रीरघुपतिसमविपतिनिवारण॥काकोसहजसुभा-
उसेवकवसकाहिप्रणतपरप्रीतिअकारण॥जनगुणअलपगणत
सुमेरुकरिअवगुणकोटिविलोकविसारण॥परमकृपालभक्तचिंताम
विरदपुनीतपतितजनतारण॥सुमिरतसुलभदासदुखसुनिहरिचलत
तुरतपटपीतसभारण॥साखिपुराणनिगमआगमसवजानतद्रुपद
सुताअरुवारण॥जाकोयशनिर्मलगावतकविकोविदजिन्हकेलोभ
मोहमदमारण॥तुलसिदासतजिआससकलभजिकोशलपतिमुनि
वधूउधारण॥२०७॥भजिवेलायकसुखदायकरघुनायकसरिसशरण

प्रभुदूजोनाहिंन॥आनंदभवनदुखदवनशोकशमनरमाधवगुणग
णनेंसिरहिंन॥अरतिअधमकुजातिकुलखलपतितसभीतकहूंजे
समहिंन॥सुमिरतनामबिबसहूंवारकपावतसोपदजहांसुरजो
हिंन॥जाकेपदकमललुब्धमुनिमधुकरविरतजेपरमसुगतिहुलुभा
हिंन॥तुलसिदाससठतेंहिंनभजसिकसकारुणीकजोअनाथहिंदाहिं
न॥२०८॥रागकल्यान॥नाथसोंकौनविनतीकहिसुनावौंत्रिविधिअन
गणितअवलोकिअघआपनेशरणसनमुखहोतसकुचिरनावौं॥
विरचिहरिभक्तिकौवेषवरटाटिकाकपटदलहरितपल्लवनिरचिछा
वौंनामलगिलाइलासाललितवचनकहिव्याधज्योंविषयविहंगनिबझा
वौंकुटिलसतकोटिमेरेरोमपरवारियहिसाधुगनतीमैंपहिलेहिंगिना
वौं॥परमबर्बरखर्बगर्वपर्वतचढ़ौअज्ञसर्वज्ञजनमनिजनावौं॥सांचिकि
धौंझूठिमोकौंकहतकोउरामरावरोहौंहंतुम्हारोईजनकहावौं॥विरुद
कीलाजकरिदासतुलसिहिंदेवलेहुअपनाइअबदेहुजिनवावौं॥२०९॥नाहिनै
नाथअवलंबमोहिआनकी॥कर्ममनवचनपनसत्यकरुणानिधेएकगा
तिरामसंवदीयपरमाणकी॥कोहमदमोहममतायतनजानिमनबात
नहिजातिकहिज्ञानविज्ञानकी॥कामसंकल्पउरनिरखिबहुवासनहिंआ
सनहिएकसंतोषआकनिवीराणकी॥वेदबोधितकर्मधर्मविनआगमआनिज
हृदयजियलालसाअमरपुरजाहुकी॥सिद्धसुरमनुजदनुजसारिसेवतकठि
नद्रवहिंहठयोगदिएभोगबलिप्राणकी॥भक्तिदुर्लभपरमशंभुशुक
मुनिमधुपप्यासपदकंजमकरंदमधुपानकी॥पतितपावनसुनतनामवि
श्रामकृतभ्रमितपुनिसमुझिचितग्रंथअभिमानकी॥नरकअधिकार
ममघोरसंसारतमकूपकहिभूपमशककेआपनकी॥दासतुलसीसोउत्रा
संनहिंगणितभनसुमिरिगुहगृद्धगजज्ञातिहनुमानकी॥२१०॥औरक
हांठौररघुवंशमणिमेरे॥पतितपावनप्रणतपालअशरणशरणबांकु
रेविरुदविरदैतकिहिकेरे॥समुझिजियदोषअतिरोषकरिरामकेकरतवि

हिकान विनतीबरनयौरे॥ नदांथिहै निडरहौंकहैं। करुणासिंधुकौंवर
हिजात सुनिबातबिनहेरे॥मुखपहचित्र तुवसेवके पुराउरेरामनिहि
कविहिकामादिगणाघेरे॥ अगमअपवर्ग अरुस्वर्गसुकृतैकफलनाभ
वलकैयौंनवसैंयमनगणानेरे॥कतहुवहिंठाउकहांजाउंकोशलनाथरी
नवितुहीनहेंबिकलबिनडरे॥दासतुलसिहिंवासुदेहिअबकरिकृपा
वसततगजगरहव्याधादिजेहिखेरे॥२११॥कबहुंरघुवंशमणिसोउकृपा
करहुगे॥जेहिकृपाव्याधिगजविप्रखलनरतरेतिनहिंसममानिमोहि
नाथउद्धरहुगे॥योनिबहुजन्मकिएकर्मखलविविधविधिअधमआच
रणकछुहृदयनहिंधरहुगे॥दीनहितअजितसर्वज्ञसमरथप्रणतपाल
चितमृदुलनिजगुणानिअनुसरहुगे॥मोहमदमानकामादिखलमंडली
सकुलनिर्मूलकरिदुसहदुखहरहुगे॥योगजपध्यानतेअधिकअ
तिअगलहृदभक्तिदैपरमसुखभरहुगे॥मंदजनमौलिमणिसकल
साधनहीनकुटिलमनमलिनजियजानिजोडरहुगे॥दासतुलसीवेद
विहितविरदविलोकियशनाथकेहिभांतिदुस्तरहुगे॥२१२॥रागकेदारो॥र
घुपतिविपतिदवन॥परमकृपालप्रणतप्रतिपालकपतितपावन॥कूरकु
टिलकुलहीनदीनअतिमलिनयमन॥सुमिरतिरामनामपठएसवअप
नेभवन॥गनपिंगलाअजामिलसेखलगनेधौंकवन॥तुलसिदासप्रभु
कौहिदीनहगतिजानकीरवन॥२१३॥हरिसमआपदाहरण॥नहिंको
उसहजकृपालदुसहदुखसागरन॥गजनिजबलअवलोकिकमलपद
गह्यौजोशरण॥दीनवचनसुनिचलेगरुडतजिसुनाभयधरण॥द्रुपदसुता
कहंलग्यादुसासनभगिनकरण॥हाहरिपाहिकहतिपूरेपटविविधवर
णाईहैजानिसुरनरमुनिकोविदसंतनचरण॥तुलसिदासप्रभुकोनअभय
कियोनगउद्धरण॥२१५॥ऐसीकौनप्रभुकीरीति॥विरदहेतुपुनीतपरिहरी
पांवरनिपैप्रीति॥गईमारनपूतनाकुचकालकूटलगाई॥मातुकीगतिदईताहि
कृपाजारोगई॥कामनोहनगोपिकनपरकृपाअतुलितकीइ॥जगतजान

विरंचिजिनहकेचरणकीरजलीन॥नेमतेंसिसुपालदिनप्रतिदेतगनिगनि
गारि॥कियोलीनसोआपुमेंहरिराजसभामझारि॥व्याधचित्तदैचरण
मारयोमूढमतिमृगजानि॥सोसदेहसुलोकपठयोप्रगटकरनिजवानि॥
कौनतिनहकोकहैजिनहकेसुकृतअरुअघदोउ॥प्रगटपातकरूपफल
सीशरणराख्योसोइ॥२१५॥श्रीरघुवीरकीयहवानि॥नीचहूसोकरतनेह
सुप्रीतिमनअनुमानि॥परमअधमनिषादपांवरकौनताकीकानि॥लियो
सोउरलाइसुतज्योंप्रेमकीपहिचानि॥गद्धकौनदयालजोविधिरच्योहिंसास
नि॥जनकज्योंरघुनाथताकहुदियोजलनिजपानि॥प्रकृतमलिनकु
जातिशवरीसकलअवगुणखानि॥खाततांकेदियेफलअतिरुचिवखा
निवखानि॥रजनिचरअरुअरिपुविभीषणशरणआयोजानि॥भरतज्यों
उठितांहिभेटेदेहदसाभुलानि॥कौनसौम्यसुशीलवानरजिन्हहिसुमिर
तहानि॥कियेतेसबसखापूजेभवनअपनेआनि॥रामसहजकृपालको
मलदीनहितदिनदानि॥भजहिऐसेप्रभुहितुलसीकुटिलकपटनठानि
२१६॥हरितजिऔरभजिएकाहि॥नाहिनेकोउरामसोममताप्रणतपरजा
हि॥कनककसिपुविरंचकोजनकर्ममनअरुवात॥सुतहिदुखवततविधिन
वरज्योंकालकेवरजात॥शंभुसेवकजानजगवहुवारदियेदससीस॥करतरा
मविरोधसोसपनेहुनहरकैमोईश॥औरदेवनकीकहाकहौस्वारथहकेमी
त॥कबहुनकाहूराखिलियोकोउशरणगयोसभीत॥कोनसेवतदेतसंपति
लोकहूयहरीति॥दासतुलसीदीनपरएकरामहीकेप्रीति२१७जौपैदूस
राकोउहोइ॥तौहौंवारहिंवारप्रभुकतदुखसुनावौरोइ॥काहिममतादीन
परकाकोपतितपावननाम॥पापमूलअजामिलहिकेहिंदियोआपनो
धाम॥रहेशम्भुविरंचिसुरपतिलोकपालअनेक॥शोकसरिवूडतकरीसहिद
ईकाहुनटेक॥विपुलभूपतिसदसिमहंनरनारिकह्यौप्रभुपाहि॥सकलसमरथ
रहेकाहुनवसनदीन्हेनाहि॥एकमुखक्योंकहौकरुणासिंधुकेगुणनाथ॥भक्ति
हितधरिदेहकाहुनकियोकोशलनाथ॥आपुसेकहिसौंपियेमोहिजोपैअतिहितम्रिन

न॥ दास तुलसी और विधि क्यौं चरण परिहरि जान॥ २१८ कबहुँ रि
खाइहौ हरिचरणौ शमन सकल कलेश कलिमल सकल मंगल करण॥
सरद भव सुन्दर तरुण वारिज वरण॥ लच्छि लालित कर जलज छवि अनूप
म धरण॥ गंग जनक अनंग अरि प्रिय कपट बटु बलि छरण॥ विप्र तिय
नृग बधिक के दुख दोष दारुण दरण॥ सिद्ध सुर मुनि वृंद बंदित सुख सुहृद स
कल शरण॥ सकृत उर आनत जिन्हहि जन होत तारण तरण॥ कृपासिंधु
सुजान रघुपति प्रणति आरति हरण॥ दास आस पियास तुलसी राम चा
हत मरण॥ २१९॥ द्वार हौं भोर ही कौ आजु॥ रटत रिरिहा आरि औरन कौर ही
कौ काजु॥ कलि कराल दुकाल दारुण सब कुभांति कुसाजु॥ नीच जन मन ऊंच
जैसी कोढ मैं की खाजु॥ हहरि हिय मैं सदय बूझ्यौ जाइ साधु समाज॥ उन्ह प॥
धी समुझाय मो कहुँ जाचु कोशलराजु॥ दीन दसरथ राय कौ तू बनाइत सि
नाज दानि दसरथ राय कौ तू बनाइत सिरताजु जन्म कौ भूख्यौ॥ [illegible]
[illegible] निवाजु॥ पेटभरि तुलसी जिवाइय भक्ति सुधा सुनाजु॥ २२०॥ कीजिये
संभार कोशलराय॥ और ठौर न और गति अवलंब नाम बिहाय॥ बूझिआ
नी आपनौ हितु आप बाप न माय॥ राम रावरौ नाम गुरु सुर स्वामि सखा स
हाय राम राजन चले मान समानि नके छल छाय॥ कोपतेहि कलिकाल
कायर मुएरु घालन घाय लेत के हरिसौं बयरु ज्यौं भेक हनि गोमाय ज्यौं हिय
म गुलाम जानि निकाम देन कुदाय॥ सकनिया कै कपट करतब अमित अन
य अपाप सुखी होइ प्रवसत होत परिछित हि पाछि नाय॥ कृपासिंधु बिलोकि
आसिहन यन के सांस निसाय॥ समुझि आयौ देवदीन दयालु देखन पाय निक
रवोलिन बरांजिरो बलि जाउँ हनियन हाय देखिहैं हनुमान गोसुरवना हरानिके
न्याय अरुण मुख भृकुटि विकट पिंगल नैन रोष कषाय वीर सुमिरि समीर को घटि है
चपल चित चाय विनय सुनि विहंसे अनुज सों वचन के कहि भाय भली कही कि
हो लखन हू हसि कोहे सकल बनाय॥ २२१॥ दीन हित बिरद सो सुनि सुजन सदन व
धाय॥ मिटैं संकट सोच पोच प्रपंच पापनि काय॥ पेखि प्रीति प्रती- ८

जि जन.पर अगुण अनधम्ममाय॥ दासतुलसी कहत मुनि जय जय ड
गाय॥२२१॥ नाथ कृपाही को पंथ चितवत दीन हौं दिनराति॥ होइ धौं के
हि काल दीन दयाल जानि न जाति सगुण ज्ञान विराग भक्ति सुसाधन की
पांति॥ भजी विकल बिलोकि कलि अघ अवगुणनि की थाति॥ अति
अनीति कुरीति भई भुइं तरणि हूं तें ताति॥ जाऊं कहां बलि जाऊं कहूं न ठाऊं म
ति अकुलाति॥ आस सहित न आपनो कोउ बाप कठिन कुभांति॥ स्याम घन सींचि
ए तुलसी सालि सफल सुखाति॥२२२॥ बलि जाऊं और कासों कहौं सद
गुण सिंधु स्वामि सेवक हित कहुं कृपानिधि सीलहौं॥ जहं जहं लोभ लोल ल
लाच बसनि जहित चितु चाहनि चहौं॥ तहं तहं तरणि तकत उलूक ज्यों भट
कतरु कोटर गहौं॥ काल सुभाव कर्म बिचित्र फलदायक सुनि सिर धुनि रहौं
मोको तो सकल सदा एकहि रस दुसह दाह दारुण दहौं उचित अनाथ होइ
दुखभाजन भयो नाथ किंकर न हौं॥ अब रावरो कहाय न बूझिए शरणपाल सां
सति सहौं॥ महाराज राजीव बिलोचन मगन पाप संताप हौं तुलसी प्रभु जब
तब जेहि तेहि विधि राम निबाहे निरबहौं २२३ आपनो कबहुं करि जानि हौं॥ रा
म गरीब निवाज राजमणि बिरद लाज उर आनिहैं॥ शील सिंधु सुंदर सब
लायक समरथ सद्गुण खानि हौं पाल्यौ है पालत पुनि पालहुगे प्रणत प्रेम
पहिचानि हौं॥ वेद पुराण कहत जग जानत दीन दयाल दिन दानि हौं कहि आ
वत बलि जाउं मनहु मेरी वार बिसारे बानि हौं आरत दीन अनाथनि के हित
मानत लौकिक कानि हौं॥ है परिणाम भलो तुलसी को शरणागत भय भनि
हौं॥२२४॥ रघुवरहि कबहुं मन लागिहै॥ कुपथ कुचालि कुमति कुमनोरथ
कुटिल कपट कब त्यागिहै॥ जानत गरल अमिय बिमोह बस अमिय गन
त करि भागिहै॥ उलटी रीति प्रीति अपनी की तजि प्रभु पद अनुरागिहै॥ आ
खर अरथ मंजु मृदु मोदक राम प्रेम पाग पागिहै॥ ऐसे गुण गाइ रिझाइ स्वा
मी सों पाइहै जो मुंह मांगिहै॥ तू एहि विधि सुख सैन सोइ है जिय की जरनि भ
रि भागिहै॥ रामप्रसाद दास तुलसी उर राम भक्ति योग जागिहै॥२२५॥व

भरोसो आवै है उर ताके ॥ कै कहुं लहै जो रामहि सो साहिब कै आप
नो है बल जाके ॥ कै कलि काल कराल न सूझत मोह मार मद छाको
कै सुनि स्वामि सुभाउ न रह्यो चित जो हित सब अंग थाके ॥ हौं जानत भ
लि भांति अपनपो प्रभुजू सो सुन्यो न साके ॥ उपल भील खग मृग रजनीचर
भले भये करतब काके ॥ मो को भयो राम नाम सुरतरु सो प्रसाद कृपाल कृ
पाके ॥ तुलसी सुखी निसोच राज ज्यौं बालक माय बबाके ॥ २२६ ॥ भरोसो जा
हि दूसरो सो करो ॥ मोकों तो राम के नाम कल्पतरु कलि कल्यान फरो ॥
कर्म उपासन ज्ञान वेद मत सब सब भांति खरो ॥ मोहि तो सावन के अंधहि
ज्यों सूझत रंग हरो ॥ चाटत रह्यो स्वान पातरि ज्यों कबहुं न पेट भरो ॥ सो हौं सु
मिरत नाम सुधा रस पेखत परुसि धरो ॥ स्वारथ औ परमारथ हू को है कुंज
र नरो ॥ सुनियत सेतु पयोधि पखानिन करि कपि कटक तरो ॥ प्रीति प्र
तीति जहां जाकी तहं ताको काज सरो ॥ मेरे तो माय बाप दोउ आखर हौं
सिसु अरनि अरो ॥ शंकर साखि जो राखि कहौं कछु तो जरि जीभ गरो ॥
अपनो भलो राम नाम हि ते तुलसिहि समुझि परो ॥ २२७ ॥ नाम राम रावरो
ई हितु मेरे ॥ स्वारथ परमारथ साथिन सों हौं भुज उठाइ कहौं टेरे ॥ जननि
जनक तज्यो जन्मि कर्म बिनु बिधिहु सृज्यो हौं अवडेरे ॥ मोसे कोउ कोउ
कहत राम ही को सो प्रसंग केहि केरे ॥ फिर्यो ललात बिनु नाम उदर ल
गि दुख उदुखित मोहि हेरे ॥ नाम प्रसाद लहत रसाल फल हौं अब बबुर बहे
रे ॥ साधन साधु लोक परलोक हि सुनि गुन यतन घनेरे ॥ तुलसी के अवलंब
नाम हि को एक गांठि कोटि फेरे ॥ २२८ ॥ प्रिय न राम नाम तें जाहि रामो ॥ ता
को भलो कठिन कलिकालहु आदि मध्य परिनामो ॥ सकुचि न समुझि ना
म महिमा मद मोह लोभ कोह कामो ॥ राम नाम जप निरत सुजन पर कार
त छांह घोर घामो ॥ नाम प्रभाव सही जो कहै कोउ सिला सरोरुह जामो
॥ जो सुनि सुमिर नाम भाजन भइ सुकृत शील भील भामो ॥ बालमी
क अजामिल के कछु हुतो सुभ धाम न सामो ॥ उलटे पलटे ८

नाम महा नमगुंजनि जिनलखासों॥प्रमतें अधिक नाम कां तब जो
कियनगासानगामों॥भएकजाइदाहिने जोजपि तुलसिदासंहुस्वा
मो॥२२९॥गोरोंजीह जो कहौं औार कहौं॥जानकीजीवनजन्मजन्म
जगजयायो तिहारोही कोरकाढं तीन लोकनिहिं कालेर खनसहंद
राकेर जोर कोहौं॥तुम्हसों कपट करि कल्प कल्प कामि हैहौं नरकघोर
कोरहौं॥कहा भयो ज्यों मन मिलिकालिकालहिं कियो भुरुर भोरको
हौं॥तुलसिदास सीतल नितिएहिबलबडेठिकानेठोरकोहौं॥२३०॥
अकारण कोहितू और कोहै॥बरुद गरीब निवाज कोनकौं मोहजासु
जन जोहै॥छोटेबडेबहुत सब स्वारथजो बिरंचि बिरचौहै॥कोलकु
टिलकपि भालुपालिबो कौन कृपालहिसोहै॥काको नाम अनख आ
लसकहैं अघ अवगुण बिनिछोहै॥केतुलसी सोकुसेवक संग्रहो अस
रसबरसिनसांईदोहै॥२३१॥औारमेरको है काहिकहिहौं॥रंकराज
ज्यों मनकोमनोरथ जेहिसुनाइसुख लहिहौं॥यमयातनाथोनिसक
सबसहेहहु सहुअरु सहिहौं॥ताको ये अगम सुगम तुम्हको प्रभुत
उफल चारिन चहिहौं॥खेलिबेको खगमृगतरु किंकिर हैरामरो राम
हों रहिहौं॥एहिनातेनरकहुसचुयाबिनपर्मपरहदुख दहिहौं॥इत
नीजियलालसादासके कहत पापनहिं गहिहौं॥दीजवचनकिहैआ
निएतुलसीको पणनिरबहिहौं॥२३२॥दीनबंधुदूसरो कहां पावों॥को
तुमु बिनु परपीरपाइहै कोहि दीनता सुनावों॥प्रभुअकृपाल कृपालअ
लायकजंहजंहचितहि डुलावों॥इहैसमुझिसुनि रहौं मौन ही कोहिभ्र
म कहांगवायो॥गोपर बूडिबेके योगकर्म करों बातनि ठजलंघिथहा
वो॥अजितलालचीकाय किंकर मन मरत एबरो कहा वो॥तुलसीप्रभुजि
पकीलानतसबअपनोंसो कछु कजनावो॥सोईकी जैजेहि भांतिछो
डिछलद्वारपरो गुणगावो॥२३३॥मिनोरथमनको एकै भांति॥चाहतमुनि
यमअगमसुकृतफलपबसाअघनअघाति॥कर्म....कालिजन्मरु

संघरमत्ति बिमोह मद मांत्ति ॥ करतकु योग कोटि कौं पै यतत परमारथ
पथ सांति ॥ सेइ साधु गुरु सुनि पुराण श्रुति बूझेउ राग बाजी तांति ॥ तुलसी
प्रभु सुभाउ सुरतरु कौ सो ज्यों दरपन रव कांति ॥ २३४ ॥ जन्म गयौ बादि
ह वर बीति ॥ परमारथ पालेन परयौं कछु अनदिन अधिक अनीति
॥ खेलत खालत लरिक पन गो चलियौ वनयुवति लियो जीति ॥ रोग
वियोग शोक श्रम संकुल वडी वय वृथहि अनीति ॥ राग रोष ईरषा विमो
ह वस रुचीन साधु समीति ॥ कहेन सुनी गुण गण रघुपति के भई न राम
पर प्रीति । हृदय दहत पछिताय अनल अव सुनत दुसह भव सीति ॥ तु
लसी प्रभुतें होइ सो कीजिय समुझि बिरद की रीति ॥ २३५ ॥ ऐसे हि ज
न्म समूह सिराने भारानाथ रघुनाथ से प्रभु तजि सेवत चरण विराने ॥ जे
जड जीव कुटिल कायर खल केवल कलि म[illegible] सराने ॥ सूखत वदन प्र
संसत तिन्ह कहुहौं अधिक रिसाने ॥ सुख हित कोटि उपाय निरंतर
करतन पाप पिराने ॥ सुख हित कोटि उपाय निरंतर करतन पाय पिरा
ने ॥ सदा मलीन पंथ के जल ज्यों कबहुं न हृदय थिराने ॥ यह दीनता दूरि
करिवे कों मैं अमित यतन उर आने ॥ तुलसी चित चिन्ता न मिटै बिन चिंता
मणि म्पहिचाने ॥ २३६ ॥ जौ पै जिय जानकी नाथ न जाने तौ सब कर्म ध
र्म्म दायक ऐसोइ कहत सयाने ॥ हैं सुर सिद्धि मुनीश योग विदे वेद पुराण
बखाने ॥ पूजा लेन देत पलटे सुख हानि लाभ अनुमाने काको नाम धोखे
हु सुमिरत पातक पुंज सिराने ॥ बिप्र वधिक गज ग्रद्ध कोटि खल कोन के पे
ट समाने ॥ मेरु से दोष दूर करि जन के रेणु से गुण उर आने तुलसिदास तेहि
सकल आस तजि भजहि न अजहु अयाने २३७ काहे न रसना रामहि गावहि
निशि दिन पर अपवाद वृथा कत रटि रटि राग बढावहि नर मुख सुन्दर मंदि
र पावन बसि जिनि ताहि लजावहि शशि समीप रहि त्यागि सुधा कत रवि
कर जल कहु धावहि ॥ काम कथा कलि कैरव चंदिनि सुनत श्रवन दै भावहि ॥
तिहि तिहरकि कहि हरि कल कीरति करण कलंक न सावहि जातरूप मति युक्ति

रुचिरमणिरचिराचि हारवनावहि॥ शरण सुखद रवि कुल सरोजरवि रा
मनृप हि पहिरा वहि॥ वादविवाद स्वादतजि भजि हरिसरस चरनचित
लावहि॥ तुलसिदास भवतरहिं तिहूंपुर तू पुनीत यश गावहि॥२३८॥ आप
नोहित औरसों जो पै सूझै तौ जन तन पर अछत सीस सुधि कौं कबंध ज्यों
जूझै निज अवगुण गुण राम रावरे लखि मुनि मति मन सूझै रहनि कहनि समु
झिनि तुलसी की को कृपाल विन बूझै॥२३९॥ जाको हरि दृढ करि अंग करयो॥
सोइ सुशील पुनीत वेद विद विद्या गुणनि भरयो॥ उत्पति पंडु सुतन की
करनी सुनि सतपंथ डरयो॥ ते त्रैलोक्य पूज्य पावन यश सुनि सुनि लोक तर
यो॥ जो निज धर्म वेद बोधित सो करत न कछु विसरयो॥ विन अवगुण कृकल
लास रूप सम जन्म कनक गहि उघरयो॥ ब्रह्मविशेष ब्रह्मांड दहन क्षम गर्भ न नृप
निजरयो॥ अजर अमर कुलिसहुं नाहिन बध सो पुनि फेन मरयो॥ विप्र अजा
मिल अरु सुरपति तें कहा जो नहिं बिगरयो॥ उनहुं कौ कियो सहाय बहुत उर
कौ संताप हरयो॥ गणिका अति कदर्ज तें जगमहुं अघन करत उरयो॥ ति
नकौ चरित पवित्र जानि हरि निज हृदभवन धरयो॥ केहि आचरण भलो मानै
प्रभु सो तौ न जान परयो॥ तुलसिदास रघुनाथ कृपा कौ चितवत पंथ रह
यो॥२४०॥ सोइ सुकृति सुचि साचो जाहि तुम रीझै॥ गणिका गीध वधि
क हरिपुर गए लै आरसी प्रयाग कब सीझै॥ कबहुं न डग्यो निगम मग ते पग
नृग जग जानि जिते दुख पाए॥ गज धौं कौन दीक्षित जाके सुमिरत लै सुना
भ वाहन तजि धाए॥ सुरस्नान विप्र विहाय बडे कुल गोकुल जन्म गोप गृह ली
न्हो॥ बायों दियो विभौ कुरुपति कों भोजन जाइ विदुर घर कीन्हो॥ मानत भ
लेहि भलो भक्तनहिं कछु करनि पारथहि जनाई॥ तुलसी सहज सनेह
राम बस और सबै जल की सी चिकनाई॥२४१॥ तब तुम्ह मोहूं से सठनि हठि
गति देते॥ कैसेहू नाम लेत कोउ पामर सुनि सादर आगे ह्वै लेते पाप खानि जि
य जानि अजामिल यमगण तमकि तए ह्वे ताको भैने लिए फटउ इ हवले का
मींचन शीस तजत सब भए रिस रते गौन मति य गज ग्राह विटप की पैठना पहिनी कमानि

संघरमति विमोह मद मांति॥ करतकु योग कोटि क्यों पैयत परमारथ पथ सांति॥ सेइ साधु गुरु सुनि पुरान श्रुति बूझेउ राग वाजी तांति॥ तुलसी प्रभु सुभाउ सुरतरु कौसो ज्यौं दरपन रव कांति॥२३४॥ जन्म गयौ वादिहि वर बीति॥ परमारथ पालेन परयौ कछु अनुदिन अधिक अनीति॥ खेलत खालन लरिकपन गौ चलियौ वन युवति लियौ जीति॥ रोग वियोग शोक श्रम संकुल वडी वय वृथहि अनीति॥ राग रोष ईरषा विमोहवस रुचीन साधु समीति॥ कहेन सुनी गुन गन रघुपति के भई न राम परप्रीति॥ हृदय रहत पछिताय अनल अव सुनत दुसह भव सीति॥ तुलसी प्रभु तें होइ सो कीजिये समुझि विरद की रीति॥२३५॥ राखिहि जन्म समूह सिराने॥ नाथ रघुनाथ से प्रभु तजि सेवत चरन विराने॥ जे जड़ जीव कुटिल कायर खल केवल कलि मल साने॥ सूखत वदन प्रसंसत तिन्ह कहँ हृतें अधिक रिसाने॥ सुख हित कोटि उपाय निरंतर करतन पाय पिराने॥ सुख हित कोटि उपाय निरंतर करतन पाय पिराने॥ सदा मलीन पंथ के जल ज्यों कबहुं न हृदय थिराने॥ यह दीनता दूरि करिवे कौं में अमित यतन उर आने॥ तुलसी चित चिंता न मिटै विन चिंतामणि पहिचाने॥२३६॥ जो पै जिय जानकी नाथ न जाने तौ सब कर्म धर्म्म श्रम दायक ऐसोइ कहत सयाने॥ हैं सुर सिद्ध मुनीश योगविद वेद पुराण वखाने॥ पूजा लेन देत पलटे सुख हानि लाभ अनुमाने काको नाम धोखे हूं सुमिरत पातक पुंज सिराने॥ बिप्र वधिक गज ग्राह कोटि खल कौन के पेट समाने॥ मेरु से दोष दूरि करि जन के रेणु से गुण गाठर आने तुलसिदास तेहि सकल आस तजि भजहुं न अजहुं अयाने॥२३७॥ काहे न रसना रामहि गावहि निशिदिन पर अपवाद वृथा कत रटि रटि राग वढावहि नर मुख सुन्दर मंदिर पावन वसि जिनि ताहि लजावहि शशि समीप रहि त्यागि सुधा कत रवि कर जल कहुं धावहि॥ काम कथा कलि कैरव वंधिनि सुनत श्रवन दै भावहि॥ तिनहि हटकि कहि हरि कल कीरति करण कलंक न सावहि जातरूप मति युक्ति

रुचिरं मणि रचि राचि हार बनावहि ॥ शरण सुखद रवि कुल सरोज रवि रा
म नृपहि पहिरावहि ॥ वाद विवाद स्वाद तजि भजि हरि सरस चरित चित
लावहि ॥ तुलसिदास भव तरहिं तिहूं पुर तू पुनीत यश गावहिं ॥ २३८ ॥ आप
नो हित और सों जो पै सूझै तौ जन तन पर अछत सीस सुधि क्यों कबंध ज्यों
जूझै ॥ निज अवगुण गुण राम रावरे लखि सुनि मति मन रूझै रहनि कहनि समु
झिनि तुलसी की को कृपाल विन वूझै ॥ २३९ ॥ जाको हरि दृढ करि अंग करयो ॥
सोइ सुशील पुनीत वेद विद्या गुण निभरयो ॥ उत्पति पंडु सुतन की
करनी सुनि सतपंथ डरयो ॥ ते त्रैलोक्य पूज्य पावन यश सुनि सुनि लोकन र
यो जो निज धर्म वेद बोधित सो करत न कछु विसरयो विनु अवगुण कृत कृ
पा सरूप मज्जन करि उघरयो ॥ ब्रह्म वशिष ब्रह्मांड दहन क्षम गर्भ नृप
ति जरयो ॥ अजर अमर कुलिसहु नाहि न वध सो पुनि फेन मरयो ॥ विप्र अजा
मिल अरु सुरपति ते कहा जो नहिं विगरयो ॥ उनह कौ कियो सहाय वहुत उर
कौ संताप हरयो ॥ गणिका अजि करजे ते गेज महुं अघ करत उवरयो ॥ ति
नको चरित पवित्र जानि हरि निज हृदभवन धरयो ॥ केहि आचरण भलो मान
प्रभु सो तो न जान परयो ॥ तुलसिदास रघुनाथ कृपा को चितवत पंथ रह
यो ॥ २४० ॥ सोइ सुकृति सुचि सांचो जाहि तुम रीझै ॥ गणिका गीध वधि
क हरि पुर गए लै कासी प्रयाग कव सीझै ॥ कव हूं न डग्यो निगम मग तें पग
नृग जग जानि जिते दुख पाए ॥ गज धौं कौन दीछित जाके सुमिरत लै सुना
भ वाहन तजि धाए ॥ सुर मुनि विप्र विहाय वडे कुल गोकुल जन्म गोप गृह ली
न्हो ॥ बायों दियो विभो कुरुपति को भोजन जाइ विदुर घर कीन्हो ॥ मानत भ
लेहि भलो भक्तहिं तें कछु करनि पारथहि जनाई तुलसी सहज सनेह
राम वस और सबै जल की सी चिकनाई ॥ २४१ ॥ तव तुम्ह मोहूं से सठनि हठि
गति देते ॥ कैसेहु नाम लेत कोउ पावर सुनि सादर आगे ह्वै लेते ॥ पाप खानि जि
य जानि अजामिल यमगण तमकि तये हो ताको भै ते लिए छुड़ाइ चले का
मींजत पीसत दांत गए रिस रेते गौतम तिय गज गहद विटप कपि पति नाथ हित केते पति

मनौ॥ जिन्ह जिन्ह काजनि साधु समाज तजि कृपासिंधु तब तउ ब्योते॥
अजहु अधिक आदरणहि द्वार पतित पुनीत होत नहि केते॥ मेरे पासंग हू न
पूजि है ह्वै गये हैं होन खल जेते॥ हौं अबलों कर तूति तहौं रे चितवत हु
तो न रावरे चेते॥ अब तुलसी पूतरा बांधिहैं सहि जजात मोपै परिहैं सेते॥
॥४२॥ तुम राम दीनबंधु न दीन कोउ मो सम सुनहु नृपति रघुराई॥ मो सम कु
टिल मौलिमणि जेहि जग तुम्ह सम हरि न हरन कुटिलाई॥ हौं मन वचन
कर्म पातक रत तुम्ह कृपाल पतितन्हि गति दाई॥ हौं अनाथ प्रभु तुम्ह अनाथ
हित चित यह सुरति कबहुं नहिं जाई॥ हौं आरत आरति नासन तुम्ह कीरति निगम पुरान
नि गाई॥ हौं सभीत तुम्ह हरण सकल भय कारण कौन कृपा बिसराई॥ तुम सुख
धाम राम श्रम भंजन हौं अति दुखित त्रिविधि श्रम पाई॥ यह जिय जानि दास तु
लसी कहु राखहु शरण समुझि प्रभुताई॥२४३॥ ईहै जानि चरणनि चित ला
यौ॥ नाहिन नाथ अकारण को हित तुम्ह समान पुराण श्रुति गायौ॥ जननि
॥ जनक सुत दार बंधु जन भये बहुत जहं जहं हौं जायौ॥ सब स्वारथ हित प्रीति
कपट चित काहु नहि हरि भजन सिखायौ॥ सुर मुनि मनुज दनुज अहि किन्नर
मैं तनु धरि सिर काहि न नायौ॥ जरत फिरौं त्रैताप पाप बस काहु न हरि करि कृपा जु
डायौ॥ यतन अनेक किए सुख कारण हरिपद विमुख सदा दुख पायौ॥ अब था
क्यौ जलहीन नाव ज्यों देखत विपति जाल जग छायौ॥ मो कौ नाथ बूझिए यह
गति सुख निधान निज पति बिसरायौ॥ अब तजि रोष करहु करुणा हरि तुलसी
दास शरणागत आयौ॥२४४॥ या हि तें मैं हरि ज्ञान गवांयौ॥ परिहरि हृदय कम
ल रघुनाथहि बाहिर फिरत विकल भय धायौ॥ ज्यों कुरंग निज अंग रुचिर मद
अति मति हीन मरम नहि पायौ॥ खोजत गिरि तरु लता भूमि बिल परम सुगंध कहां
ते धौं आयौ॥ ज्यों सर बिमल बारि परिपूरण ऊपर कछु सिवार तृण छायौ॥ जार
त हियौ ताहि तजि हौं सठ चाहत इहि विधि तृषा बुझायौ॥ व्यापत त्रिविधि ताप
तन दारुण तापर दुसह दरिद्र सतायौ॥ अपने हि धाम नाम सुरतरु तजि विषय
बबूर बाग मन लायौ॥ तुम सम ज्ञान निधान मोहि सम मूढ न आन पुराणनि गायौ॥

तुलसिदासप्रभुयहविचारिजियकीजियनाथउचितमनभायो॥२४५॥मोहि
मूढ़मनबहुतबिगोयो॥याकेलियेसुनहुकरुणामयमैंजगजन्मजन्मदुख
रोयो शीतलमधुरपियूषसहजसुखनिकटहिरहतदूरिजनुखोयो॥बहु
भांतिनश्रमकरतमोहवसवृथाहिंमंदमतिवारिविलोयो॥कर्मकीचजियजा
निसानिचितचाहतकुटिलमलहिमलधोयो॥तृषावंतसुरसरिविहायसठफि
रिफिरिविकलअकाशनिचोयो॥तुलसिदासप्रभुकृपाकरहुअबमैंनिजदो
षकछूनहिंगोयो॥डासतहीगईबीतिनिसासबकबहुंननाथनींदभरिसोयो॥
२४६॥लोकवेदहूविदितिबातसुनिसमुझिपेहेहमोहिनांविकलमतिठांवनि
नलहति॥छोटेबड़ेखोटेखरेमोटेऊदूबरेरामरावरेमिवाहेसबहीकोनिबहति॥
होतीजोआपनेबसरहतीएकहीरसदूनीनहरषशोकसासतिसहति॥चहतो
जोजेईजोईलहतोसोसोईसोईकेहूंभांतिकाहूकीनलालसारहति॥कर्मकाल
सुभावगुणदोषजीवजगमायातेंसोसभैभौंहचकितचहति॥ईशनिदिगीश
नियोगीशनिमुनीशनीदूछोड़तछोउरतेगहांयेंनगहति॥सतरंजकोसोराजकाठकौ
सबसमाजुमहाराजबाजीरचीप्रथमनहति॥तुलसीहांरेकेहाथहारिवोजी
तिवोनाथबहुभेषबहुमुषसारराकहति२५७॥रामरामजयजीहजानिप्रीतिसों
प्रतीतिमानिरामनामजपैजैहैजियकीजरनि॥रामनामसोंरहनिरामना
मकीकहनिकुटिलकलिमलशोकसंकटहरनि॥रामनामकोप्रभावपूजियप
रतापराउकियोनदुराउकहीआपनीकरनि॥भवसागरकोसेतुकाशीहूसुगति
हेतुजपतिसादरशंभुसहितघरनि॥वालमीकव्याधहेअगाधअपराध
निधिरामरामजपेपूजेमुनिअमरनि॥लोकयावेधसीरेयोसिंधुघटजहुंनाम
बलहारयोहियरवारोभयोभूसुरउरनि॥नाममहिमाअपारशेषशुकवार
वारमतिअनुसारबुधवेदहूंवरनि॥नामरतिकामधेनुतुलसीकोकामतरु
रामनामहैविमोहतिमिरतरनि॥२५८॥पाहिपाहिरामपाहिरामभद्र
पहिसमचंद्रसुवशश्रवणसुनिआयोहोशरण॥दीनबंधुदीननताहारिद्रदाहदोष
दारुणदुसहदरपहरण॥जबजबजगजालव्याकुलकरमकालसबखलर

भूपभए भूतलभूषण॥ नवनवतनि धरि भूमि भार दूरि करि थापे मुनिसुर साधु आश्रम वरण॥ वेद लोक सब साखी काहू की रतिन रखी रावण की वंदि लागे अमर मरण॥ अशोक दे विशोक किये लोक पति लोक नाथ एम राज भो धर्म चारिहुं चरण॥ शिलागुरु गृद्ध कपि भील भालु रजनि चर ख्याल हीं कृपाल कीन्हे तारणतरण॥ पील पुंध रणशील सिंधु ढील देखि अति तुलसी पै चाहु जग लानि हीगरण २४९॥ भली भांति पहिचाने जाने साहिब जहांलों जग जूडे होत योरे योरे ही गरम॥ प्रतिन प्रवीन नीति हीन रीति के मलीन मायाधीन सव किए कालहू करम॥ दानव दनुज वडे महामूढ चढे जीते लोकनाथ वल निभरम॥ रीझि रीझि दियो वर खीझि घाले घर आपने नवाजे कीन काहू के सरम॥ सेवा सावधान तू सुजान समरथ सांचो पद गुणधाम राम पावन परम॥ सुरुख सुमुख एक रस एक रूपते हि विदित विशेषि घट घट के मरम॥ तोसो नत पालन कृपाल न कंगाल मोसो दयामय वसन रखे सकल धरम॥ राम कामतरु छांह चहै रुचि मुनि मांह तुलसी विकल वलि कलि कुधर्म॥२५०॥ तोहीं वार वार प्रभु हिं पुकारि कै खिझावत न जो पै मो को होत कहुं ठाकुर ठहरु॥ आलसी अभागे मोसे तें कृपाल पालि पोषे राजा मेरे राजाराम अवधु सहरु॥ सिये न दिगीश न दिनेश न गणेश गौरी हित के न माने विधि हरि उन हरु॥ राम नाम ही सो योग क्षेम नेम प्रेम पूर्ण सुधा सो भरो सो रावु दूसरो जहरु॥ समाचार साथ के अनाथ नाथ कासो कहो नाथ ही के हाथ सब चोर उपहरु॥ निज काज सुर काज आरत के काज राज बूझिए विलंव कहा कहो न गहरु॥ रीति सुनि रावरी प्रीति परतीत नाव रसो उरत है देख कलि काल को कहरु॥ कै है ही वने गी ये कहा एवलि जाउं राम तुलसी तू मेरो हारि हिहहरु॥२५१॥ एम राव रो सुभाउ गुण शील महिमा हि मात्र वल भाव ज्यानो हर हनुमान लखन भरत॥ जिन्ह के हिय सुथल राम प्रेम सुरतरु लसत सरस सुख फूलत फरत॥ आप माने स्वामी के सखा सुभाइ भाइ पति ते सनेह सावधान रहत उरत॥ सहिव सेवक रीति प्रीति परमिति नीति

नेम कौ निवाह एकटक नटरत॥ सकसन कारिपद लाकि नीरद हि कोहरा मकी भक्ति वडाई विरतिन रत जाने बिन भक्ति न जानि ये तिहारे हाथ सप फिसयाने नाथ पगनि परत सम्मत विमत न पुराण मति एक पथ नेत नेति निति मकरत और न की कहा चली एकै वात भले भलो राम नाम लिए तुलसी हू से तरत २५२ वाप आपने करत मेरी घनी घटिगई लालची लवार की सुधारिये वारक वलि राघरी भलाई सवही की भली भई रोग वसननु कुमनोरथ मलिन मन पर अपवाद मिथ्यावाद वाणी हई साधन की एसी विधि साधन विना सिद्धि विगरी वनावै कृपानिधि कृपा नई पतित पावन हित आरति अनाथनि को निरधार को आधार दीन वंधु दई इनहूं में एको न भयो बूफिन सूफे न जयो नाहिने त्रिताप तयो लुनियन वई खांग सु यौ साधु को कुचालि कलि ते अधिक परलोक फीकी मति लोक रंग रई वेड कुसमाज राज आज लो जो पाये दिन मरू राज कहूंभांति नाम ओट लई राम नाम को प्रताप जानियत नीकें आप मोको गति दूसरी न विधि निरमई खीफवे लायक करत कोटि कटु रीफिवे लायक तुलसी की निलजई २५३ राम राखिये शरण राखि आए सव दिन॥ वदित त्रिलोक तिहूं काल न दयाल दूजो आरत प्रणत पाल को है प्रभु विन॥ लाले पाले पोषे तोषे आलसी अभागी अघी नाथ पै अनाथ निसों भए न उरिन स्वामी समरथ एसो हौं तिहारो जैसे तैसो काल चाल हरि होति हिए घनी घिन॥ रीफि खीफि विहसि अनख कहूं एक वार तुलसी तू मेरो वलिक हियत किम जहिं रूल निर्मूल होहिं सुख अनुकूल महा गज एमण री वडाई सो तिहि छिन २५४ राम रावरो नाम मेरो मातु पितु है सुजन सनेही गुरु साहिव सखा सुहृद राम नाम प्रेम अविचल विधुद है सात कोटि चरित अपार दधि निधि मथ्यो लियो काढि वामदेव नाम घृत है॥ नाम को भरोसो वल चारिहू फल को फल सुमिरिए छाडि छल भलो कृत है॥ स्वारथ साधक परमारथ दायक नाम राम नाम सारखो न और हितु है तुलसी सुभाय कही सांची ये परेगी सही सीतानाथ नाम चित्त हू को चितु है॥

॥२५५॥रामरावरोनामसाधुसुरतरुहै॥सुमिरेत्रिविधिघामहरतपूरतका
मसकलसुकृतसरसिजसरुहै॥लाभहूकोलाभसुखसुखहूकोसरस
र्वसुपतितपावनडरहूकोडरुहै॥नीचेहूकोऊँचेहूकोरंकहूकोरायहूको
सुलभसुखदआपनोसोघरुहै॥वेदहूपुराणहूपुरारिहूपुकारिकह्यो
नामप्रेमचारिफलहूकोफरुहै॥ऐसेरामनामसोंनप्रीतिनप्रतीतिम
नमेरेजानिजानिबोसोईनरखरुहै॥नामसेनमातुपितुमीतहितबंधुगुरुसाहि
बसुधीसुशीलसुधाकरुहै॥नामसोंनिबाहनेहदीनकोदयालुसोईदास
तुलसीकोबलिबड़ोबरुहै॥२५६॥काहेबिनरह्योनपरतकहेरामरसन
रहत॥तुमसेसुसाहिबकीओटजनखोटोखरोकालकीकर्मकीकुसास
निसहत॥करतविचारसारपैयतनकहूँकछूसकलबड़ाईसबकहाँतें
लहत॥नाथकीमहिमासुनिसमुझिआपनीओरहेरिहारिकैहहरिहह
रहत॥सखानसुसेवकनसुतियनप्रभुआपमायबापतुहीसांचीतु
लसीकहत॥मेरीतोथोरीहैसुधरैगीबिगरियोबलिरामरावरीसोंरहीरा
वरीचहत॥२५७॥दीनबंधुदूरियोंकियेदीनकोनदूसरोशरण॥आपको
भलोहैसबआपनेकोकोऊकहूँसबकोभलोहैरामरावरेचरण॥पाहन
पशुपतंगकोलभीलनिशिचरकाचेतेकृपानिधानकिएसुवर्ण॥दंडक
पुहमिपायपरसिपुनीतभईउकठेबिटपलागेफूलनफरण॥पतितनि
पावननामबामवामहूंदाहिनेदेखमुनेअदुसहदुखदूषणदरण॥शील
सिंधुतोसोंऊँचीनीचीयोकहनशोभातोसोतुहीतुलसीकोआरतिह
रण॥२५८॥जानिपहिचानमेंबिसारेहोंकृपानिधानएतेमानढीठहोउ
लटोरेतखेरिहों॥करतयत्नजासोंजोरिबेकोयोगीजनतासोंक्योंहींजुरी
सोअभागेबैठेतोरिहों॥मोसेदोषकोषकोभुअनकोशदूसरोनआपनी
समुझिसूझिआयोटकटोरिहों॥गाड़ीकेश्वानकीनाईमायामोहकीबड़ा
ईछिनहिभजनबहोरिहों॥बड़ोसांईद्रोहीनबराबरीमेरीकोकोऊनाथकी
सपथकिएकहतकरोरिहों॥दूरकीजेद्वारतेलबारलालचीप्रपंचीसुधा

सोसलिलसकरीज्योंगहडोरिहौं॥राखिएनीकेसुधारिनीचकोडारियेमा
रिदुहूंओरकोविचारिअवननिहोरिहौं॥तुलसीकह्योहैसांचोरेखवार
वारखांचीढीलकियेनाममहिमाकीनावबोरिहौं॥२५८॥रावरीसुधा
रीजोबिगारिबिगरैगीमेरीकहौबलिवेदकीनलोककहाकहैगो॥
प्रभुकोउदासभवजनकोपापप्रभावदुहूंभांतिदीनवंधुदीनदुखदहैगो॥
मैंतोदियोछातीपविलियोकलिकालदविसांसतिसहतपरबसकोन
सहैगो॥बांकीविरुदावलीबनैगीपालेहीकृपालअंतमेरोहालहेरियों
नमनरहैगो॥करमीधरमीसाधुसेवकविरतरतआपनीभलाईथलक
हांकौनलहैगो॥तेरेमुंहफेरेमोसेकायरकपूतकूरलटेलटपटेनिकों
कौनपरिगहैगो॥कालपायफिरतदसादयालुसबहीकीतोहिबिनमो
हिकबहूंनकोऊचहैगो॥बचनकर्महियेकहौंरामसौंहकियेतुलसीपैना
थकेनिवाहेनिवहैगी॥२६०॥साहिबउदासभएदासखासखीसहोत
मेरीकहाचलीहौंबजाइजाइरह्योहौं॥लोकमेंनठाउंपरलोककोभरोसो
कौनहौंतोबलिजाउंरामनामहीतेंलह्योहौं॥करमसुभावकालकामको
हलोभमोहग्राहअतिगहनिगरीबीगाढेगह्योहौं॥छोरिवेकोमहाराज
बांधिवेकोकोटिभटपाहिप्रभुपाहितिहुंतापपापदह्योहौं॥रीझिबूझि
सबकीप्रतीतिप्रीतिएहीद्वारदूधकोजर्योपियतफूंकिफूंकिमह्योहौं॥
रटतरटतलट्योजातिपांतिभांतिघट्योजूठनिकोलालचीचहौंनदूध
नह्योहौं॥अनतचह्योनभलोसुपथसुचालिचल्योनीकेजियजानिइहां
भलोअनचह्योहौं॥तुलसीसमुझिसमुझायोमनवारवारअपनोसोना
थहूंसोंकहिनिरवह्योहौं॥२६१॥मेरेनवनीवनाएमेरेकोटिकलपलौं
रामरावरेवनायेवनैपलपाउमैं॥निपटसयानेहौंकृपानिधानकहाकहौं
लियेवेरवदलिअमोलमनिआउमैं॥मानसमलीनकरतबकलिमलपीनजीह
हूनजप्योनामवक्योआउवाउमैं॥कुपथिकुचालिचल्योभयोनभूलिहूभलोवा
लदसाहूनखेल्योखेलतसुदाउमैं॥देखादेखीदंभतेंकिसंगतेंभईभलाईप्रगट

जनाई कियो दुगनि दगाउ मैं ॥ मागर प्रदोष पोषे गोगरा समेंन मनइन की भनि
कीनी इन हहीसों भाउ मैं ॥ आगली पाछली अबहूं की अनुमान हीन बूझिप
नगानि कछु कीन हो नोन काउ मैं जग कहै राम को प्रतीति प्रीति तुलसीहूं
झूठे सांचे आश्रयो सहिव रघुराउ मैं २६२ कहौं न परत विन कहैं न रह्यो पर
म वडो सुख कहत वडे सो वलि दीनता प्रभु की वडाई वडी आपनी छोटाई
छोटी प्रभु की प्रनीतता आपनी पापीनता ॥ दुहूं ओर समुझि सकुचि सह
मत मन सन मुख होत सुन स्वामी समीचीनता नाथ गुनगाथ गाये हाथ जो
रि माथे नाए नीच उनिवाजे प्रीति रीति की प्रवीनता एहि द्रवार है गर्व नें
सर्व सुहानि लाभ योग क्षेम को गरीवी मिसकीनता मोटो दसकंध सो न
दूबरो विभीषण सो वूझि परी रावरे की प्रेम पराधीनता इहां की सयान
प अयानप सहस सम सूधी सति भाय कहे मिटति मलीनता गृद्ध सिला
शवरी सुधि सव दिन किये होइगी न सांई सों सनेह हित हानता सकल
काम ना देत नाम तेरो काम तरु सुमिरत होत कलिमल छल छीनता क
रुणानिधान वरदान तुलसी चहत सीतापति भक्ति सुरसरि नीर मीनता ॥
२६३ ॥ नाथ नीके कै जानि वी ठीक जन जीय की रावरो भरोसो नाह कै सो प्रे
म नेम लियो रुचिर रहनि रुचि मति गति तीय की दुःकृत सुकृत वस सव ही सों
संग परयो परखि पराई गति आपने हूं किय की मेरे भले को गोसाई पोच
को है हूं सकल किये को हौं सो ह सांची सिय पिय की ज्ञान हूं गिरा के स्वामी
वाहर अंतरजामी इहां क्यों दुरैगी वात मुख की औ हिय की ॥ तुलसी ति हा
त रो तुम हीं पै गुसांई के हित राखि कहीं हूं है तौ है है माखी घीय को ॥ २६४ ॥
मेरो कहौ सुनि पुनि भावै तोहि करसो ॥ चारहूं विलोचन विलोकु क तिलो
क मह तेरो तिहुं काल कहु को है हितु हरसो ॥ तरा तरा मेत अनुभरा देह गेह
नामि परिखे प्रपंची प्रेम परत उघारसो ॥ सुहृद समाज दगा वाजी ही को सौदा
सनजव जा को काज तव मिलै पाइ परसो विवुध सयाने पहिचाने कैधें नाहीं
नीके देत एक गुण लेत कोटि गुण भरसो कर्म धर्म श्रम फल रघुवर विन

राखको सो हाम है उसको सो वरसो आरि न्मन वेद्र भलो कैराव
होकौ यश लोक वेद र स्यो है वगर सो सीनाय ति सारिखो सुसादि वशी
लनिधानके सं कलपेरे मठ वेठो सोविसरसो जीवको जीवन प्रारा
कोपर्म हित प्रीन मपुनीत कृत नीचन निदर सो तुलसी तो को कृपार
जोर्गा कयो कोशल पाल चित्रकूट को चरिति चित धरसो॥२६४॥ान
नसुविमन रूनिमुख कहो जनहों सिपधीको॥ कोहि अभाज जान्यो नहे
जीनहांयनघिसौं नातोनेहु हननीको जल चाहत पावक लहों विषहोत अ
मीको कुलि कुचालि संमति कही सोई सही मोहि कछफहमन नर
तमीको जानि अंध अंजन कहे वन बाधिन घीको सुनि उपचाहि विकाहको
मुविचार करो जवनव बुधिवल है होको प्रभुसों कहत सकुचात हों परोजि
निफिर फीको निकट वोलि बलि बरजि सारि दे रख्याल अब तुलसिहां जड़
जीको २६६ ज्यों ज्यों निकट भयो चहों कृपाल त्यों त्यों दूरि परयो हे तुम बहु
युगर कुराकरा भहों दूरावरो यय अघन गुगनि भरयो हो वीचपाइनी चवीच
हीनलछ रनि छरयो हों अगगिनि मिरिकानन फिरयो विन आगजरयो हो
माथनाइ नाथ सों कहों हाथ जोरि खरयो हों चीन्हो चोर जियमारि है तुलसी
सोवकथा सुनि प्रभु सों गुदर निवरयो हों २६७ पराकरि हों हठि आजते राम द्वार
परयो हों तू मेरो यवि नकहे उठि हों न जन्मभरि प्रभु की सों करि निवरयो है
हरे धकायमभटयके ठारयो नरयो हो उदर दुसह सासनि सहि बहुवार
जनि जगन के निदरि निकरयो हों होमचला छांडि हों जेहि लागि आरयो हों
कायमभटयके टारयो नरयो हों उदर दुसह सासनि सहीं बहुवार जनि
जगनर कोनिदरि निकरयो हों होमचला छांडि हों जेहि लागि आरयो हों तु
मरयालवनि है हियो वलि विलंवन कीजिये जात गलानि गरयो हों पगर
कहत जोंस कचिय अपराध भरयो हों मेमन में अपनाइय तुलसिहि कृ
पाकरि कालविलोकि हहरयो हों २६८ तुम्ह अपना यो सो तवजानि हों ज
वमनफिरि परिहै जेहिसुभाय विषय लाग्यो तेहि सहज नाथ सों नेहु छाडि

लालकौरिहै।। सुतकी प्रीति प्रतीति मीतकी नृपज्यौं डरडरिहैं।। आपनौ स
स्वारथ स्वामिसौं चहुं विधि चातक ज्यौं एकटक तेनहिं टरिहै।। हरिषिहै न
अति आदरें निदरें न जरिमरिहै।। हानि लाभ दुख सुख सबै समचित हित अनहि
त कलि कुचालि परिहरिहै।। प्रभु गुण सुनि मन हरषिहै नीर नयननि ढरिहै
तुलसीदास भयौ रामकौ विस्वास प्रेम लखि आनंद उमंगि उर भरिहै।।२६९
राम कबहुं प्रिय लागिहौ जैसें नीर मीनकों।। सुख जीवन ज्यौं जीवकौं मनि ज्यौं
फनिकौं हित ज्यौं धन लोभ लीनकौं।। ज्यौं सुभाय प्रिय लागति नागरी नागर नवीनकौं
त्यौं मेरे मन लालसा करिये करुणाकर पावन प्रेम पीनकौं।। मनसा कौ दा
ना कहैं श्रुति प्रभु प्रवीनकौं।। तुलसिदासकौ भावतौ वलि जाउं दयानिधि
दीजे दान दीनकौं।।२७०।। कबहुं कृपा करि रघुवीर मोहू चितैहौ।। भलो
बुरो जन आपनौ जिय जानि दयानिधि अवगुण अमित वितैहौं।। जनम जनम
हौं मन जीत्यौ अब मोहि जितैहौ।। हौं सनाथ ह्वै हौं सही तुम्हहूं अनाथ प
ति ज्यौं लघुतहि न भितैहौ।। विनय करौं अपभयहुतें तुम परम हितैहौ।। तुल
सिदास कासौं कहौं तुमही सब मेरे प्रभु गुरु मात पितैहौ।।२७१।। जैसो हौं तै
सो हौं राम रावरो जन जिनि परिहरिये।। कृपासिंधु कोशलधनी शरणाग
तपाल कठनि आपनो ढरिये।। हौं तौ बिगरायल औरको बिगरौं न बिगरिये
तुम्ह सुधारि आए सदा सबकी सबहि विधि अब मेरियौ सुधारिये।। जग
हसिहै मेरे संग्रहै कत एहि डर डरिये।। कपट केवट कौन्ह सखा जो हियशील स
रल चितैं तेहि सुभाव अनुसरिये।। अपराधौ तउ आपनो तुलसी न वि
सारिये।। टूटियौ बांह गरे परी फूटेहु विलोचन पीर होत हितकारिये २७२।।
तुम्ह जिन मन मैलो करौ लोचन जिन फेरो।। सुनहु राम विन रावरे लोकहु प
रलोकहु कोउ न कहूं हितु मेरौ।। अगुण अलायक आलसी जानि अधम
अनेरो।। स्वारथके साथिन तजौ तिजरा कौ सुटोटक औचट उलटि न हेरो।।
भगति हीन वेद बाहिरो लखि कलिमल घेरो।। देवनि हूं देव परिहरयो अन्याउ न तिन
कौ हौं अपराधी सब केरो।। नानकौ आरे पेट भरत हौं पै कहावत चेरो।। जग

बिदित बात है परी समुझिये धौं अपनमै लोक कीबेद बडेरो। है है जब
तब तुमही तें तुलसी को भलेरो॥ दीन रिन हू दिन विगारि है बलि जाऊँ
लंबिंगु आपना इ ये सबेरो॥ २७३॥ तुम तजि हों कासो कहों और को
हितु मेरो। दीनबंधु सेवक सखा आरत अनाथ पर सहज छोह केहि केरो॥
बहुत पतित भवनिधि तरे बिन तरि बिनबेरे॥ कृपा कोप सति भाय हूं धोर
बिहूं तिरिछे हूं राम तिहारे रहि हेरे॥ जौ चितवनि सौंधी लगे चितइ ये सबेरे
तुलसि दास अपनाइयै की जे नढील अब जीवनि अवधि नितनेरे २७४
जाऊं कहां ठौर है कहां देव दुखित दीन को॥ को कृपाल स्वामी सारिखे रा
खै सरणागत सब अंग बलविहीन को॥ गनहि गुनहि साहिब लहै सेवा सभी
चीन को॥ अधन अगुण आलसीन्ह को पालबो फबि आयो रघुनायक
नवीन को॥ मुख के कहा कहौं बिदित है जी की प्रभु प्रवीन को॥ तिहूं का
ल तिहुं लोक में एक टेक रावरे तुलसी से मन मलीन को॥ २७५॥ द्वार
द्वार दीनता कही काढि रद परि पाहूं। हैं दयालु दुनी दस दिसा दुख दोख दल
न छम कियो न संभाषण काहूं॥ तनु जन्यो कुटिल कीट ज्यौं तज्यो मात पि
ताहू। काहे को रोस दोष काहि धौं मेरे ही अभाग मोसों सकुचिन सब छुइ
छाहूं दुखित देखि संतनि कह्यो सोचै जिनि मन माहूं। तो से पसु पाँवर पा
तकी परिहरे न शरणगए रघुवर ओर निबाहूं। तुलसी तिहारो भए भयो सुखी
प्रीति प्रतीति विनाहूं॥ नाम की महिमा शील नाथ को मेरो भलो बिलोकि अबते
सकुचाहु सिहाहूं॥ २७६ कहां न कियो कहां न गयो सीस काहि न नायो॥ राम
रावरे बिन भए जन जनमि जनमि जग दुख दसहूं दिसि पायो॥ आस बिबस खास
है नीच प्रभु निज नायो॥ हाहा करि दीनता कही द्वार द्वार बार बार परी न छा
रु मुह बायो॥ असन बसन विन बावरो जहं तहं उठि धायो॥ महिमा मान
प्रिय प्रान तें तजि खोलि खलनि आगे खिनु खिनु पेट खलायो॥ नाथ हाथ कछु
नाहि लग्यो लालच ललचायो॥ सांच कहौं नाच कौन सो जो न मोहि लोभ ल
घु निलज नि निलज नचायो॥ श्रवण नयन मन मंग लगे सब थल पतितायो॥

।मंडमारि हियहारि कै हित देरि हहरि अवशरण शरणानकि आयो॥ दसरथ के समरथ तु ही त्रिभुवन यश गायो॥ तुलसी नमत अवलो कि रावलि बांह वालदै विरुदावली कुलायौ॥२७७॥ राम राय बिन रावरे मेरे को हितु सांचो॥ स्वामि सहित सब सों कहौं सुनि गुनि विसेषि कोउ रेख दूसरी खांचो॥ देह जीव योग के सखा मृषा टांचन टाचो॥ कियो विचार सार कदली ज्यों मणि कनक संग लघुलसति बीच बिच कांचो॥ विनय प त्रकीदीनकी बापु आप ही बांचो॥ हिये हेरि तुलसी लिखी सो सुभाय सही करि बहुरि पूंछिये पांचो॥२७८॥ पवनसुअन रिपुदवन भरत लाल लखन दीन की॥ निज निज अवसर सुधि किये बलि जाउं दास आस पूजि है खास खीन की॥ राज द्वार भली सब कहै साधु समीचीन की॥ सुकृत सुयश साहिब कृपा स्वारथ परमारथ गति भवगति विहीन की॥ समय सभारि सुधारि वी तुलसी मलीन की॥ प्रीति रीति समुझाइवी नत पाल कृपाल हि पर मिति पराधीन की॥२७९॥ मारुति मन रुचि भरत की लखि लखिन कहि है॥ कलि कालहु नाथ नाम सौं परतीति प्रीति एक किंकर की निवही है॥ सकल सभा सुनि लै उठी जानि रीति रही है॥ कृपा गरीब निवाजि की देखत गरीब को साहसवांह गही है॥ विहसि राम कह्यौ सत्य है सुधि मैं हूं लही है॥ मुदित माथ नावत बनी तुलसी अनाथ की परी रघुनाथ सही है॥२८०॥

॥ इति श्री राम गीतावल्यां विनय पत्रिका संपूर्णम्॥

दोहा॥ जैसी पुस्तक मैं लखी। तैसी लिखी सं भाल॥ नाम कहै हरदेव मम। गृह है रैन स्याल